॥ णमो तित्थस्स ॥

श्री समेतशिखर तीर्थनो इतिहास

(प्राचीन हस्तलिखित प्रति उपरथी

शुद्ध करेल गूर्जरभाषाना रासना

आधारे शिखरजीतीर्थना

२४ जीर्णोद्धारोनुं

सुंदर वर्णन)



नमस्तीर्थसम्मेतशैलाह्वयाय,

नमो विंशतिप्राप्तनिःश्रेयसाय ।

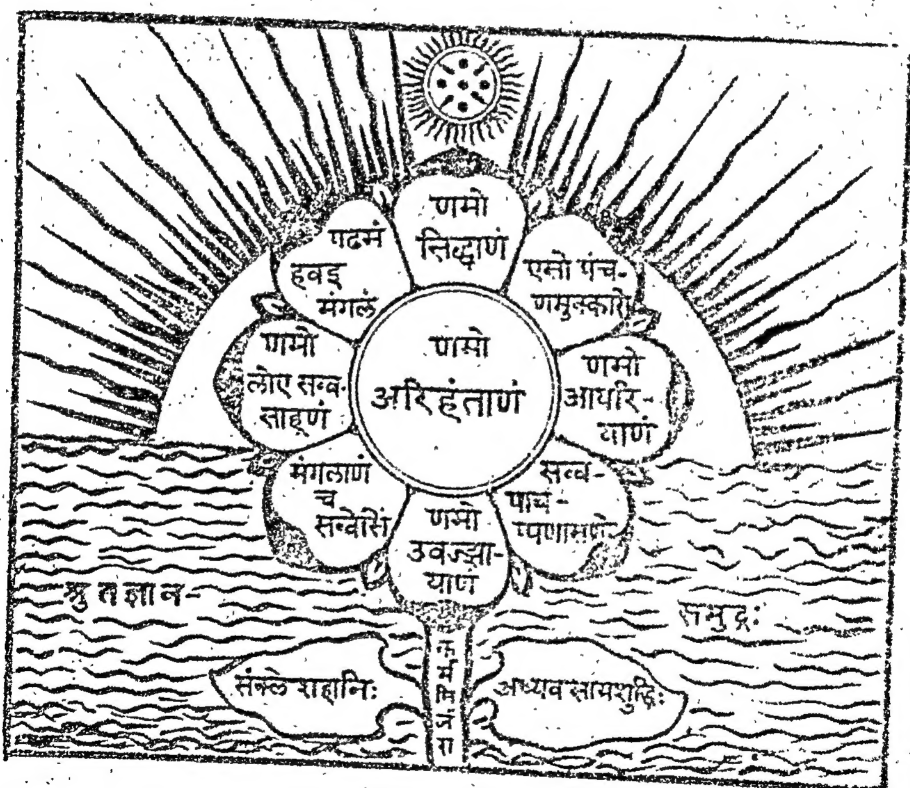
नमः श्रव्यदिव्यप्रभावाश्रयाय,

नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥

- पू. विनयविजयजीम० कृत जिनसहस्रनामस्तोत्र श्लो० १२३

जम्माभिसेअ-णिक्खमण-चरण-णाणुप्पाया य णिव्वाणे।
देयलोअ—भवण—मंदर—णंदीसर—भोम—णगरेसुं ॥
अट्ठावय-मुज्जिंते गयग्गपयए य धम्मचक्के अ।
पास—रहावत्तणगं, चमरुप्पायं च वंदामि ॥

— श्रीआचारांगसूत्र श्रु. २ चू. ३ भावनाध्ययन निर्युक्ति
गा ३३१–३३२



णमो अरिहंताणं चवण—जम्म-वय-णाण-णिव्वाणपत्ताणं।
चंप—ऽट्ठावय—सम्मेतो—ज्जित—पावासु तित्थेसुं ॥

प्रकाशकनुं निवेदन

अत्यंत हर्षनी वात छे, के २० तीर्थंकरोनी निर्वाणथी अने क्रोडोनी संख्यामां मुक्तिमां गयेल महामुनिओथी पवित्रित श्री समेतशिखर महातीर्थना चोवीशमा जिर्णोद्धार पछीनी अंजन-शलाका अने प्रतिष्ठाना शुभ प्रसंगे अद्यावधि अप्रसिद्ध प्राचीन हस्तलिखित प्रत उपरथी अने बीजा मळी आवता ऐतिहासिक साधनोना आधारे पू. मुनि श्री दर्शनविजयजी (त्रिपुटी) महाराजे लखी आपेल निर्वचना आधारे आ पुस्तक प्रकाशित करवानुं सौभाग्य अमोने प्राप्त थयुं छे.

शास्त्रोमां जीर्णोद्धारकनुं महत्त्व नूतन जिनालय करतां आठगणुं सापेक्ष दृष्टिए जणाव्युं छे तेमां पण कल्याणकभूमि अने श्री शत्रुंजयगिरि पछी बीजा नंबरे तीर्थाधिराज सिद्धक्षेत्र तरीके प्रसिद्ध श्री शिखरजी महातीर्थना मूलमंदिरो, टूंको पादुकाओ विगेरे कालबले नष्टभ्रष्ट अने अस्तव्यस्त थइ गयेल, तेना व्यव-स्थित जिर्णोद्धारनुं तो भव्यात्माओने आत्म कल्याणना प्रबल साधन तरीके मनाती तीर्थस्पर्शनाना लाभने व्यवस्थित रीते मेळववानी दृष्टिए घणुंज वधी जाय छे.

जोके छेल्ला लगभग बसो वर्षमां थयेल २१-२२ अने २३ मा जिर्णोद्धार प्रसंगे जगतशेठ जेवा धर्मप्रेमी महान् श्राद्धरत्न वगेरे पुण्यात्माओए ते वखतना पूज्य आचार्य भगवंतो अने विद्वान् मुनिराजोनी देखरेख तळे आ महान्तीर्थना व्यवस्थित जिर्णोद्धार माटे सक्रिय प्रयत्नो विविध रीते करेला छे छतां काळ-

बळे के साधनोनी विषमता आदि गमे ते ज्ञानी–गम्य कारणथी यात्रा करवा आवनार धर्मात्माओने भावोल्लासनी खामी जणाती हती.

पण त्रिकालाबाधित अविच्छिन्नप्रभावशाली तरणतारण श्री जिनशासननी लोकोत्तर विजयवंततथी देवगुरु कृपाओ वि. सं. २०१० चै. शु. १५ना मंगळदिवसे पू. आगमोद्धारक ध्यानस्त स्व. श्री. आनंदसागरसूरीश्वर पट्टालंकार गच्छाधिपति पू. आ श्री माणेकसागरसूरिवर्यना आज्ञावर्ती पू. विशिष्ट संयम परायण साध्वी संघप्रवर्तिनी स्व. साध्वी श्रीतिलकश्रीजी म. ना समुदायना पू. तपस्वी श्री तीर्थश्रीजी म. ८ जेओओ वर्तमान जैन जगतमां सौथी पहेला वर्धमान तपनी १०० ओली पुरी करी सिद्धक्षेत्रमां पारणुं करेल) ना विदुषी शिष्या पू. साध्वी श्री रंजनश्रीजी म. मुंबई (कुर्ला) ना चातुर्मास पछी उग्र विहार करी ८ ठाणां साथे शिखरजी महातीर्थनी यात्रा स्पर्शना करी अने वांदराओना विष्टा सूत्रथी थती भयंकर आशातना, देरीओनी वेरान हालत, उघाडा चबूतरा पर मात्र आकाशना घुमट तले बिराजमान प्रभुजी पादुकाओ विगेरे त्यांनी परिस्थिति जोई कलकत्ताना चातुर्मास दरम्यान तेओश्रीने शिखरजी महातीर्थना जिर्णोद्धार अंगे धर्मप्रेमी श्रावकोने खूब प्रेरणा आपी सुरत, अमदावाद, भाजीपुरा, अच्छारी, मुंबई, कपडवंज विगेरे विगेरे स्थलना धर्मप्रेमी श्रावकोने धर्मोत्साह पूरक पत्रोद्वारा जीर्णोद्धार माटे असारी समितिनी मंगल स्थापना करावी अने त्यारबाद ते समितिद्वारा सतत प्रयत्नो करावी अखिल भारत वर्षीय समस्त श्री जैन संघना विविध सहकारथी ६ वर्षना टूंका गाळामां जीर्णोद्धारनु महत् भगीरथ कार्य निर्विघ्ने पुरुं कराव्युं छे. अने तेनी प्रतिष्ठानो भव्य प्रसंग शासन शोभा वधे तेवी रीते

मूळी नरेश प्रतिबोधक गच्छाधिपति श्री माणिक्यसागरसूरीश्वरजी अने पू. उपाध्याय श्री देवेन्द्रसागरजी तथा पू. आ. श्री कीर्तिसागरसूरीश्वरजीना प्रशिष्य शांतमूर्ति पू उपाध्यायश्री कैलाससागरजी म. आदिनी निश्रामां उजववानु पण सौभाग्य अमोने सांपड्युं छे, आ बधो प्रताप देवगुरु अने जिनशाशननो होवा उपरांत जीर्णोद्धारना महामांगलिक कार्यमां प्रथमथी आजसुधी अेक सरखी सतत् प्रेरणा आपनार बाल ब्रह्मचारिणी तपोनिधि पू. साध्वीश्री रंजनश्रीजी म. सा. नी प्रेरणानो छे.

आ पुस्तकमां मुख्य आधाररुप " समेतशिखर रास " नी मूल प्रत साहित्य संशोधक पू. मुनि श्री. दर्शनविजयजी म. (त्रिपुटी) ए तीर्थ भक्ति अने धर्मप्रेमथी प्रेराइने स्वतः—पोतानी मेळे आपी, अने प्रकाशित करवा माटे पू. संपादक मुनिश्रीने अनुरोध कर्यो जेना परिणामे तीर्थोद्धार करवानी साथे आवा अैतिहासिक महत्त्व पूर्ण पुस्तकना प्रकाशननुं महत्त्व पू. साध्वी श्री रंजनश्रीजी म. मारफत अमोने जणायाथी आ पुस्तकनु प्रकासन प्रतिष्ठाना मांगलिक प्रसंगे करीने अमो कृतार्थता अनुभवीए छीये.

आ ग्रंथने व्यवस्थित करी प्रेस योग्य बनाववा माटे तेमज समयसर प्रकाशनने अंगे संपादक महाराजश्रीनो सूचनानुसार काम करता श्री. पं. जानकीलालजी शर्मा (जेओए घणा धक्का फेरा खाइने पण समयसर अमारु आ पुस्तक तैयार करवामां प्रेसवाळाने घणी मदद करी छे) अने समयसर सुयोग्य मुद्रण करी आपवा बदल मुद्रणालयना अधिपति मेनेजर वगेरेना धर्मस्नेहनी भूरी भूरी अनुमोदना करीये छीये.

छेवटे जिनशाशननी मर्यादा विरुद्ध के दृष्टिदोष अगर उतावळथी थयेल छापकामना कारणे थइ गयेल के रही गयेल क्षतिओ बदल वारंवार क्षमा मागीये छीये.

वि. सं. २०१७
वीरनिर्वाण सं. २४८९
आगमो सं. ११
माह व. १० गुरु
अमदावाद

लि:
श्री समेतशिखर महातीर्थ
जिर्णोद्धार समिति.

संपादक तरफथी

भुवे तस्यै नमो यस्यां, तव पादनखांशवः ।
चिरं चूडामणीयन्ते, ब्रूमहे किमतः परम् ! ॥

—श्री वीतरागस्तोत्र प्र. १५ श्लो.

वर्तमान चोविशीना २० तीर्थंकरो ज्यां निर्वाणपदने पाम्या, अने तेओना शासनमां वर्तनारा क्रोडो मुनिवरोए ज्यां गाढ बंधनोथी मुक्ति मेळवी ते सुगृहीत नामधेय श्री समेतशिखरजी महातीर्थना ते ते टूंकोना नाम महिमा अने जीर्णोद्धार करावनारना परिचय आदि विगतोने जणावनार अद्यावधि अप्रसिद्ध श्री समेतशिखर महातीर्थना रासनुं संपादन कार्य देव-गुरुकृपाए यथाशक्य व्यवस्थित रीते करावी ऐतिहासिक अन्य माहीतीओ साथे पुस्तकाकारे जीर्णोद्धार समिति प्रकाशित करे छे, ते एक अनुमोदनानो विषय छे.

रासनो रचना समय, तेना कर्ता अने तेओनी गुरुपरंपरा आदि संबंधी विचारणा पू. त्रिपुटी महाराजे पोताना ऐतिहासिक निबंधमां विगतवार करी छे ज. एटले ते संबंधी मारे कशुं जणाववानुं नथी. पण संपादन संबंधी केटलीक महत्त्वनी बाबतो तरफ विद्वानोनुं लक्ष्य खेंचुं छुं.

(१) चवदे........संवच्छरे शिखर महातम जेह ।
रत्नशेखरसूरि कर्यो, साल सहस संख्या तेह ॥
शिखर महातम में कह्यो, बहु वर्णन अधिकार ।
किंचित् पद उद्धारसें, भाख्यो ए निरधार ॥

—शिखरजी रास ढाळ ५. गा. ४१-४२.

रासकार महर्षिए उपर मुजबनी गाथामां प. आ. श्री. रत्नशेखरसूरीश्वरजी म. रचित " शिखर माहात्म्य (१६००० श्लोक प्रमाण) ग्रंथनो निर्देष कर्यो छे.

पाटण–खंभात–जेसलमेर–लींबडी विगेरेना प्राचीन हस्त-लिखित भंडारोमां हजी सुधी आ प्रतनी कंइ माहीती मळी नथी. माटे आ संबंधी बधु गवेषणा करवानी जरुर छे.

(२) प्रस्तुत रासमां तीर्थंकरोना निर्वाणना वर्णन प्रसंगे श्री संभवनाथ प्रभु, श्री अभिनंदनप्रभु, श्री सुमतिनाथप्रभु अने श्री पार्श्वनाथ प्रभु सिवाय १६ तीर्थंकरोने पद्मासने मोक्ष कल्याणक जणाव्युं छे पण " वीरोसहणेमीणं, पलियंक सेसयाण उस्सग्गो " (सप्तति शतस्थानक प्रक० गा. ३१६ पूर्वार्ध)ना आधारे १, २२. अने २४ मा सिवायना बधा तीर्थंकरो खड्गासने कायोत्सर्ग मुद्राए उभा उभा निर्वाण पाम्यानुं प्रसिद्ध छे. तथा ३–४ प्रभुनुं निर्वाण कया आसने ? ते रासकारे जणाव्युं नथी, अने श्री सुमतिनाथप्रभु अने पार्श्वनाथ प्रभुना निर्वाण प्रसंगे कायोत्सर्ग पद (जुओ ढा. ६ गाथा १२ अने ढाळ १९ गा. २३) स्पष्ट जणावेल छे. रासकार समर्थ विद्वान होवा छतां आवी असंगत पद्धति अपनावे ते जरा विचारणीय छे. कदाच लेखक दोषथी ३–४ प्रभुना निर्वाणना वर्णनमां गडबड थवा संभव छे, पण प्रस्तुत रासनी बीजी प्रति उपलब्ध न थवाथी आ विषय जरा सूक्ष्मविचारणा मागे छे.

(३) " अणसण करी सुरपद वरीजी, जितशत्रु मुनिराय ।
इशानेन्द्रपद ते लहीजी, ईंद्र रिद्धि सहु पाय ॥

(अ. ३ गा. ८)

रासकारे श्री अजितनाथ प्रभुना पिताजी इशानेन्द्र थयानी वात उपरनी गाथामां जणावी छे. पण श्री प्रवचनसारोद्धारनो नीचेनो उल्लेख विचारतां विद्वानोने आ बाबत विचारणीय थइ पडे तेम छे.

"सैद्धान्तिकास्तु श्रीअजितस्वामिपितुर्जितशत्रोमुक्तिगमन-माचक्षते अनुयोगद्वारादौ तथैव भणनात् । यदाह हेमसूरिः—

राजा बाहुबलिः सूर्ययशाः सोमयशा अपि ।
अन्येऽप्यनेकशः केऽपि, शिवं केऽपि दिवं ययुः ॥
जितशत्रुः शिवं प्राप, सुमित्रस्त्रिदिवं गतः

(इति योगशास्त्रे)

तथा श्री त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्रमां पण नीचेना चे श्लोको मळे छे.

" ऋषभस्वामितीर्थे, स्थविराणामथांतिके ।
जितशत्रुः परिव्रज्यां, शिश्रिये मुक्तिमातरम् ॥
उत्पन्नकेवलज्ञानः शैलेशीध्यानमास्थितः ।
क्षीणाष्टकर्मा स प्राप क्रमेण परमं पदं ॥

(पर्व. २ सर्ग ३. श्लो. ९८, १००)

आ उपरथी श्री अजितनाथ प्रभुना पितानुं इशानेन्द्रपणुं रासकारे जे बताव्युं छे ते कया आधारे ? ते जरा विचारणीय छे.

आयुष उत्कृष्ट भोगवी, गुणतीस सागरमान ।
जघन्य पल्य अठावीशनुं, ए आयु स्थितिमान ॥

(ढा. ५. गा. ६)

लेखक दोष के स्मृतिदोष गमे ते कारणे आ गाथामां

सातमा ग्रैवेयकमां २८ पल्यो०नुं आयु (के जे सर्वथा असंभवित जणाय छे) निर्देश्युं छे. बीजी प्रत न मळी शकवाना कारणे शास्त्रानुसारी मतिथी सुधारेलो "सागर" पाठ कोष्टकमां मुक्यो छे.

(५) छट्ठी ढाल (गा. ५-६-) मां धातकीखंडना पुरणपुर नगरना रत्नशेखर राजाए त्रीजो उद्धार कराव्यानुं छे. आ वात सूक्ष्मदृष्टिथी विचारतां बहु मुदानी जणाय छे. सिद्धाचल महातीर्थनो महिमा जेम महाविदेहादि क्षेत्रमां श्री सीमंधरस्वामी आदि तीर्थंकरो त्रणे भुवनमां अनेरो वर्णवे छे. ते रीते समेतशिखर महातीर्थ माटे पण धातकीखंडमां रहेनारा भव्यात्माओने कोई अतिशय ज्ञानीए विशिष्ट प्रेरणा आपी होय तो अहिं आवीने जीर्णोद्धार करावे. आ रीते श्री समेतशिखर महातीर्थना महिमाने सूचक रासकारनो आ निर्देश कही शकाय.

ढा. ४. गा. २८ मां "पोहोकरद्वीपमें पुंडरीक नगरी" एवा शब्दो मूल प्रतमां हता, पण अर्थानुसंधानथी "येही वर दीपमें" एवो पाठ सुधारीने छपावेल छे, छतां संभवित लागे छे के "पुष्करद्वीप"नो निर्देश रासकारने इष्ट होय.

आ प्रमाणे ढा. ९. गा. ८मां पूर्व महाविदेहनी कनकावती नगरीना कनकरथ राजाए ११ मो उध्धार कराव्यानो निर्देश छे.

उपरना त्रणे निर्देशो श्री समेतशिखर महातीर्थनी अलौकिक विशिष्टता सूचवनारा छे.

(६) "लक्ष्मीधर चार उपजे सोय,
मणिकागिणी चर्मनिधिवली जोय" (ढा. १३ गा. १५)

रासकार आ गाथामां श्री शांतिनाथ प्रभुना चक्रवर्ती-पणाना वर्णन प्रसंगे चौद रत्नोनी उत्पत्ति जणावतां राज्यना खजानामां उपजता चार रत्नो निर्देश्या छे, पण बृहत्संग्रहणी (गा. २६७) मां चउरो आयुधगेहे, भंडारे तिण्णि दुण्णि वेयड्ढे। एगं रायगिहम्मिय णियणयरे चेव चत्तारि, गाथाथी राजभंडारमां त्रण रत्नो ज उपजतां बताव्यां छे वली रासकारना शब्दो प्रमाणे १४ मी गाथामां ४, १५ गाथामां ४, अने १६ मी गाथामां ७ रत्नोनो सरवालो करतां १५ रत्नो थाय छे. माटे रासमां सुधारो करी कोष्टकमां 'त्रण' पद मुक्युं छे

रासमां नीचे मुजब पौषध शब्दनो प्रयोग छे.

ढा.	गा.
६ –	१२
८ –	४
८ –	१७
८ –	२८
९ –	४
९ –	१७
१० –	७
१७ –	३

जेनो अर्थ पौषधोपवासना टुंकाक्षरी रुपे अनशन एवो लाक्षणिक रीते घटावी शकाय, पण आवो उल्लेख भाषानी दृष्टिए महत्त्वनो गणाय.

(८) रासकारे सोलमा उद्धारना वर्णन प्रसंगे ७ (ढा. १० गा. २९–३०) भद्रपुरनगरनी पासे अेक पर्वत पर बावन जीना-लयवालुं शान्तिनाथ प्रभुनुं चैत्य वर्णव्युं छे.

बावन जिनालयना शिल्पनी प्राचीनता संबंधी अतिप्राचीन पुरावो अैतिहासिक दृष्टिअे अत्यंत महत्त्वनो छे.

(९) वली आ रासमां अत्यंत महत्त्वनी वात ओ छे के—दरेक टूंकोनी यात्रानुं जुदु जुदु विशिष्ट फल बताव्युं छे.

टुंक	फल	
(२) दत्तधवलगिरि	४२००००० पौषधनुं	
(३) आनंदगिरि	१ लाख	,,
(४) अविचलगिरि	१ कोडि	,,
(५) मोहनगिरि	१ कोडि	,,
(६) प्रभासगिरि	३२ कोडि	,,
(७) ललितधरगिरि	१६ लाख	,,
(८) सुप्रभगिरि	१ कोडि	,,
(९) विद्युतगिरि	१ कोडि	,,
(१०) संकुलगिरि	१ कोडि	उपवासनुं
(११) निर्मलगिरि	१ कोडि	,,
(१२) स्वयंभूगिरि	१ कोडि	,,
(१३) दत्तवरगिरि	१ कोडि	,,
(१४) प्रभासगिरि	१ कोडि	पौषध
(१५) ज्ञानधारगिरि	१ कोडि	उपवास
(१६) नाटिकगिरि	९६ कोडि	पौषध
(१७) सबलगिरि	१ कोडि	उपवास
(१८) निर्जरगिरि	१ कोडि	,,
(१९) मित्रधारगिरि	१ कोडि	पौषध
(२०)	१ कोडि	उपवास

आमां २ थी ९-१४-१६-१९ मी टूंकनी यात्राथी अमुक संख्याना पौषधनुं फल जणाव्युं छे ज्यारे बाकीनी टूंकोनी यात्राना फल तरीके अमुक संख्याना उपवासनुं फल जणाव्युं छे ? आ विसंवाद केम ?

रासकारे २० प्रभुना निर्वाणतपना वर्णन प्रसंगे आ रासमां अनशनना अर्थमां पौषध शब्दनो वारंवार प्रयोग कर्यो छे तो ए उपरथी अहीं पौषध शब्द उपवासवाची समजवो खरो ? आ वात विद्वानोने विचारणीय छे.

वळी रासकारे प्रस्तुत रासमां अप्रसिद्ध प्राय अेक नवीन अद्‌भूत वातनो उल्लेख कर्यो छे.

बीजा उद्धारना वर्णन प्रसंगे (ढा. ५, गा. ३०) वंगदेशना हेमनगरना राजा हेमदत्तने श्रीसंभवनाथ प्रभुना गणधर श्रीचारुक भगवंते पीतवस्त्र पहेरी शिखरजी तीर्थनी यात्रानुं महत्व जणावेल छे.

छट्ठा उद्धारना वर्णन प्रसंगे (ढा. ७, गा. १४) उद्योतक राजाने जंघाचारण मुनिए कोढ रोग दूर करवाना उपाय तरीके श्यामवस्त्र पहेरी शिखरजी तीर्थनी यात्रानुं महत्त्व जणावेल छे. तेज प्रमाणे तेरमा उद्धारना वर्णन प्रसंगे पण (ढा. १०, गा. ३०, ३४) पांचाल देशना श्रीपुर नगरना भवदत्त राजाने शूल रोग निवारणार्थे धर्मघोष मुनिओ श्यामवस्त्र पहेरी शिखरजीनी यात्रानी विशिष्टता वर्णवी छे

बारमा उद्धारना वर्णन प्रसंगे (ढा. ९, गा. ३०, ३३) कौशाम्बी नगरीना राजा बालसेनने विद्याचारण मुनिओ लालवस्त्र पहेरी यात्रानुं महत्त्व जणाव्युं छे.

आ प्रमाणे अमुक टूंकोनी यात्रा प्रसंगे अमुक रंगना वस्त्रोनी वात रासकारे जणावी छे. ते अेक नवीन वात छे.

जो के रासकार रासना प्रारंभमां ज (ढा. १, गा. १६) ज्यां जेवा रंगनां वस्त्र पहेरवाना होय त्यां तेवां पहेरी यात्रानुं विशिष्ट फल मेलववानी वात निर्देशी छे. पण रासमां वधी टूंकोनी यात्रामां रंगीन वस्त्रोनी व्यवस्था नथी, मात्र उपर जणाव्या प्रमाणे चार टूंक वावत ज जाणवा मळेल छे.

वि ानो आ उपर विचार करी योग्य प्रकाश पाथरे ते जरुरी छे.

(११) रासकारे (ढा. ९, गा. १२) अग्यारमा उद्धारना वर्णन प्रसंगे पूर्व महाविदेहनी कनकावती नगरीना कनकरथ राजाअे शिखरजी महातीर्थ उपर ११ टूंकोनो जीर्णोद्धार कराव्या पछी पोतानी नगरीमां समेतशिखरजीनुं देरासर अने तेमां वीश तीर्थंकरोनां प्रतिमाजी पधराव्यानी वात जणावी छे

महाविदेह क्षेत्रमां श्रीशिखरजी महातीर्थनी स्थापनानो आ उल्लेख श्री समेतशिखरजी महातीर्थनी मौलिकमहत्ता सूचवे छे.

(१२) रासकारे श्री पार्श्वनाथ प्रभुनुं जीवनचरीत्र वर्णवतां (ढा. १९, गा. २२) पार्श्वनाथ प्रभुना १५१ नामना तीर्थोनी वात जणावी छे. १०८ अने १००८ नामोनी वात प्रसिद्ध छे ज, पण १५१ तीर्थोनी वात संशोधको माटे नवी छे.

आ रीते आ रासमां घणी घणी नवी वातो तेमज विचारणीय स्थळो छे. ते उपरांत बे त्रण स्थाने बीजी प्रति न मळवाना कारणे अशुद्ध पाठ राखवा पड्या छे.

आ बधा माटे ऐतिहासिक विद्वानो योग्य विचारणा करे, ते माटे शुभ आशयथी आ रास संबंधी थोडो ऊहापोह करेल छे, छेवटे श्री शिखरजी महातीर्थनी प्राचीनताना इतिहासमांथी मळी आवेल ते पुरावा रजु करी मारुं वक्तव्य पुरुं करुं छुं.

(१) "श्री आबुजी पासे कुंभारियाजी महातीर्थमां श्री नेमिनाथ प्रभुना देरासरमां प्रदक्षिणामां डाबी बाजु आठमी देरीना दरवाजा उपर शिलालेख छे. तेमां वि. सं. १३४५ मां पू. आ. श्री. परमानंद सूरिजीना उपदेशथी श्री देवपाल कुंवरपाल श्रावकोओ श्री समेतशिखरजी महातीर्थना मुख्य मंदिरनी प्रतिष्ठा कराव्यानो उल्लेख. (विद्यासागर न्यायरत्न श्री शान्तिवि० लिखित "बयान पारसनाथ पहाड" हिंदी पुस्तक पाना २९ मांथी)

(२) श्री प्रवचन सारोद्धारद्वार १ गा. ८७)नो वृत्ति पा. १९ पुं. १. पं. ११) मां पू. मा. श्री सिद्धसेनसूरीश्वरजी म. "भवनपति-व्यंतर-ज्योतिषिक वैमानिक-नन्दीश्वर-मन्दर-कुलाचला-ष्टापद-सम्मेतशैलशिखर-शत्रुञ्जयोञ्जयन्तादि सर्वलोक स्थित ...." शब्दोथी लोकना विविध तीर्थो गणावतां श्री समेतशिखर महातीर्थने श्री अष्टापदनी माफक सापेक्ष रीते तीर्थाधिराज श्रीशत्रुंजय महातीर्थनी पहेलां जणाव्युं छे.

पू. मा. श्री. सिद्धसेनसूरीश्वरजी म. आ टीकानी रचना श्री वि. सं. १२४८ चै. सु. ८ पुष्यार्क योगे करी छे.

आ बंने उल्लेखो श्री. समेतशिखर महातीर्थने ऐतिहासिक दृष्टिओ पण अतिप्राचीन जणावे छे.

छेवटे आ महातीर्थना २४ मा भव्य जीर्णोद्धार पछीनो अंजनशलाका अने प्रतिष्ठामहोत्सव प्रसंगे प्रसिद्ध थनार ऐतिहा-

सिक रासनुं आ पुस्तक भव्यात्माओनी श्रद्धाने निर्मल करनारुं बने ए शुभाशंसा अने क्षयोपशमनी मंदता के कृषिदोष आदिथी संपादनमां रही जवा पामेल त्रुटिओ अगर थइ जवा पामेल भूलो संबंधी क्षमायाचना पूर्वक विरमुं छुं.

वीर. सं. २४४७
वि. सं. २०१७
आगमोद्धारक सं. ११
पोष वद १० गुरु
जैन उपाश्रय
महेसाणा (उ. गु.)

ली:
श्रमण संघ सेवक
पू. गुरुदेवश्री धर्मसागर गणिवर
चरणोपासक मुनिअभयसागर

श्रीशिखरजी महातीर्थना जिर्णोद्धारमां सतत उपदेश
अने प्रेरणा आपनार

साध्वी श्रीरंजनश्री म. नी

जीवन झरमर

साध्वी संस्था एटले........

"पतितपावनी सुरसरिता समी ब्रह्मचारिणी स्त्रीजीवनना पवित्र शिखिओनो अमर संदेशो आपी रहेली भगवाननी कृपा-सारणीओ छे."

—स्व० कवि श्रीन्हानालाल

धर्मप्रधान प्रवृत्तियो अने जिनशासनना महामहिमावंत वातावरणथी पवित्र श्रीराजनगर (अमदावाद)नी कडियानी पोळ (कालुपुर)मां रहेता शेठ अमृतलाल चुनीलाल कुसुमगरने त्यां धर्मप्रेमी श्राविका श्रीमाणेकबहेननी कुक्षिओ वि. सं. १९६३ आसो सुदि ८ ना रोज महापुण्यवंती सुलक्षणी पुत्रीनो जन्म थयो, जेनुं विमळा, नाम प्रमाणे बाल्यावस्थाथी ज पूर्वजन्मना निर्मल संस्कारो अने श्रावककुलना अद्भुत वातावरणथी जीवन विशुद्ध हतुं. माताना धर्मप्रेमनी हुंफथी भरेला खोळामां धर्मना विविध संस्कारोथी जात्यरत्नने ओप चढाववानी जेम "विमला" बहेनना जीवनमां धर्मनुं तेज नानपणथीज खीलवा मांड्युं. पंचप्रतिक्रमण, प्रकरणादिना धार्मिक अभ्यास साथे धार्मिक क्रियाकांडमां विमला-बहेने आगळ पडतो भाग लेवा मांड्यो.

लौकिक व्यवहार प्रमाणे विमलाबहेननुं सगपण नानी उमरमां ज अमदावाद (जुनामहाजनवाडा) ना रहीश शेठ गिरधरलाल सांकळचंदना सुपुत्र मणिलाल साथे थयेल पण भावीनुं

निर्माण तो विमळाबहेनने महान् साध्वीरत्न बनाववानुं होइ अचानक पिताजीना स्वर्गवासना निमित्ते महान् अंतराय उभो थयो, अने वैधव्यदशामां धर्मना शरणने स्वीकारी सादा त्यागमय जीवनना पंथे वळेला माताजीना सहवास अने माणेकबहेनना दीयर मणिभाई, देराणी चंचलबहेन तथा नणंद चंपाबहेनना दीक्षा लेवाना वातावरणथी विमला बहेननो वैराग्य गुप्त रीते पोषण पामतो गयो.

परिणामे चंपाबहेने घोघोवाळा श्रीमती साध्वी लावण्य-श्रीजी म. पासे ललिताश्रीजी तरीके दीक्षा लीधी. मणिभाईए श्रीसिद्धिसूरीश्वरजी म. दादाना समुदायमां महोदयविजय तरीके दीक्षा लीधी. अने चंपाबहेने छाणीवाळा श्रीहीरश्रीजी पासे सुनदा-श्रीजी तरीके दीक्षा लीधी.

आ प्रसंगो उपरथी माणेकबहेनने दीक्षा लेवानी उत्कंठा बहु जागी, संयमपरायणा साध्वीश्रीशिवश्रीजी म.ना शिष्या विशुद्ध चारित्रपालक साध्वीश्री तिलकश्रीजी म. ना समुदायमां तेओश्रीना शिष्या हेमश्री म. ना शिष्या तरीके आगमोद्धारक पू. ध्यानस्थ स्व. आ. श्रीआनंदसागरसूरीश्वरभगवंतना वरद हस्ते वि. सं. १९७४ वै. सु. १३ ना मंगळदिने ११ वर्षनी बालिका विमलबहेन साथे माणेकबहेने दीक्षा लीधी. माणेकबहेननुं नाम तीर्थश्रीजी अने विमलाबहेननुं नाम रंजनश्रीजी राखवामां आव्युं.

दीक्षा पछी संयमनी मर्यादाओने विशुद्धरीते पाळवा साथे मांडलीया योगवहन करी वडी दीक्षा पछी धार्मिक अभ्यासमां अखंड–अविरत परिश्रम पू. रंजनश्री म. नो हतो, उत्तराध्ययन आदि साध्वीयोग्य योगवहन पण करेल, प्रकरण, कर्मग्रंथ, कर्म-प्रकृति, पंचसंग्रह जेवा तात्त्विक गहन, द्रव्यानुयोगना अभ्यासमां

सारी निपुणता मेळवी, अनुयोगद्वार–उत्तराध्ययन–ओघनिर्युक्ति आदि श्रमणीनी मर्यादानुरुप आगमोनुं पठन पण गुरुमुखे वाचना लइ सारी रीते मेळव्यु.

परमार्थवृत्ति, साथे ज विनीतता, मायालु स्वभाव आदि सद्‌गुणोए अनेक कल्याणकामी मुमुक्षु बाला–श्राविकाओने संयम पंथे आकर्षनारो निवड्यो.

भूतकालमां सांसारिक माता–पुत्रीना संबंधे वर्तनारा हालमां धार्मिक संबंधे गुरु–शिष्यारुपे वर्तता पू. तीर्थश्री म. मां त्रिविध तपस्याओनी उत्कृष्ट आराधना अने पू. रंजनश्री म.मां विविध रीते सम्यक्‌ज्ञाननी उपासना साथे संयमनी विशुद्ध आचरणानी ऊंडी छाप भलभला मोहमस्त पामरोना हैयामां पडीने तेओनी आत्मशक्तिनी अनुमोदना करता हता अने आजे पण करे छे.

वि. सं. १९९० मां पू. साध्वी रंजनश्री म.ना शरीरमां कर्मसंयोगे उग्र व्याधि थयेल. घणा उपचारो छतां छेवटे डॉक्टरोना अभिप्राय मुजब सूकी हवानी जरुर जणातां सौराष्ट्र तरफ पधारेला, त्यारे लींबडीना धरमशी मोतीचंदना पुत्रवधू अने शेठ नागरदास परसोत्तम राणपुर)नी सुपुत्री समताबहेने खूब तन–मन –धनथी अपूर्व भक्ति करेल, अने पूज्यश्रीना सहवासे वैराग्यवासित थइ वि. सं. १९९५ जे. सु ६ शासनप्रभावना पूर्वक दीक्षा थयेल अने पोतानी नानी गुरुबहेन तरीके सुरप्रभाश्रीजी नाम राखेल.

शिखरजी महातीर्थना जीर्णोद्धारमां साध्वी सुरप्रभाश्रीजी म.नो खूब सहकार हतो. कर्मनी विचित्रताना कारणे जीवलेण भयंकर केन्सरना दर्दना लीधे अत्यंत समाधिपूर्वक तेओ वि. सं. २०१३ चै. व. २ ना रोज अमदावादमां कालधर्म पाम्या.

वि. सं. १९९६ मां मूळी(सौराष्ट्र)ना उपधानमालारोपण प्रसंगे त्यांना धर्मप्रेमी ठाकोर अने तेमना कामदार श्रीगोविंदजी-भाइ साध्वीजी म.ना परिचयथी सहकुटुंब धर्मना रंगथी रंगाया अने तेओश्रीना बतायेल विधि प्रमाणे नवपदजीनुं सुंदर आराधन कर्युं हतुं.

वि. सं. २००२मां सिद्धक्षेत्रनी छायामां पू. साध्वीश्री तीर्थश्रीए वर्धमान तपनी १०० ओळी पूरी करेल, तेनुं पारणुं अने तेनो महोत्सव खूब सारी रीते साहित्यमंदिरमां उजवायो हतो.

वि. सं. २००२मां मूळी ठाकोर अने कामदार वगेरेना आग्रहथी सपरिवार चातुर्मास करी राजकुटुंबने मूळ धर्मरंगथी वासित बनाव्युं हतुं.

वि. सं. २००५मां कच्छमां विहार करी त्यांनी धर्मप्रेमी मुग्ध जनताने सारी रीते धर्ममां जोडी हती.

वि. सं. २००६ मां साध्वीश्री शिवश्री म. नी जन्मभूमि तरीके प्रख्यात रामपुरा(वीरमगाम)मां साध्वीसुरप्रभाश्रीजी आदि ठाणा साथे चातुर्मास करी भव्य उपाश्रय—श्रीशिवतिलक-जैन-मित्र ज्ञान-मंदिर अने आंबिल खातानी स्थापना आदि घणा धार्मिक कार्यो थयां.

वि. सं. २००९ नुं मुंबई (कुर्ला)नुं चातुर्मास साध्वी सुरप्रभाजीना केन्सरना उपचार अंगे करी वर्षो जूनी शिखरजी आदि महातीर्थोनी धर्मयात्रानो मनोरथ पूर्ण करवा २४ ठाणा साथे उग्र विहार कर्यो. अने २०१० चै. सु. १५ रोज शिखरजी महातीर्थनी यात्रा—स्पर्शनानो लाभ लीधो.

त्यारबाद कलकत्ताना चातुर्मासमां शिखरजी महातीर्थना जिर्णोद्धार अंगे सुप्रसिद्ध विद्वान पं. श्रीप्रभुदासभाई आदि

साथे विचार विनिमय करी धर्मप्रेमीओनी संमति मुजब मुंबई, सुरत, अमदावाद, अछारी, वाजोपुरा, कपडवंज आदि गामोना प्रतिष्ठित धर्मप्रेमी सद्गृहस्थोनी वगदार कमिटी स्थपावी शिखरजी महातीर्थना जिर्णोद्धारनुं मंगलकार्य शरु कराव्युं.

कलकत्ताना चोमासामां विविध तपस्यायो आदि उपरांत ११ छोडनुं उजमणुं, सिद्धचक्र महापूजननी वगेरे थयेल.

पछी पू. तीर्थश्री म.नी अस्वस्थ तबियतना कारणे झडपी विहार करी माळवामां थई सुरत पधार्यां, त्यारे ६१ छोडनुं उजमणुं खूब धामधूमथी थयेल.

पू. साध्वी रंजनश्री म. ४३ वर्षना लांबा दीक्षा पर्यायमां लगभग रोज बियासणां, एकासणां, आंबिल, विगई त्याग, वगेरे चालु छे. तेओओ बीज, पांचम, नवपदनी ओळी, वीरस्थानकनी ओळी, नवकारना पद, वर्षीतप, अट्ठाई, छमासी अने ५०० आंबिल वगेरे विविध तपो कर्या छे.

हमणां ५०० आंबिलना पारणा वखते हठीभाइनी वाडी (अमदावाद मां पू. आ. माणिक्यसागरसूरीश्वरजी म. नी निश्रामां (१२५) छोडनुं उजमणुं थयेल.

साध्वीश्री रंजनश्रीजी म. ना आज्ञामां १५० लगभग साध्वीयो छे. प्रायः वधाये वर्धमान तपनो पायो नांख्यो छे. ते उपरांत जीतेन्द्रश्रीजी, कल्याणलताश्रीजी, सुसीमाश्रीजी, अनुपमाश्री. कल्पबोधश्री वगेरेए ५०० आंबिलतप कर्यो छे. तथा संवेगश्रीजीने ९३, रेवतीश्रीने८८, प्रवदाश्रीने ८६, राजेन्द्रश्रीने ८८, संयमश्रीजीने ७७मी वर्धमान तपनी आळीओ चाले छे.

पू. रंजनश्री म.ना चातुर्मासोनी नोंध

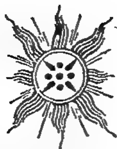
वि. सं.	गाम
१९७४	सुरत
१९७५	भरुच
१९७६ थी १९८० सुधी	पू. शिवश्री म. नी वृद्धावस्था अंगे अमदावाद
१९८१	राधनपुर
१९८२	भावनगर
१९८३	अमदावाद
१९८४	महीदपुर
१९८५	राजगढ
१९८६	सुरत
१९८७	अमदावाद
१९८८	सुरत
१९८९–९०	अमदावाद
१९९१	वढवाण केम्प
१९९२	लींवडी
१९९३	पालीताणा
१९९४	धांगध्रा
१९९५	सुरेन्द्रनगर
१९९६	राणपुर
१९९७	राधनपुर

वि. सं.	नाम
१९९८	जामनगर
१९९९	पाटण
२०००	अमदावाद
२००१	,,
२००२	मूळी
२००३	सुरत
२००४	अमदावाद
२००५	भुज (कच्छ)
२००६	रामपुरा
२००७	अमदावाद
२००८	,, ,,
२००९	मुंबई (कुर्ला)
२०१०	कलकत्ता
२०११	सुरत
२०१२	वाजीपुरा
२०१३ थी २०१६	(पू. साध्वी तीर्थश्रीम.नी तबीयतना कारणे) अमदावाद (जुदे जुदे स्थाने)

आ प्रमाणे महातीर्थ शिखरजीना जिर्णोद्धारनी समाप्ति अने मंगल प्रतिष्ठा प्रसंगे महत्वना प्रकाशित थनारा आ पुस्तकमां मूक उपकारी पू. साध्वी रंजनश्री म.ना जीवननी कंईक झांखी करावी अमो कंईक कृतार्थता अनुभवीओ छीये.

लि०

श्री समेतशिखर महातीर्थ जिर्णोद्धारक समिति



श्री समेतशिखरजी नो रास

श्री पार्श्वनाथाय नमः

अथ श्रीसमेतशिखररास लिख्यते

प्रारंभ :-

(दूहा)

श्री पारस जिनवर नमी, नमीये शारद माय.
वचनामृत रस दीजीये, कीजे शुभ सुपसाय. १

पारस पारस कीजीये, पारस परम निधान.
पारस परम दयानिधि, सांवलीयो राजान. २

भूमांहे तीरथ घणां, गिणवा को समरत्थ.
ऊर्ध्व अधो मध्य लोकमें, बहुलां जिहां तीरत्थ. ३

सहु तीरथ मांहे सरस, समेत शिखर गिरिराय.
सिद्ध भया ज्यां वीश प्रभु, साधु अनंत शिवपाय. ४

वीर जिनेश्वर इम भणे, इन्द्रादिक सुर पास.
समेत शिखर तीरथ गिरि, वीश प्रभु जिहां वास. ५

ते माटे तीरथ वडो, समेत शिखर कहेवाय.
कहुं रास हिये जेहने, सुणतां सुख बहु थाय. ६



गिरिपरिचयः—

(ढाल पहेली)

(राग–धन धन संप्रति साचो राजा, ए चाल)

धन धन एह समेत शिखर गिरि प्रवर तीरथ मांहे सार रे.
दुरगति दूर निवारें ए गिरि, उतारें भव पार रे. ध० १

गगन मंडल से वाद करंतो उंचो जिस आसमान रे.
झाड झंगी और झरण झरत है, मोर करत नृत्य तान रे. ध० २

गंधर्वनालो सीतानालो, वहे जिहां निर्मल नीर रे.
जात्री जन आवीने त्यां सहु, स्नान करे बेसी तीर रे. ध० ३

शीतल निर्मल जल तिहां झरणे, पावन करी शुचि अंग रे.
वस्त्र पवित्र पहरी सहु अंगे, चढीयें गिरिं उमंग रे. ध० ४

अंबा रायण सरस खजूरां, शीताफल नालेर रे.
केलां अनार जरद नारंगी, वृक्ष बहु चिहुं फेर रे. ध० ५

वृक्ष अनेक बहुला बली बहुला, ऋतु ऋतु का फल पूर रे.
वासे परिमल जिहां गिरि चिहुंदिस, समेत शिखर हैं सनूर रे. ध० ६

केवडा केतकी जाय मोगरा, कुंद मचकुंद गुलाब रे.
गंधराज सेवंत्री सुगंधी, बउलसीरी बहु झाब रे. ध० ७

रित रितके सुगंधि फल फूलें, भमर भमें चिहु पास रे.
बहुला वृक्षनां पुष्प सुगंधी, वासे परिमल खास रे. ध० ८

सिंह धड्डके पर्वत उपर, अन्य ही जीव अनेक रे.
झाड झंगी में चिदिस फिरता, करता केल्ल विसेष रे. ध० ९

यात्रावर्णन :–

देश देशना संघ मिल आवे, बोले जय जिन वीस रे.
पहली सफल बोलाय पालगंजे, ल्हो राजनी आशीष रे. ध० १०
सांवलीया प्रभु पास की मूरत, बहु ओछव मंडाण रे.
पालगंज से प्रभुजी लावे, बोले मुख जय वाण रे. ध० ११
संघ सहु मधु वनमें आवें, करि रहे पट आवास रे.
मधुवन में प्रासाद प्रभु को, जिहां थापे प्रभु पास रे. ध० १२

उपक्रम :–

समेत शिखर गिरि पर्वत उपर, टुंक जिहां छे वीस रे.
वीस टुंक का नाम जूजूवा, कहस्युं हियडे हिंस रे. ध० १३
टुंक पर जे जे प्रभुजी, लेहि जिहां जिहां निरवाण रे.
टुंके टुंके साधु सिध्या, कहस्युं ते हिव जाण रे. ध० १४
जिण जिण टुंक उद्धार कर्यो जिणइं, कहस्युं ते हिव सबंध रे.
कुण कुण देशनां कुण कुण नगरनां, कुण कुण राज प्रबंध रे. ध० १५
जे जेहवा होवें ते तेहनी, जे जेहवां रंग वस्त्र रे.
पहेरी जात्र करें ते तेहवा, लहस्यें फल ते तत्र रे. ध० १६
जे जेता पौषध के केता, कर्ये जात्र फल तेह रे.
ल्हेस्ये भविजन लाभ जात्रा में, फल अनंता तेह रे. ध० १७

टुंके टुंके जे जे प्रभु संग, ते ते मुनिवर तेह रे.
जेहनुं वर्णन होस्यें जे आगें, सुणज्यो चतुर भवि तेह रे. ध० १८
पहेली ढालें पहिलुं वर्णव, जाणवा काजें जेह रे.
आगे वर्णव सबल दयारुचि, भणस्यें ते गुण गेह रे. ध० १९

☆

(ढाल दूसरी)

(राग–जोगी थारें झोली नें तुंबी हाथ में रे. ने देशी)

डुंगर टाडो रे डुंगर फूटरो रे डुंगर पहुलो त्रिजोयगमान.
वीशटुंक परिवारें सोहतो रे, जिहां प्रभु वीश जिणंद वखाण. मा० १

मारो मन मोह्यो रे समेतगिरि तीरथें रे
तीरथ सहुमें रे ए तीरथ सार. मा०

(१) सिद्धवरटूंक :–

पहेली एह समेत शिखर उपरे रे, अजितनाथ निर्वाण विचार.
चार कल्याणक अजोध्यामें भयारे, पांचमुं समेत शिखर गिरधार. २
समेत शिखर गिरि उपर सोहतो रे, मनोहर ऊंचो सिद्धवर टुंक.
जिहाँ प्रभु अजित जिनेश्वर सिद्ध थया रे,
सहस मुनि संग आए एह टुंक. ३
लक्ष वहोंतेर पूरवनुं आयु रे, भोगवी अजित जिनेश्वर भाण.
सबल अष्टकर्म कुं क्षय करी रे, प्रभु लही अनुभव एह वखाण. ४
समेत गिरि सिद्धवर टुंक पर रे, मुनि मुगत की संख्यामान.
एक अड़व असी कोड ज जे कह्या, ऊपर चौपन लक्षनो थान. ५

चारें अजित अरू अंतर संभव विचें रे, मोक्ष गया साधु घर ध्यांन.
तिण कारण ए शिखरगिरि टुंकनो रे, तीरथ मोटो एह सुथान. ६

कोड बत्तीस ज पोषध फल लहें रे, फल ते तो जात्रायें एकमान.
जोये सम्मेत शिखर गिरि जातरा रे, करस्यें लहस्यें गति शुभवान. ७

पहली एह समेत गिरि जातरा रे, कर्यो उद्धारज तेहनुं नाम.
सांभळजो सहु भवि हिवे तेहनुं रे, मात पिता अरू नगरी ठाम. ८

श्री अजितनाथ प्रभु जन्म :—

हिवे आदि अजित विच अंतर ते कह्यो रे. पचवीश कोड लाख सागर जाण.
तेह विच पचवीश लाख कोड इंद भया रे, शिखर महातम तेहनी वाण. ९

नगरी अयोध्यानो ते राजवी रे, जितशत्रु विजया राणी कंत.
लघु भ्राता वली जितशत्रुना वली रे, नाम सुमित्र जुवराजपद हुंत. १०

सुमित्रनी अंगना जसोमती रे, रुपे कहुं मयण सुकोमल अंग.
विजया जसुमती दोनुं राणीयां रे, देराणी जेठाणी मीळ जुग संग. ११

चौद सुपन जोडे एक रजनी लहें रे, जिन चक्री जननी मीळ दोय.
वैशाख सुदि तेरसनीं रजनीयें रे, अबाधा रहित लहे सुपनां सोय. १२

विजय विमान सुं जीव आवी चव्यो रे, भोगवी तीस सागरनी आय.
आवें त्रिहुं ज्ञाने जो संयुक्तथी रे, तीर्थंकर पद तेहे नें थाय. १३

जिन चक्री जननी प्रसव्यां रे, अजित सगर दोनु शुभ जात.
सुत उछव राजाते वेहुं करे रे, जितशत्रु सुमित्र वेनु मीळ भ्रात. १४

गर्भे अजित जिनेश्वर ते छतां रे, अनमीं नम्या सिके ते सहु राय.
जब राय जितशत्रुनो जय थयो रे, अनम नमाया ते सहु पाय. १५
ते परीक्षाये नाम मावित्र ठवे रे, अजित सगर जुगपुत्र अभिराम.
अनुक्रमे अजित सगर प्रौढ़ा हुवा रे, मां हुल्रावे कही कही नाम. १६
परणाव्या ते वेहुने हर्षसुं रे, करी वहु ओच्छव अधिक मंडाण.
घर घर ओच्छव तोरण बारणे रे, हरख भयो सनु रागी राण. १७
दूजी ढालें जनम व्याव वरणव्यो रे, अजित सगर जुगकुमर विख्यात.
अजित सगर जुग कुमर दयानिधि रे. नित जपो नाम भली परभात १८



(ढाल तीसरी)

(वैरागी जिनसें लागो अविहड रंग. ए देशी)

अजितनाथ प्रभु पिता दीक्षादि :—

हिवे धर्मघोष मुनि आवीयाजी, मुनि करत विहार.
नगर अजोध्या परिसरेंजी. रहें उद्यान मझार.
भविजन ! गुणवंता सुणज्यो सहु विस्तार. १
वनमाली तब दौडनेंजी, देवें वधाइ ताम.
जितशत्रु तब हरखीयोजी, थे वनमाली नें दाम. २
जितशत्रु सुमित्र दोउ मिलीजी, लेइ अपणो परिवार.
मुनि वंदन वन आवीयाजी, करी वहु ऋद्धि विस्तार. ३
करी वंदन वहु भावसुंजी, वैठा वेसण ठाम.
धर्मघोष मुनि तिण समेंजी, थे देशना ते नाम. ४

सुण वाणी प्रतिबुझीयाजी, जितशत्रु सुमित्र दो भ्रात.
संजम लेवा उमह्याजी, करता मील दोहु वात. ५

गुरू वांदी गृह आवीनेजी, अजित कुंवर पटधार.
सगर जुवराज पदें ठवेंजी, थे राज्यनां सहु भार. ६

जित शत्रु सुमित्र वेहु मिलीजी, आवे धर्मघोष सूरि पास.
त्यें दीक्षा तप आदरेंजी, करी अष्टकर्म दल नाश. ७

अणसण करी सुरपद वरीजी, जितशत्रु मुनि राय.
इशानेन्द्र पद ते लहीजी, इंद्र रिद्धि सहु पाय. ८

अजित जननी विजया सतीजी, लही शिवपदनो भाग.
धन धन जिन माता पिताजी, देव गति अनुभव राग. ९

आठ लाख पूरवनूं जी, भोगवी अजित सुरराज.
लोकांतिक वचने सुणीजी, चित्त समज्या शुभ काज. १०

धन धन जिन राजा धन धन तुम अवतार.

श्री अजितनाथ प्रभु दीक्षा-केवल :-

वरसी दान प्रभु दियेजी, संजम सुमनवाल।
वैसी सुप्रभा शिविका प्रभुजी, ओच्छवं करे इंद्र मिल साल॥ ११

पंच मुष्टी करी लोचनीजी, आगार से भए अणगार।
मइ सुई ओहि पज्जव वलीजी, चार ज्ञान शुभ धार॥ १२

सहस संग मुनिवर थयाजी, गृही संजम व्रत धार।
दो उपवासे पारणो जी, करीय अजित सुखकार॥ १३

गाम नगर पुर विहरताजी, करता उग्र विहार ।
आये अयोध्या परिसरेजी, उपज्यो केवल सार ॥ १४

केवल महिमा सुर करेजी, करे समोसरण रचनाह ।
चौमुखी वाणी विस्तरेजी, सुर नर मुनि तिरि वाह ॥ १५

सगरचक्री दीक्षा :–

अजित राज्य सगरे लह्योजी, पाले राज्य विशेष ।
एकण दिवस वधामणोजी, दोय मिली तव देख ॥ १६

प्रभु केवल एक वधामणोजी, चक्र रत्न उपजंत ।
ए दोनू एकण समयेजी, पाम्यो अति सुख संत ॥ १७

पहली वांदी प्रभु भणीजी, पछे साध्या सहू देश ।
साधी देश अयोध्या भणीजी, आव्या सगर नरेश ॥ १८

सगर नरेशर जब कुमारनेजी, दे आदेश नरेश ।
जइ अष्टापद तीर्थनीजी, करी इमे जात्र विशेष ॥ १९

जह्नु कुमर आदि साठ सहससुत, चले अष्टापद जात ।
जात्रा करे तिहाँ तीर्थनीजी, चिहुं दिस फिरी विख्यात ॥ २०

साठ सहस सुत चक्री ना मिल, बंधव करे एक वात ।
ए तीरथ आसातनाजी, न करे कोइ विघात ॥ २१

जह्नु कमर दंड ग्रहेजी, खाई फेरी चिउ फेर ।
खेंच समुद्र से गंगा लायो, दंड रतन से घेर ॥ २२

गंगा अष्टापदे फीरेजी, क्षोभाणा नाग लोक ।
क्रोध करीने आवीयाजी, नाग कुमर मिल थोक ॥ २३

जह्नु सहित साठ सहसनेजी, नाग कुँवर फूंकार ।
भस्म करया सहु तेहनेजी, थया सुरलोके अवतार ॥ २४

करी वैयावच्च तीर्थनीजी, बारमा देवलोक सार ।
ए संबंध जोइज्योजी, आवश्यक सूत्र मझार ॥ २५

पुत्र मरण चक्री सुण्योजी, उपज्यो दुख अपार ।
सुरपति आवी समझावियोजी, शोक निवारी सार ॥ २६

भरत परे संघवी थयोजी, आयो उज्ज्वल गिरि जात ।
पूजी प्रथम जिणंदनेजी, कर्यो उद्धार विख्यात ॥ २७

सगर चक्री गृह आवीनेजी, भागीरथ ने दियो राज ।
अजितनाथ पासे भलोजी, सगर संजम ग्रह्यो साज ॥ २८

सगरे संजम आदरियोजी, त्रीजी ढाले एह ।
हिवे अजित निर्वाणनेजी, भणे दयारुचि अति नेह ॥ २९



श्री अजितनाथप्रभुनिर्वाण :–

(ढाल ४)

(उंबदरियजे ने गाजे हो भटियाणी राणी चढ जुवे. ए देशी)

हिवे समेत गिरि आया हो, मन भाया तीरथ ऊपरे.
काँइ सिद्धवर टुंके नेह, अजित जिनेश्वर स्वामी हो ।

कांई तरिये भव जल पाथ, गुरु वाणी भवणें हो ।
मुख्य पणें करवुं ए सही, कांई अति हिय में हर्षात ॥ ७

गुरु वांदी घर आवें हो, पठावे संघ कंकोतरी ।
कांई करे हिवें संघ तयार, वीस सहस गज गमता हो ।
मद झरता अति वहु झूमता, कांई करता केलि अपार ।
केई होदा गज सोहें हो, केई मोहें अंबावाडिया ।
कांई गुंजत जिम जल धार, उरकी अैराकी केइ हो ।
केई काछी धाठी जातना, कांई जुरी वीस हजार ॥ ८

गज रथ, अश्व रथ, वहुलाहो, केई वहुला वृषभ रथ सोहता ।
कांई रथ पिग वीस हजार, मुछाला मथराली हो ।
अडियाला पाला कंकड़ा, कांई पाला लख वीस हजार ।
देव सुखासन केई हो, केई चकडोल सुहामणा ।
कांई सहसागम केई त्यार, खाती नहि भोई हो ।
कोई वेलदार संघ में घगा, कांई दीवीधरा है अपार ॥ ९

संघ चतुर्विध सजलो हो, निठलो नहीं कोई संघ में ।
कांई द्रव्ये सहु भरपूर, कोठारी भंडारी हो ।
व्यापारी सारी वस्तुना, कांई सेठ सारथवाह सनूर ।
वाजित्र विविध प्रकारे हो, वाजा घगा वाजता ।
कांई करता प्रभु गुण चूर, गयन विण वहु गावें हो ।
राग रागणी स्वर छंदसे, कांई तान मान करी सूर ॥ १०

इह विध संघ सजाइ हो, अधिकाई निसाण केई भला ।
कांई संघना बहु वरणाव, राजा भगीरथ जेहवो ।
वली तेहवो नहीं कोई जोडलो, कांई संघपति नाम धरावे ।
राज लोका बहु तेरी हो, इंद्राणी जाणें अप्सरा ।
कांई दासदासी मिल भाव, वलि बहु लोकरी बहुले हो ।
संघ सघलो लोकें सामठो, कांई बहु वहाँ डेरा तणाव ॥ ११

जुंजु तिलक करी मन भालें हो, विसालें चोखा चालिया ।
कांई मंगलिक श्रीफल हाथ, शुभ लगने शुभ जाणें हो ।
शुभ वेला भली माहिं इनी, कांई विदा भई बहु साथ ।
सगर मुनीश्वर पासे हो, उल्लासे करे बहु विनती ।
कांई मया करो मुज नाथ, जात्रा शिखर गिरि संगे हो ।
बहु रंगे अयोध्या सु संचर्या, कांई जपता नवपद गाथ ॥ १२

वाला बूढ़ा संगे हो, मन रंग उमंगे चालता ।
कांई करे त्रिण कोसी मुकाम, छचेहरी पालता हो ।
टालता ईर्यापथ दोपने, कांई गाता प्रभु गुण ग्राम ।
अनुक्रमे शिखर गिरि निरखी हो, हिय हरखी वधावे गिरि मणी।
कांई सोने रूपे दाम, मधू वन में जब आवें हो ।
बहु भावे गिरि वंदन करें, कांई आरती उतारे ताम ॥ १३

चढ़ी समेत गिरि पाजें हो, बहु राजें मिल मिन्न थोकसुं ।
कांई गंधर्व नाचें आप, चरण परवाली सजलें हो ।

निर्मल थई थाक उतारता, कांई तिहां सहु संगे थाय ।
फिर चढ़ता तूलि आगे हो, बहु रंगे चढ़ता मन करी ।

कांई हरखी तसहु उमाय, सीता नाले आवी हो ।
मन भावी भावी वीसामो लहें, कांई वाला बूढ़ा सुख पाय ॥ १४

शिखर अतिशय भारी हो, सुखकारी खेद न कोई लहें ।
कांई राजी सहु नरनार, मूल शिखर गिरि चढ़िया हो ।

वलि सरियाकार जनम तणा, कांई सिद्धवर ट्रंक दिल धारा ।
सुरपति थुमें रचीयो हो, तिहां निरखी अजित जिनरायने ।

कांई मन में हर्ष अपार, वंदन करें मन भावें हो ।
तिहां ध्यावें अजित जिन नामने,
कांई मुख उचरे जय जयकार ॥ १५

पूजा बहु विध सारें हो, मन धारें प्रभु गुण गावता ।
कांई बहु विध भक्ति करंत, भागीरथ वड भागी हो ।

अतिरागी अजित जिन पोतरो, कांई पितृ चरण पूजंत ।
स्नात्र सत्तर प्रकारी हो, अधिकारी अष्ट प्रकारनी ।

कांई सेवा करें, हरखंत, भागीरथ मन भावें हो ।
प्रासाद करावे तेहवो, कांई प्रथम उद्धार करंत ॥ १६

गगन मंडल तिण वेला हो, बहु भेला वाजित्र वाजता ।
कांई सुर सहु मिलते आप, पुष्पै वृष्टि बहु करता हो ।

उच्चरता शब्द जय २ भला, कांई आवी नमें प्रभु प्राय।
उपज्यो केवल जेहवें हो, वलि तेहवें सगर मुनीसने।
कांई लोकालोक दीखाय, केवल उच्छव करता हो।
बहु धरता हरख सहु देखता, कांई सेवता केवली पाय॥ १७

लोका लोक प्रकासे ही, मुख भापे देसना निरमली।
कांई सगर केवली तिणवार, श्रवण सुणें भव्य प्राणी हो।
जिनवाणी अमीरस सु भली, कांई अति आंणी एक तार।
सगर केवली पायो हो, निर्लिंगि सवायो ते भलो।
कांई सिद्धवर ट्रंके धार, सरस मुनि संघाते हो।
मुनि खाते अनुभव निर्मली, कांई समेत शिखर पर सार॥ १८

हिवे भागीरथ राया हो, मन माया तीरथ उपरे।
कांई तीरथ रखवाल सार, महा जस दक्षने अजित वाला हो।
अधिष्ठायक ने तेडवे, कांई भागीरथ सुखकार।
सुरपति नरपति बोले हो, धन २ भगीरथ राय ने।
कांई जिण कीधो रे उद्धार, प्रथम ए गिरिवर ना हो।
गुण वर्णव्या निर्वाणना, कांई सुणज्यो सहु नरनार॥ १९

करी आगमनी साखें हो, शुभ आवे दाखे गिर भणी।
कांई भला वीश निर्वाण, वीर जिनेश्वर भाख्या हो।
सहु दाख्या शिखर माहात्ममें, कांई ते कहिया निर्वाण।
चौथी ढाल मझार हो, ए प्रथम उद्धारज वर्णव्यो।

वंग देश छे सुहामणो, हेम नगर विशाल ॥
पुरजन तिहां धर्मी घणा, तेहना मन शुभ लाल ॥ १७
जिहां धर्मी हेमदत्त राजीयो, प्रजानो प्रतिपाल ॥
राज करे रंगे भले, भाग्य अव्वल विशाल ॥ १८
ऋद्धि रमणी राज्य भोगवे, पिण सुत नाहीं एक ॥
तिणसुं ते विलखो रहे, करे उपाय अनेक ॥ १९
एकदा नगरने परिसरे, विचरता मुनिराय ॥
संग साधु परिवारसुं, रहे काउसग्ग तिहां आय ॥ २०
श्री संभव जिन राजनो, गणधर प्रथम विचार ॥
नामे चारुक्ष गणधरू, ते मुनि है सुखकार ॥ २१
वनपालक जाई रायने, देवे वधाई ताम ॥
सोवन जडित मुद्रा मणी, देई दान अभिराम ॥ २२
हेमदत्ते गुरु वांदिया, करी मन बहु लुभाव ॥
बेठो बैसण ठाम में, आणी मन उच्छाव ॥ २३
दे देशना गुरु धर्मनी, जिन ना वचन रसाल ॥
नर भव पामी प्राणीया ! टालो मद मन वाल ॥ २४
सुणी वाणी राय रीझियो, कहे हेमदत्त कर जोड़ ॥
पुत्र नहीं एक माहरे, एह मोटी जी खोड़ ॥ २५
कहे चारुक्ष गणधर रायने, सुणो हेमदत्त राय ॥
धर्म भलो संसार में, धर्मे नव निधि धाम ॥ २६

देव अरिहंत ने पूजिये, दया दिल में धार ॥
पांचे इंद्री वश करो, दीजे दान अपार ॥ २७

तीरथ जात्राए फल घणुं, करो इम तीर्थ उद्धार ॥
तेहथी मन वंछित मिले, सुख लहो अभिनव सार ॥ २८

राय वाणी सुणी गुरु तणी, कहे गुरु ने राय एह ॥
माहरे मन एक पुत्रनी, कैसे लहिये तेह ? ॥ २९

गुरु कहे हिवे तुमे सांभलो, करो समेत गिरि जात्र ॥
पीत वस्त्र पहरी करी, करिये निर्मल गात्र ॥ ३०

छ र्हरी शुद्ध पालता, करवो हलवो विहार ॥
कोई जीव दुखी ना होवे, जात्रा एह विचार ॥ ३१

सुणी वाणी गुरुरायनी, करी बहुलो संघ ॥
चउविह संघ सुपेर करी, आवे गिरि उमंग ॥ ३२

करी समेत गिरि जातरा, कर्यो हेमदत्ते उद्धार ॥
निज आतम सफलो करी, खरची द्रव्य अपार ॥ ३३

समेत शिखर गिरि जातरा, लाभ लेई भर पूर ॥
पुण्य तणा प्रभाव थी, थयो पुत्र सनूर ॥ ३४

हेमदत्त राय फल पामियो, तिम भवि ने इम होय ॥
करिये शिखर गिरि जातरा, लाभ अनंतो जोय ॥ ३५

★

द्वितीय ट्रंक महिमा :-

एह समेत शिखर परे, दत्त धवल गिरि ट्रंक ॥
मुनिवर सिध्या ते कहुं, भवि सुणो आलस मूक ॥ ३६
संभवादि नव कोड़ाकोड़ी, लक्ष वहोत्तर तेह ॥
ऊपर सहस बयालीस, पांचसे ऊपर जेह ॥ ३७
दत्त धवल ट्रंक ऊपरे, लहे मुनिवर शिव वास ॥
तिण समेत शिखर गिरि, भेट्याजी पूगे छे आस ॥ ३८
एह समेत गिरि जात्रनो, फल केतो ही लहेस ॥
लाख बयालीस पौषध करे, एतो फल हे विशेष ॥ ३९
शिखर समेत गिरिंदनो, एह दूजो उद्धार ॥
भवि सुणज्यो मन थिर करी, ज्युं पामो भव पार ॥ ४०

समेतशिखर माहात्म्य अधिकार :-

चउदे........संवच्छरे, शिखर माहातम तेह ॥
रत्न शेखर सूरि कर्यो, सोल सहस संख्या जेह ॥ ४१
शिखर माहतम में कह्यो, बहु वर्णन अधिकार ॥
किंचित एह उद्धार में, भाख्यो ए निरधार ॥ ४२
पांचमी ढाले ए वर्णव्यो, शिखर समेत गिरिंद ॥
दया रुचि बहु रंग सुं, गायो एह आणंद ॥ ४३



(ढ़ाल ६)

(संभव जिनवर विनति अवधारो गुण ग्यातारे । ए देशी)
(स्वामी नहीं मुझ खीजमते, कदीये होस्यो फल दातारे ॥ एह चाल)

(३) आनंद टूंक :—

धन्य एह समेत शिखर गिरि, तीरथ एह उद्धार रे ।
जे वांदे गिरिवर ए भलो, तें पामे शिव सुख कार रे ॥ १

तीजी समेत शिखर परे, **आनंद टूंक** सुहाय रे ।
अभिनंदन जिन जिहां प्रभु, सहस मुनि संग आयरे ॥ २

अभिनंदन मुनि सहससुं, पामी शिव मग खासरे ।
लही निर्वाण शिखर परे, करी जिहां अनुपम वास रे ॥ ३

पहली जात्रा आनंद टूंक नी, करी जेहनो कहुं हुं नाम रे ।
भवि सुणो आलस मुकीने, चित आणी निज ठाम रे ॥ ४

त्रीजो उद्धार :—

धातकी खंडे पूरण पुर भलुं, रत्न शेखर राजा रे ।
जिण एह समेत शिखर गिरि, करी जात्र वधारी वान रे ॥ ५

आनंद टूंक मनोहर ऊपरी, कियो जिण प्रथम उद्धार रे ॥
त्रीजो उद्धार एह गिरि तणो, कर्यो तेह सुख कार रे ॥ ६

तृतीय टूंक महिमा :—

वली **आनंद गिरि** पर मुनि वरु, तिहोंतेर कोड़ा कोड़ी रे ।
सित्तेर कोड सतरे लक्ष उपरे, बयालीस सहसनी जोडी रे ॥ ७

सत्तसय ऊपर एता मुनिवरू, आनन्द गिरि पर सिधा रे।
ते कारण तीरथ वड़ो, जिहां गिरि ए प्रसिद्धा रे॥ ८

फल केतो आनन्द गिरि भेटता, पौषध लक्षनुं जेहरे।
तीरथ भेटचा फल है तिऊ, ए तीरथ अनुभव गेहरे॥ ९

(४) अविचल टूंक :—

एह समेत शिखर गिरि सोहड, शोभा सुंदर सारो रे।
अविचल गिरि हैं मनोहरु, चौथो तीरथ चित धार रे॥ १०

आए सुमति इण गिरि परै, चढे समेत गिरि पाज रे।
सहस मुनि संगे लिया, आव्या अविचल गिरिराज रे॥ ११

सुदि चैत्र नवमी दिन प्रभु, शुद्ध काउसग्ग धारे रे।
तीस पौषध ग्रही प्रभुजीरे, वारी कर्म विकार रे॥ १२

लही निर्वाण अविचल जिहां गिरै, सहस मुनि वली जेम रे।
करी अणसण अनुभव पद वरी, प्रभु संगे सहु तेम रे॥ १३

सुमति जिन तीर्थ अविचल गिरि, थाप्युं तेह शुभ ठाम रे।
वर्तावी महिमा तीरथ करी, सहु भवि जन ने काम रे॥ १४

चौथो उद्धार :—

चौथो उद्धार कर्यो जे किणे, कहूं वली तेहनुं नाम रे।
वली सुणजो साजन सहू तेहनो, वर्णव ते सहू ताम रे॥ १५

पद्म नगर को राजवी, आनंद सेन जे राव रे।
ते आव्यो समेत गिरि जातरा, करी मनथी बहु भाव रे॥ १६

प्रथम वली अविचल गिरि, उद्धार आनंद सेने कीधो रे।
जिण लाभ अनंतो पामीयो, वली पाम्यो वहोली सिद्ध रे ॥ १७

चतुर्थ टूंक महिमा :–

एह अविचल गिरि ऊपरे, अविचल थया मुनि केता रे।
हिवे सुणज्यो जेह थया ते कहूं, सिध्या मुनिवर जेता रे॥ १८
एक कोडा कोडी चौरासी कोड वली, वहोत्तर लाख विशेषोरे।
सहस इक्कासी सातसे ऊपरे, तिहां सीधा मुनि सुविशेषोरे? ॥ १९
समेत गिरिनी चौथी टूंकना, दर्शने स्यो होवे लाभ रे।
कोडी एक पौषध फल कह्यो, एतो थाए लाभ रे ॥ २०
चौथो अविचल गिरि तीर्थकुं, वांदो भवि वहु भावे रे।
सवलो अविचल पद तुमे ल्हो, वली ल्हो भवजल नाव रे ॥ २१

(५) मोहन गिरि टूंक :–

पांचमुं समेत गिरि ऊपरे, मोहन गिरि महंत रे।
मो(हे) सुर–खेचर–भूचर–नर वली, वली मोहे मुनि महंतरे॥ २२
जग तारक पद्म प्रभु जिनवरु, त्रिभुवन नायक स्वामी रे।
आये एह समेत गिरि परै, चढवा शिवपुर धाम रे ॥ २३
प्रभु निरखी मोहन गिरि भळुं, अणसण नुं मन कीधुं रे।
तीस दिवस पद्मासन करी, मन वांछित फल लीधुं रे ॥ २४
मगसिर वदि एकादसी दिने, पाम्या मुक्ति नुं ठाम रे।
त्रि सहस (सय) अड सठ (सय) जिन संगे मुनि,
ए तीरथ शुभ धाम रे ॥ २५

पंचम उद्धार :–

प्रथम किण सोहन गिरि उद्धर्युं, कहूं तेहनुं नाम रे ।
भविजन हुंसे सुणज्यो सहु, जाणवानो ए काम रे ॥ २६

नगरी प्रभाकर वंग देश में, सुप्रभ राजा जेह रे ।
जात्रा जिणे करी समेत गिरि तणी, भावे बहु ससनेह रे । २७

राजा सुप्रभ सोहन गिरि, कर्यो उद्धार जिण वहेलो रे ।
जग में यश बहुलो जिण लियो, जग यश तास प्रसिद्धि रे ॥ २८

भाख्यो पांचमो उद्धार ए, राय सुप्रभ जिण कीधो रे ।
धन २ तेहना माता पिता, धन कुल वंश प्रसिद्धो रे ॥ २९

पांचमी टूंक महिमा :–

सोहन गिरि पर मुनि केता, संख्याएं जे वहता रे ।
कोड निन्याणु सत्याशी लाख, सहस तेयाल लहंता रे ॥ ३०

वली ऊपर सातसे सत्तावीश, एतला मुनि महंत रे ।
मोक्ष गये नमो नित प्रतैं, सिद्ध भये जो संत रे ॥ ३१

जात्रा फल सोहन गिरि, करे पौषध एक कोड रे ।
तेतो फल पौषध से होवे, गिरि तेता फल जोड रे ॥ ३२

पंच(म) गिरी छठी ढाले उद्धर्या, शिखर गिरि वरणाव रे ।
दया रुचिये समेत गिरि, बोल्यो वर्णव भावे रे ॥ ३३



(ढ़ाल ५ नी)

(त्रिभुवन नायक तुज विण दूजो–ए देशी)

(६) प्रभास टूंक :–

त्रिभुवन नायक तीरथ मोटो, समेत शिखर गिरि राया जी।
ध्यावे मुनि सुर नर ए गिरिने, पूजी प्रणमे पाया जी ॥ १

समेत शिखर गिरि तीरथ ऊपर, प्रभास सुहाया जी।
छट्ठे टूंक सुपार्श्व प्रभुजी, निरखी टूंक हर्षाया जी ॥ २

पांचसौ मुनि संग लेई सुपारस, प्रभुजी समेतगिरि आयाजी।
टूंक प्रभासे ध्यान धरीने, पद्मासन जिहां ठाया जी ॥ ३

तीस दिवस उपवास ग्रहीने, करी दृढ चित मन लाया जी।
फागुण वदी सप्तमी दिवसे, लही निर्वाण सवाया जी ॥ ४

पांचसौ मुनि वली श्री जिन संगे, अनुभव लीला पाया जी।
टूंक प्रभास ए तीरथ थाप्यो, समेत शिखर गिरि राया जी ॥ ५

षष्ठ उद्धार :–

हिवें टूंक प्रभासे प्रथम ज जात्रा, कुण करी ? सो हिवें बोलेजी।
वली उद्धार कर्यो जे टूंकनो, तेहनुं नाम अतोल जी ॥ ६

उद्योत नगर नो राजा उद्योतक, रोग तनु जेहनु खीणजी।
कोढ रोग शरीर में उपनो, तेहथी थयो छे दीन जी ॥ ७

नगर उद्योत वन एक जिन मंदिर, श्री ऋषभ देव प्रासाद जी।
राय उद्योत नित सेवा सारे, दूर हरी प्रमाद जी ॥ ८

एक दिवस राय ऋषभ के आगे, भावना मन शुद्ध आवे जी ।
तिण वेला तिण ठामे पहुंता, जंघा चारण मुनि आवे जी ॥ ९

वांदी ऋषभ देव मुनि चारण, सभा मंडपमां वेसे जी ।
उद्योतक मुनि चारण वांदी, कर जोड सन्मुख वेसे जी ॥ १०

चारण मुनि उपदेश प्ररूपे, सुणे उद्योतक राय जी ।
वाणी सुण राजा मन हरख्यो, तन मन हरखित थाय जी ॥ ११

उद्योतक राय कहे कर जोड़ी, स्वामी मुझ तनु रोग जी ।
किम जाये सो उपाय कहीजे, तिणथी टले मन सोग जी ॥ १२

कहे राजाने चारण मुनिवर, जात्रा समेत गिरी कीजे जी ।
सुपार्श्व तीर्थ प्रभासक ट्रूंके, जिहां उद्धारज कीजे जी ॥ १३

श्याम वस्त्र पहरी इम अंगे, जात्रा शिखर गिरि करीये जी ।
शुद्ध मन शुद्ध भाव धरीने, चढीये इण गिरिवरीये जी ॥ १४

जंघा चारण कही उतपत्या, हिवे राजा मन रीझ्यो जी ।
पहरी श्याम वस्त्र मन रंगे, जे मन भाव ते सीझ्यो जी ॥ १५

संघ करी समेत गिरि आया, छे छे हरी पालता जी ।
श्याम वस्त्र पहेरी गिरि चढिया, मुख जयर बोलंता जी ॥ १६

शिखर गिरि प्रभासक ट्रूंके, मन रंगे तेम होता जी ।
पूजी सुपार्श्व तीरथ भावे, करी उद्धार सम होत्रा जी (?) ॥ १७

तिण वेला तिण समये रायनो, रोग गयो तब दूरे जी ।
राजा दिल हरख्यो ते पूरो, उद्धार छ ट्रूंक ना पूरे जी ॥ १८

जात्रा करी राजा घर पहोंता, मनना कारिज सिद्धा जी।
भावे ए तीरथ जे भेट्युं, जस जग मांहीं प्रसिद्धा जी॥ १९

षष्ठ ट्रूंक महिमा :-

एह समेत शिखर गिरि ऊपर, गिरि प्रभासे मुणिंदाजी।
संख्या ए कहूं ते सहु सुणज्यो, भविजन होय आणंदा जी॥ २०
मुनि कोड़ा कोडि वली उगण पचास, कोडि चौरासी तेहजी।
लाख बोहत्तर सप्त सहस वली, ऊपर सात सै तेह जी॥ २१
वलि ऊपर बैयालीस भाख्या, शिखर महातम में दाख्याजी।
मुक्ति गया मुनिवर तिहां एता, गिरि प्रभासे साख्या जी॥ २२
कोडी बतीस पौषध फल होवे, ते जात्रा फल पामे जी।
समेत शिखर प्रभास गिरिनी, करो जात्रा शुभ कामे जी॥ २३
ए गिरि मोटो तीरथ मोटो, जो भेटे शुभ भावे जी।
भव दव ताप निवारे एह गिरि, अनुभव लीला पावे जी॥ २४

(७) ललित घट ट्रूंक :-

वलि समेत गिरि ने ललित घट ट्रूंके, चन्द्र प्रभु जिन आयाजी।
सहस एक मुनिवर ले साथे, समेत शिखर गिरि आया जी॥ २५
चंद्र प्रभु पद्मासन धारी, तीस दिवस उपवासे जी।
भाद्रव वदी सप्तमी दिन लहिए, निर्वाण मन उल्लासे जी॥ २६

सप्तम उद्धार :-

ललित घट गिरि के प्रथम उद्धार ज, जे कर्यो ते कूंग राजा जी।
नाम ठाम तेहनो हिवे भांखु, तिणे कर्या शुभ काजा जी॥ २७

ये ही वर द्वीप में पुंडरीक नगरी, ललित दत्त जिहां राजाजी।
चउविध संघ लेइ आव्यो जात्रा, भलो सबल दिवाजा जी॥ २८
चढ्यो समेत शिखर नी पाजे, आव्यो ललित घट ढूंक जी।
करी जात्रा उद्धार कर्यो जिण, और भी ढूंक विशेष जी॥ २९

सप्तम ढूंक महिमा :—

गिरि ललित घट ऊपर मुनिवर, केता जे जिहां सिद्धाजी।
तेहनी संख्या हिवें ते दाखू, जे सिद्धा ते लीधाजी॥ ३०
अडव चौरासी कोडि बोहतर, अँसी लख्य नी होड़ी जी।
चार सहस अरु पांच सें ऊपर, वलि पंचावन जोड़ी जी॥ ३१
एता मुनि जन ललित घट गिरि, शिव पाम्या सुखकार जी।
गिरि नी जात्रा नो फल केतो, सोल लक्ष पौषध सार जी॥ ३२
सप्तम उद्धार सप्तम ढूंके, कर्यो तीरथ सुधि एह जी।
ते कारण ए समेत शिखर गिरि, वांदो भवि बहु नेह जी॥ ३३
सप्तमी ढ़ाल ए समेत शिखर नी, सातमो थयो उद्धार जी।
रूप रुचि नो शिष्य दया रुचि, भाखिये श्री कार जी॥ ३४

"विषमकाल जिनबिंब जिनागम
भवियण कुं आधारा॥"

(ढाल ६ट्ठी)

(ए तो प्रथम तीर्थंकर सेवना, साहिबा मुदित हृदय ससनेह जिणंद मोरारे)

ए तो समेत शिखर गिरि सेविये, मेटिये शुभ धरी भाव । साजन.
मेटिये कर्म क्लेशने ॥सा०॥ लहिये भव जल नाव ॥सा०॥ १

(८) सुप्रभ गिरि टूंक :–

समेत शिखर गिरि आठमो, सुप्रभ गिरि ए नाम ।
जिहां पुष्प दंत प्रभु पग ठवें, तीरथ ए शुभ धाम ॥ २

सहस मुनि संग परवर्या, आव्या श्री सुविधि जिणंद ।
समेत शिखर गिरि पर चढ़ी, गिरि निरखी आणंद ॥ ३

सुप्रभ गिरि पउधारिया, जिहां पद्मासन प्रभु धार ।
तीस दिवस पौषध धरी, करी मोक्ष तप श्री कार ॥ ४

भाद्रव सुदि नवमी दिने, निर्वाण लही पुष्फदंत ।
सहस मुनि संग तिहाँ वली, अनुभव लही सहू संत ५

सुप्रभ गिरि समेत गिरे, सुविधि जिन तीरथ धाम ।
नाम राख्यो मही मंडले, सहू भवि जनने काम ॥ ६

अष्टम उद्धार :–

हिवे सुप्रभ गिरि उद्धार नो, कर्यो तेहनो कहूं भाव ।
आरज देसे मनोहरु, श्री पूर नगर नो राव ॥ ७

जिहां हेमप्रभ नामे राजियो. जिन धर्मी मति वंत ।
जात्रा शिखर गिरि संचर्यो, चालतो ने शुभपंथ ॥ ८

अनुक्रमे **समेत शिखर** चढ़ी, पहोता गिरि **सुप्रभ** ।
जात्रा करी बहु भाव सूं, लाभ वहोलो जिण लाभ ॥ ९

सुप्रभ गिरिनो जिणे कर्यो, उद्धार तेह अनूप ।
सप्त प्रभु निर्वाण ना, उद्धार कर्या वली चूंप ॥ १०

तीरथ भेटी यश लही, निज थानिक पहोचंत ।
जनम सफल कर्यो आपणो, जस नामी सोहंत ॥ ११

अष्टम टूंक महिमा :-

सुप्रभ गिरिए मुनि वरू, जिहां सीधा ते संबंध ।
कोडि निन्नाणु लक्ष नव भला, सप्त सहस मिल संबंध ॥ १२

ऊपर सातसौ एंशी भला, एता मुनि मिल लही मुक्ति ।
क्रोड पोषध नु फल लहे, तेतो टूंक भेट्या फल उक्त ॥ १३

(९) विद्युत गिरि टूंक :-

आठमा गिरि नो ए कहउं आठमो ए उद्धार ।
हिवे नवमो गिरि सांभलो, उद्धार नवमो सार ॥ १४

समेत शिखर के गिरि सिरै, **विद्युत गिरि** है विशाल ।
गिरि अनोपम गुण नीलो, स्वर्ग पुरी नो भाल ॥ १५

शीतल जिन त्रिहु जग धणी, सहस मुनि प्रभु साथ ।
चढ़िया शिखर गिरि कडणीए, निरख्यो **विद्युत गिरि** नाथ ॥ १६

विद्युत गिरि थिर थोहिया, वाल्यो पद्मासन स्वाम ।
करी जिहां तीस पौषध भला, ध्यावे सिद्ध पद ताम ॥ १७

सुदि वैशाख द्वितीया दिने, निर्वांण लही जिन राज।
सहस मुनि जिन संग में, पाम्युं जिहां शिवराज ॥ १८

नवम उद्धार :-

हिवे उद्धार ज सांभलो, विद्युत गिरिये थाय।
मालव देशनो महीपति, नगर भद्दिलपुरनो राय ॥ १९
मेघरथ नाम राजीयो, आव्यो, शिखर जात्रा काज।
चढ़ियो शिखर गिरि कडणीये, नमियो विद्युत गिरि राय ॥ २०
नव गिरि जिणे जे कर्या, उद्धार ज नव निद्ध।
लाभ लियो जिणे मोटको, पूज्या नव ठामे नव सिद्ध ॥ २१
मेघरथ राय गिरि पूजीने, आव्यो निज गृह राज।
संघ पोषी बहु यश लह्यो, कर्यों जिणे सफलो राज ॥ २२

नवम टूंक महिमा :-

विद्युत गिरि सिद्धा मुनिवरू, संख्याए कहेवाय।
कोडाकोड अठारह, कोड बयाल कहाय ॥ २३
लाख बत्तीस वली ऊपरे, वली बयालीस हजार।
नव से पांच अधिक वली, एता मुनि लह्या शिव राज ॥ २४
एक कोड पौषध फल जेहनू, विद्युत गिरि वांद्या थाय।
एह शिखर गिरि भेटतां, फल असंख्यातुं पाय २५

(१०) संकुल गिरि टूंक :-

हिवे दशमा संकुल गिरितणो, समेत शिखरे उद्धार।
सहु साजन सुण लीजियो, धरी मन अधिको प्यार ॥ २६

श्रेयांस प्रभु मुनि श्रेगिसुं, परिवरिया जिन राय।
समेत शिखर गिरि कडगे चढ़ी, संकुल गिरिये आय॥ २७

धारी पद्मासन प्रभुजी ए, पौषध तीस ग्रही सार।
श्रावण वदी तृतीया दिने, करी निर्वाण विचार॥ २८

दशम उद्धार :—

हिवें संकुल गिरि नो भलो, उद्धार किग कल लीध।
ते वाक्य श्रवणै सुणिजीये, जिणे मन कारज सिद्ध॥ २९

दक्षिण भरत मालव देश में, वाल नगर को राज।
आणंद सेने जात्रा करी, पहेली शिखर गिरि धार॥ ३०

करी उद्धार संकुल गिरि तणो, वली दश गिरि संयुक्त।
लाभ अनंतो जिण लह्यो, जिणें कर्यो शुभ सुमहोत्सव॥ ३१

घर आवी हरखी घणुं, संघ भक्ति बहु कीध।
सुजस महोदय पामिया, कारिज मन सहु सिद्ध॥ ३२

दशम टूंक महिमा:—

गिरि संकुल मुनि केतला, थया जिहां सिद्ध सो अंक।
कोड़ा कोड छियाणवै, ऊपर छिन्नव कोडि॥ ३३

लाख विन्नवे मुनीसरू, साढ़ी नव्यासी सहस।
पांचसौ बयालीस ऊपरे, एतला सिद्धा मुनीस॥ ३४

गिरि संकुल भेटया फल केतो, कोड एक करो उपवास।
तेतो संकुल गिरि जात्रा, फल तेतो लहे तास॥ ३५

एह समेत शिखर तणा, दश गिरि दश उद्धार।
तीरथ ए समेत गिरि, सहु तीरथ सिरदार॥ ३६

ढाल आठमी ए हरखमुं, भणत गुणत आणंद।
रचना रूडी रास नी, दया रुचि गावे प्रबंध॥ ३७

(ढाल ९मी)

(मन मोहनलाल, हो जग सोहनलाल। एह चाल)

(११) निर्मल टूंक :–

हिवे एह तीरथ गाइये मनमोहन लाल,
शिखर समेत गिरिंद के हो जग सोहनलाल।
विमल नाथ निर्मल प्रभु, आए शिखर आणंद के॥ १
पाज नदी गिरिवर तणी, सिर शिखर पर आय के।
नयणे निर्मल गिरि निरखीये, शुद्ध भूमि जिहां पाय के॥ २
विमल नाथ संग थया, षट् सहस मुनिराय के।
ते पिण निर्मल गिरि आवीया, करी शुद्ध भूमि ठाय के॥ ३
प्रभु पद्मासन धारीयो, सहु मुनि पादपोपगम लेइके।
मोक्ष तप प्रभुजी लियो, तीस पोषध करी तेहके॥ ४
असाढ वदि सप्तमी दिने, पायो प्रभु निर्वाण के।
षट् सहस मुनिवर वली, मही अनुभव निज ठाण के॥ ५
करी निर्वाण तीर्थ थापियो, विमल नाथ भगवान के।
निर्मल गिरि तीरथ भलो, समेत शिखर गिरि थान के॥ ६

अग्यारमो उद्धार :—

विमल जिनेश्वर ट्रंक नो, कर्यो केण उद्धार के ।
ते हिवे सहु भवि सांभलो, कहस्युं नाम सुधार के ॥ ७

नगरी कनकावती भली, पूर्व विदेह मझार के ।
कनकरथ राजा भलो, जिन धर्मी दातार कै ॥ ८

जात्रा शिखर गिरि आवीयो, धरी मन में बहु भाव कै ।
चढियो शिखर गिरि शिरे, निरखी निर्मल गिरि भाव के ॥ ९

विमल नाथ गिरि जातरा, करी कनकरथ भूप के ।
उद्धार कर्यो जिण ट्रंक नो, ट्रंक इग्यार अनूंप कै ॥ १०

उद्धार करी जिण जश लियो, आयो निज पुर ससनेह कै ।
कनकावती नगरी कर्यो, मंदिर शिखर वीसेह ॥ ११

वीस प्रभु बिंब थापीया, जात्रा शिखर फल लीद्ध कै ।
साधर्मीनी वैयावच्च करी, रायना कारज सिद्ध कै ॥ १२

समेत शिखर गिरि नौ भयो, ए एकादशमो उद्धार कै ।
हिवे निर्मल गिरि ऊपरे, कैता मुनि परिवार कै ॥ १३

निर्मलगिरि महिमा :—

सतरें कोडि साठ लक्ष वली, षट् सहस सातसौ जोड कै ।
ऊपर बयालीस मुनि भला, मुक्ति लही बहू कोडि कै ॥ १४

ट्रंक जात्रा फल कैतलं, एक कोडि करे उपवास कै ।
फल अनंतो गिरि भेटता, भवि सहू भेटो उल्लास कै ॥ १५

(१२) स्वयंभू गिरि ट्रंक :–

हिवे अनंत जिनराजजी, जाणी अवस्था पूर्ण कै।
आव्या समेत शिखर पर, स्वयंभूगिरि सो वर्ण कै॥ १६
निरखी निर्मल ठाम नै, मुनि सप्त सहस लेई संग कै।
प्रभु पद्मासन तिहां कर्यु, तीस पौषध करी रंग कै॥ १७
मोक्ष तप पूरण करी, चैत्र सुदि दिल धार कै।
श्वेत पंचमी दिवसे भलं, अबाधा रहित पद धार कै॥ १८
प्रभु अनुभव पदवी लही, जोति स्वरूप स्वभाव कै॥
सुख अनंता पामिया, नहीं जहां दुःख लगाव कै॥ १६
देह नहीं आयु नहीं, नहीं तहां कोमल गात्र कै।
प्राण योनि वली तिहां नहिं, सुख अनंतानंत अपार कै॥ २०
निर्वाण भूमि तीरथ कर्यो, धन २ समेत गिरिंद कै।
हिवे उद्धार होस्यै भलो, जे करस्यै नरिंद कै॥ २१

बारमो उद्धार :–

एह भरत मांहि भलो, कौशांबी नगरी विख्यात कै।
बाल सेन राजा भलो, जिनधर्मी सुख्यात कै॥ २२
पिण धन गृह मांहे नहिं, यो दुःख सह्यो न जाय कै।
राज क्षुद्र कर (?) बहु होवे, देश नगर पुर पाय कै॥ २३
तब राजा मन चिंतवी, श्री जिन भक्ति कांत कै।
नित २ जिन सेवा करे, मन अति हर्ष धांत कै॥ २४

एक दिन श्री जिन सेवना, करी स्तवना शुद्ध भाव कै।
एहवै गगन मंडल हुंती, विद्याचारण मुनि आव कै॥ २५

करी जिन भाव स्तवन भई, बैठा जिणहर बहार कै।
बालसेन राय जिन स्तवी, वांदे मुनि आचार कै॥ २६

चारण मुनि उपदेशीयो, धर्म भलो है नरेश कै।
कर जोड़ी राजा कहे, क्रुद्ध (ऋद्धि) होवे जो असेस कै॥ २७

तो सहू मन वांछित मिले, होवे धर्म नी वृद्ध कै।
विद्या चारण मुनि भणैं, सुण राजन समृद्ध कै॥ २८

चैत्य करावो अभिनवो, ठावो अनंत भगवान कै।
पूजो इम वहु प्रेम सुं, वाधसे इम बहु मान कै॥ २९

यक्ष पाताल देव प्रगटस्यै, देवी अंकुशी वर देय कै।
लाल वस्त्र पहरी करी, पूजो प्रभु गुण गेय कै॥ ३०

यक्ष वर इम आपस्ये, होस्ये नव ही निधान कै।
उपदेश देई मुनि उतपत्या, हरख भयो राजान कै॥ ३१

चैत्य कराव्यो तिहां चौमुखो, अनंत मूरति चिहूं फेर कै।
द्रव्य भावे वे भेदस्युं, चिहुं दिश पूजे फेर कै॥ ३२

लाल पीतांवर पहैरीनै, नित पूजे जिनराय कै।
यक्ष यक्षिणी जब प्रगटिया, मांगे २ वर राज कै॥ ३३

कहे राजा यक्षराज ने, मन वांछित मुझ सिद्ध कै।
यक्ष यक्षिणी संतुष्ट भई, हार मणिमय दीद्ध कै॥ ३४

तेहथी जे मनि चिंतवै, काज होवे तत्काल के।
राजा मन बहु रंजीयौ, फलिया मनोरथ माल के॥ ३५

जक्ष कहे सुणो अधिपति, करजो समेत गिरि जात्र के।
समेत शिखर गिरि ऊपरं, स्वयंभू गिरि विख्यात के॥ ३६

अनंत निर्वाण जिहां भटं, तिहां जई करजो उद्धार के।
नृप हार प्रभावे सहू फल्या, ऋद्धे भर्या भंडार के॥ ३७

हिंवे समेत शिखर जात्रा भणी, संघ सजाई कीद्ध के।
क्रम २ पंथे चालता, जे मन कारज सिद्ध के॥ ३८

नयणे शिखर गिरि निरखीयो, वंदे बाल नरेश के।
सोने रूपे फूलडे भरी, मोती थाल विशेष के॥ ३९

राय वधावे गिरि मोतीयैं, सोने रूपे फूल के।
चढ़ता शिखर गिरि पेखियो, मुनि कृपा पात्र अमूल के॥ ४०

राजा मुनिवर वांदिया, संग भयो ते सिद्ध के।
चढ़ी शिखर जय २ भण्यो, हरखे जात्रा कीध के॥ ४१

मुनि कहै राजा बालने, निरखी अनंत निर्वाण के।
स्वयंभू गिरि देखावीयो, वांदे भूप सुजाण के॥ ४२

श्री अनंत प्रभु महाराज ना, चरण ठवे भाव के।
द्वादश ट्रूंक ऊपर कर्या, जिहां उद्धार वर्णाव के॥ ४३

मन मान्या कारज सर्या, सिद्ध भयो सहू काम के।
समेत शिखर गिरि पूजियो, फिर आयो निज धाम के॥ ४४

अनुक्रमे नगरे आविया, देता अढलक दान ।
चौवीस संघ जीमाविया, सहुनुं राखी मान ॥ ४५

दिशि दिशि कीरत विस्तरी, जस लोकै कीध कै ।
राजा मन हरखियो घणो, मनह मनोरथ सिद्ध कै ॥ ४६

स्वयंभूगिरि महिमा—

शिखर टूंक स्वयंभू परै, कहूं मुनि वर्णव तेह ।
कोडा कोड छियाणवें, सत्तर कोड वली जेह कै ॥ ४७

लाख सतर वली ऊपरे, वली सतर सहस मिल साथ ।
सात सौ मुनि वलि ऊपरे, अनुभव उज्ज्वल लीध ॥ ४८

स्वयंभू गिरि एक भेटता, फल केतो कहेवाय ।
फल जेतो कोड उपवास नू, ते तो गिरि भेटया थाय के ॥ ४९

समेत शिखर गिरि भेटता, लाभ अनंत अपार ।
जात्रा करो भवी भावसुं, ए गिरि तीरथ सार कै ॥ ५०

उद्धार नवमी ढाल मैं, द्वादश तेह विचार ।
भाख्या दया रुचि भला, शिखर महातम धार ॥ ५१

(ढ़ाल दसमी)

(हुं तो जाणुंरे जिनेश्वरा वांदशुं, श्री जुग वाहु जिन राज ने । ए चाल)

धन २ एह समेत शिखर गिरि, जइ वांदे सहु सुर राय रे ।
भावे करी स्तवना सहू करे, नित २ भवि जिन गुण गाय रे ॥ १

एह समेत शिखर गिरि दीपतो, गिरि वीशे गिरीयै सोहेरे ।
जिहां तीरथ भूमि है भली, ते तो भवि जनना मन सोहेरे ॥ २

(१३) दत्तवर ट्रूंक :-

एह समेत शिखर गिरि शिर परै, जिहां दत्तवर गिरि है अनूपरे।
सोहाए जिम स्वर्ग पुरी, तेह भेटवा सहू मन चूंप रे॥ ३

जिहां श्री प्रभु धर्म जिणंदजी, सहू अष्ट कर्म दल पैल रे।
आव्या समेत शिखर गिरि ऊपरे, लहवा अनुभव नी मैल रे॥ ४

प्रभु दत्तवर ट्रूंके पद ठवै, सो तीरथ तेह उद्धार रे।
गिरि तेरमो तेह सोहामणो, तेहनो जे बहु अधिकार रे॥ ५

वली जिन संग मुनि आठ सौ, ते सहू छे मोक्ष परिवार रे।
सो दत्तवर गिरि मन भाविया, आव्या जे जिन संग धार रे॥ ६

प्रभु पद्मासन जिहां पूरियौ, जिहां दत्तवर गिरि श्रीकाररे।
मोक्ष तव तीस पौषध करै, प्रभु वारी कर्म विकार रे॥ ७

उज्वली ज्येष्ठ पंचमी, शुभ तिथिए अनुभव थाय रे।
भव दरियो तरियो गेहरो, प्रभु सिद्ध स्वरूपी थाय रे॥ ८

अविनाशी प्रभु शिव वासीये, जिण करके एह तीरथ सार रे।
वलि आठ-सौ मुनिवर जिहां भला, तेह जिन संगे शिव धार रे॥ ९

त्रयोदशम उद्धार महिमा :-

हिवै दत्तवर गिरि एहनो भलो, होस्ये जे प्रथम उद्धार रे।
साजन जन सहू सुपरे सुणो, कहुं तेहनो हिवें विस्तार रे॥ १०

हिवे देश पांचाल मांहे भलो, जिहां श्रीपुर नगर विशेष रे।
तिहां राजा भवदत्त राजियो, ज्यां केशरी (?) जिन भक्ति असेस रे॥ ११

भत्र दत्त तन रोगे ग्रस्यो, ताते दुख तन में न समाय रे।
शूल रोग वुरो तन में चूवे, वली करे वहु रोग उपाय रे॥ १२
पिण तन साता पिण ना होवे, ते दुख से दुर्वल थाय रे।
पिण जैन धर्म में दृढ़ घणु, मन तेहनुं किहां न डुलाय रे॥ १३
में वांध्या जे दलिया पूर्वना, वेदनीय जे करम ना तेह रे।
ते भुगत्या छुटे प्राणीया, जे उदये आव्युं जेह रे॥ १४
जे प्रभु पूजा नित करे भावसुं, पूजे जमणा सुं जिन देव रे।
त्रिकरण शुद्ध भावे नित करे, चूके नहीं फूल एक टेव रे॥ १५
पिण रायनो रोग न उपशमे, परिपह पूजा में सहंत रे।
तब राजा रोग पर कोपियो, हिवे तप मां मन हवे संत रे॥ १६
करे त्रिण २ दिन विच पारणुं, वीस तेला भया ते सिद्ध रे।
हिवे वीसमा तेले पारणो, एक राय अभिग्रह लीध रे॥ १७
पैलियोवूं(!)साधु नुं पातरूं, तो मुझ मन थाय शुद्ध रे।
इम चिंतित मुनिवर पेखीया, धर्मवोध मुनि क्रिया शुद्ध रे॥ १८
मुनि मास खमण ने पारणे, लेवा शुद्ध आहार नो भाव रे।
गौचरीए नगर में संचरे, गुरु भमर परे फिरे दाव रे॥ १९
तव राजा मुनि ने पेखियो, खरी पोरसी पूरी मान रे।
राय मुनि वांदी गृह आणीया, पूरी पात्र भरी खीर दे दान रे॥ २०
मुनि वहोरी ने पाछा वल्या, राजा पिण मुनि साथ रे।
पहोंचावी मुनि जन ने वने, घर आव्यो हरखे राय रे॥ २१

पारी पोरसी ने पारणुं कर्युं, राजा मन शाता थाय रे।
राजा तन शूल रोग कर्म गयुं, भयो हरख अधिक मन राय रे॥ २२

हिवे राजा मुनि वर वांदवा, शुभ भावे आवे ताम रे।
मुनि वांदी बैठो आगले, वली मूंई नमी करीय प्रणाम रे॥ २३

मुनि धर्म उपदेश दिए भद्रं, दुलहो नर भव लह्यो तास रे।
प्राणी तीन तत्त्व विचारीए, देव गुरु ने धर्म ते खास रे॥ २४

प्राणी देव अरिहंत ने पूजीयै, वली गुरु उपदेशनी भक्ति रे।
वली धर्म नी महिमा कीजिये, जेहवी जेहनी गृह शक्ति रे॥ २५

एहवो उपदेश सुणी करी, राय मुनि ने कहे कर जोड़ रे।
मुझ तन रोग दूरे किम होवे !, कहो धर्म उपचारनी मोडि रे॥ २६

वलतुं मुनि कहे राय ने, सुण राजन ! एक उपाय रे।
विंशति इम तेला तप कर्यो, तेहनुं फल किण पर थाय रे ?॥ २७

तुमे समेत शिखर गिरि मांडलो, लेइ गिरि नो भाव विशेष रे।
वली टूंक ऊपर बीस देहरा, प्रभु बीसनी मूरति बीश रे॥ २८

वली बीस थानिक ने पूजिये, अष्ट भेदे पूजा सार रे।
प्रभु धर्म जिणंदनो चौमुखो, करी पूजो मन ए विचार रे॥ २९

वली स्याम वस्त्र पहेरी करी, पूजीजे श्री जिन राज रे।
बहु जयणाएं जिन पूजता, पामे ते सुख समाज रे॥ ३०

अधिष्टायक जे धर्म नाथना, वली करस्यै तुझ सुपसाय रे।
देस्यै तुमने जे देवता, तेहथी तुम तन सुख थाय रे॥ ३१

राजा मुनि वचन सुणी भला, उपज्यो दिल मां बहु भाव रे।
गुरु वांदी राय निज घरे, आव्यो फाव्यो सहु दाव रे॥ ३२

मंडावै मांडले गिरी भलो, ऊपर वीश टूंक सोहंत रे।
वली वीश जिन प्रतिमा घरे, वली चौमुख धर्म मोहंत रे॥ ३३

हिवै श्याम वस्त्र राय धरी, शुचि थई पूजै श्री जिन राज रे।
वली अष्ट प्रकारी नृप स्यूं, पूजे जयणा सुं जिनराज रे॥ ३४

एहवे किन्नर यक्ष प्रगटिया, कंदर्प (प्रज्ञप्ति) देवी विख्यात रे।
अधिष्ठायक ए धर्म नाथना, सान्निध्यकारी साक्षात रे॥ ३५

कहे यक्ष अरु यक्षणी रायने, तें जिन भक्ति बहु किद्ध रे।
तिण कारण अमे संतुष्टीया, जे मांगे सौ(करुं) वृद्धिक रे॥ ३६

भवदत्त राय कहे यक्षने, मुझ रोग निवारो देव रे।
प्रभु सेवा फल मुझ ने मिल्यो, वली भाग्य फल्यो मुझ देव रे॥ ३७

यक्ष संतुष्टिया राय ने, दीये एक भेरी अवाज रे।
तस शब्दे रोग सहु उपशमे, हिवै सफल सहु तुम काज रे॥ ३८

वली भेरी वजाई देवता, राजा तन निकलंक किद्ध रे।
मन मान्या सहु कारज फल्यां, यक्ष भेरी राय ने दीद्ध रे॥ ३९

भली भेरीना यक्ष गुण उच्चरे, जस शब्दे जस बहू थाय रे।
रोग भोग ने दुस्मन आपदा, एह शब्दे दूर पलाय रे॥ ४०

त्रयोदशम उद्धार :—

वली यक्ष कहे भवदत्त ने, तुमे समेत शिखर गिरि जाय रे।
तुमे धर्मनाथ निर्वाण नो, उद्धार प्रथम कराय रे॥ ४१

इम कहीने यक्ष जलोपिया, राजा मन हरख अपार रे।
हिवे समेत शिखर केरे जात्रा, करी संघ शिखर पर आय रे॥ ४२

दत्तवर गिरि थी मुनि आइने, भवदत्तने कहे मुनि राय रे।
इहाँ धर्मनाथ निर्वाण छे, वांदो शुभ भावे राय रे॥ ४३

राजा पिण मन हरख्यो घणो, करे दत्तवर गिरिनो उद्धार रे।
वली धर्म जिनेश्वर ना भला, थापे जिन चरण विचार रे॥ ४४

वली द्वादश गिरि उद्धरिया, जग मांहे यश बहु लिद्ध रे।
करी यात्रा घर भणी पग कर्या, वली मन हीं मनोरथ सिद्ध रे॥ ४५

घर आवी संघ जीमाविया, करी स्वामी वत्सल तेम रे।
वर्ण्यों यश जग में राय नो, सम्पूर्ण सही वली जेम रे॥ ४६

दत्तवर गिरि महिमा :-

हिवे दत्तवर टूंके मुनि वरु, केता मुनि अनुभव सीध रे।
कोडा कोडी ओगणीस जाणिये, वली ओगणीश कोडी प्रसिद्ध रे॥ ४७

नव लाख ने नव सहस वली, वलि सात सौ मुनि संजुत्त रे।
पंचाणवे मुनि ऊपर भला, एता मुनि ल्ह्यो जिहां मुक्ति रे॥ ४८

वली दत्तवर टूंक यात्रा तणो, फल केनो लहे वली तेह रे।
कोड उपवास फल हे जेतो, तेनो एक टूंके मेह रे॥ ४९

फल अनंतो शिखर गिरि भेटना, भवी भेटो शिखर गिरि राय रे।
कहे दया रुचि दशमी ढाल में, गिरि भेट्या सुख थाय रे॥ ५०

(ढाल ११मी)

(ऋषभ जिनेश्वर वंदिये, निर्मल शुद्ध परिणाम हो–ए देशी)

भविजन ! शांति जिनेश्वर गुणनीलो, सोलमो जिनराज हो।
चक्रवर्त्ती जिन सोलमो, सेवे सुर नर पाय हो॥ १

नयर हत्थिणाउर दीपतो, सोहे स्वर्ग विमान हो॥
जिहां राय विश्वसेन राजीयो, सौम्य सुदक्खिण हो॥ २

भविजन ! राणी अचिरा गुण निधि, रंभा जेम आकार हो।
इंद्राणी जिम गुण घणा, सुंदर अति सुखकार हो॥ ३

एक दिवस एक रात्रीये, अर्द्ध रजनी समय मांहे हो।
चौदह सुपना राणी पेखिया, अति हर्षित उछाहि हो॥ ४

प्रथम गय वर सुपनांतरे, देखी परम आणंद हो।
वृषभ श्वेत वर्णे भलो, बीजे स्वप्न सुख वृंद हो॥ ५

सिंह पराक्रमी सूरमो, तीजे एह लहंत हो।
लक्ष्मी चौथे देवता, स्वप्ने एह सोहंत हो॥ ६

पंचमे पंच वर्ण तणी, जुग लही सुमनी माल हो।
छट्ठे सोल कला करी, अमीय झरत शशी विशाल हो॥ ७

महि मंडल तिमिर निवारणो, सहस किरण कांते भाण हो।
सप्तम स्वप्न में पेखीयो, सप्त–मुखाश्व रूढ जाण हो॥ ८

भविजन सहस जोयण उर्द्ध्व सोहतो, फरकत ज आसमान हो।
स्वप्न अष्टम गगने उतरे, गृह आव्युं सुख थान हो॥ ९

नवमे कलश सुजलभर्यो, एह शुभ स्वप्न लहंत रे।
दशमे पद्म सरोवरू. लही स्वप्न हरखंत रे॥ १०

सागर एकादश स्वप्न में, ते लहै निर्मल शुद्ध रे।
देव विमान गृह पैसतो. निरखे तेह सुवुद्ध रे॥ ११

रत्न राशी गृहमां भर्या. त्रयोदश स्वप्न लहंत हो।
निर्धूम अग्नि चउदमे लही. देखी जागे महंत हो॥ १२

चउद सुपन राणी पेखीया, जागत फिर नवि उंवे हो।
राणी राजा ने विनवे, कर जोड़ी अतिरंगे हो॥ १३

एह सुपन भला तुम लह्या, होस्ये पुत्र रतन हो।
देव वल्लभ जे होस्ये, तेहनो करजो जतन हो॥ १४

तेह सुपन फल सुणी भलो, राणी हर्षित थाय हो।
निज मंदिर राणी आय के, हरखे जिन गुण गाय हो॥ १५

ढाल इग्यारमी ए भली, चउद सुपन ते अनूप हो।
लही अचिरा हरखे घणो, नमे दया शांति भूप हो॥ १६



(ढाल १२ मी)

(सयल जिणेसर प्रणमु पाय, सरसती सामिणी द्यो मोरी माय-ए देशी)

हिवे कहूं शांति तणा भव बार, ते सुणज्यो सहू भवी करी प्यार।
ते भव कुण २ ते दाखवुं, नव २ नाम करी भाखवुं॥

पहिले भव श्रीषेण नरिंद,
भोगवी राज्य तिहां थी

हिवे भव दूजो कहीये विचार, उत्तर कुरु जुगल अवतार ।
जुगल क्षेत्र से चवीया वली, उपजे ते भव कहे केवली ॥ ३

हिवे त्रीजे भव सौधर्म देवता, सुरराणी ना मनमोहता ।
भोगवी सुर सुख तिहांथी चवी, उपजे सो सुणजो हिवै सही ॥ ४

चौथे भव विद्याधर भला, अमिततेज नामै निर्मला ।
भोगवी विद्याधर भव सार, वली उपजै ते कहिये विंचार ॥ ५

पांचमे भव लहिये शुभ थान, दशमे देवलोकै देव विमान ।
सुर सुख भोगविया वली तेह, उपजे सो सुणजो सस्नेह ॥ ६

छठे भवे वासुदेव पद लह्यो, वासुदेव पद भोगे रह्यो ।
सुख भोगवी वासुदेव तणा, भव आगे होस्ये ते भणा ॥ ७

सातमे अच्युत देव विमान, भोगवे सुर सुख जिहां देवस्थान ।
अच्युत इंद्र आयु पूरण करी, हिवे वली भव लहै सो परी ॥ ८

चक्रवर्ती आठमे भवे थाय, चक्रवर्तीनी रिद्धि ज पाय ।
साधी षट् खंड ने वली चवी, हिवे वली भव सुणीये ते वली नवी ॥ ९

नवमे नवम ग्रैवेयके थया, भव पामी अनंत सुख थया ।
नवमे ग्रैवेयक सुर सुख भोगवी, चवी तिहांथी ते जोगवी ॥ १०

हिवे दशमे भवे मेघरथ राय, जीव दया वली तिहां वरताय ।
पारेवो उगार्यो सही, ते भव मांहे सही कही ॥ ११

मेघरथ जीव चवी तेह ताम, पायो सर्वार्थ सिद्ध धाम ।
चवी तिहांथी ते देवता, सुख सर्वारथ ना सेवता ॥ १२

सर्वारथ थी जीव आवीयो, बारमो भव हिवे शुभ पामीयो।
विश्व सेन कुले अवतार, **अचिरा** कुले उपजो सार॥ १३

उत्तम जीव आवी अवतर्यो, तव उत्तम सुपनानो जिणे फल वर्यो।
मई सुभ ओही तिहुं नाण संजुत, उपज्यो जीव भलो समय हुंत॥ १४

हिवे गर्भे रहिया जिन राय, अचिरा माता बहु सुख पाय।
रोग शोगनो दीधो अंत, देश नगर पुर मां भई शांति॥ १५

एकादश भव करी तिहां आय, च्यवन भाद्रव विदि सप्तमी पाय।
हिवे सुणजो सहु जन मुनि भाय, शांति प्रभुना शुभ गुण ठाय॥ १६

ढ़ाल बारमी एह विचार, बारह भव एह शान्तिना धार।
दया रुचि गावे गुण सार, शांति प्रभुना ते श्री कार॥ १७

(ढाल १३ मी)

(बंगाली राग में)

हिवे अचिरा देवी प्रसव्यो बाल, जेष्ट विदि तेरस दिन भाल।
दासी वधाई देवे दौड़, राजा सन्मुख कहे कर जोड़॥ १

दासी पणो ते कियो दूर, द्रव्य बहुत भर पूर।
छप्पन दिग्कुमरी मिल आय, सूतिक कार्य करे ते धाय॥ २

इहवे सौधर्म आसन कंपाय, अवधि प्रभुजी तिण सुर राय।
जिन जननी कूं अवस्वापिनी देई, इंद्रे करपुट प्रभुजीने लेई॥ ३

स्वर्ग नंदीश्वर प्रभु लेई आय, करे अट्ठाई महोत्सव सुर राय।
फिरसे प्रभु ने सहु सुर राय, जिन जननी नें सोंपे धाय॥ ४

जन्म उत्सव करी सहु सुर तेह, निज थानिक पहुंच्या सुर जेह।
हिवे विश्वसेन राय ओच्छव संडाय, वड़ी भूआ सुत नाम ठराय॥ ५

नाम ठव्यो वली शांति जिणंद, जुग २ जीवो पुत्र आणंद।
रवि निरखावी छट्ठी करे कुटंब सहु राजानो तेर॥ ६

कुटुम्ब सहूने संतोष्यो राय, भूषण वस्त्र सहूने पहेराय।
कुटुम्ब सहु सन्मान करी, घर पहोंचाव्या आदर करी॥ ७

हिवे दिन २ प्रते वधतो बाल, दीसे शांति कुमार सुकुमाल।
पाणिग्रहण अनुक्रमे जे कर्या, शुभ राजानी पुत्री वर्या॥ ८

अंतेउर सहु में अधिकार, नामे यशोमती राणी सार।
प्रभु विलसे तिण संग सुख भोग, सहु मिलिया मनवांछित भोग॥ ९

विश्वसेन देई शांति ने राज, सारे सहु शुभ मति सुकाज।
एहवे विश्वसेन पाम्या परलोक, सनतकुमारे भया त्रीजे देव लोक॥ १०

राणी अचिरा पिण वली तेह, ते पिण तीजे सुर लोके सही।
हिवे शांति प्रभु राजपद भोगवे, देव वरे सुख ते जोगवे॥ ११

हिवे सर्वारथ सिद्ध सुं चवी, देव पदवी जीव तिण भोगवी।
उपज्या यशोमती कूंखे आय, चक्र स्वप्न देखी सुख पाय॥ १२

प्रसव्यो यशोमती पुत्र रत्न, चक्रायुध जसु नाम उत्पन्न।
राजा शांतिने पुत्र सुकुमाल, दिन २ वधतो ते हीज बाल॥ १३

चउद रत्न हिवे उपजे सार, सुणज्यो सहु ते हिवे निरधार।
आयुध शाला में चार रत्न, चक्र असि छत्र, दंड उत्पन्न॥ १४

लक्ष्मीवर चार(त्रण)उपजे सोय, मणी कागिणी चर्म निधि वली जोय।
स्वनगरे चार रत्न उपजे, तेहना नाम हिवे निपजे ॥ १५

पुरोहित अने वली वर्द्धकी जेह, सेनापती गाथापती फिर तेह।
स्त्री रत्न राजकुले नीपजे, गज अश्व ए वैताढ्ये संपजे ॥ १६

चवदह रत्न पाम्या श्रीशान्ति, साध्या षट खंड लही यश संत।
चक्रवर्ती पद भोगवी सार, रिद्धि चक्रवर्त्तीनी बहोली धार ॥ १७

ढाल तेरमी ए थइ सुखकार, शांति चक्रवर्त्ती नो अधिकार।
धन २ एह प्रभु शांति जिणंद, वंदे दया रुचि मन आणंद ॥ १८

ढाल १४ मी
(गरबी चाल में)

साहिबा ! राजा कहे श्रीशांति कै लोकांतिक भणी रे लो।
लेवा संयम भार कै, एही दिल वणी रे लो।
कुंवर पदे पचवीश कै, सामान्ये भोगव्यां रे लो।
वर्ष पचीस सहस कै, चक्रवर्ती मां भया रे लो ॥ १

वर्ष पचीस सहस्र कै, चक्रवर्ती मां भया रे लो।
चक्रायुध नै राज्य कै, काज समर्पिया रे लो।
दै प्रभु वरसी दान कै, हिये में हरखशुं रे लो।
तजी प्रभु राज्य से मोह कै, सिद्ध भजे भावसुं रे लो ॥ २

देश नगर पुर रिद्ध को, तजे ए भावना रे लो।
एहवे कंप्या आसन कै, देव सौधर्मना रे लो।

अवधि प्रयुंजी देव कै, जोयुं देवता रे लो।
श्री जिन दिक्खा अवसर कै, जाणी भावता रे लो॥ ३

सर्वारथ शिविका सार कै, लेइ सुर तुरत शुं रे लो।
मन जिम गति करी पूर कै, चंचल चित्त सुं रे लो।
आवी चौसठ इंद कै, प्रभु दीक्षा अवसरै रे लो।
सर्वारथ ले शिविका कै, प्रभु सन्मुख धरे रे लो॥ ४

ओच्छव सव सहु मंडाण कै, करे दिख्या अवसरे रे लो।
सहस राजा प्रभु संग कै, संयम मन धरे रे लो।
व्रत लेवाने काज कै, प्रभु संगे भया रे लो।
पुर हत्थिणाउर वहार कै, सहसावने आवीया रे लो॥ ५

अलंकार करी दूर कै, व्रत मन भावीया रे लो।
पंच मुठिया लोच कै, करी प्रभु तेहवै रे लौ।
सुर गोदे धरी वाल कै, अति वहु नेहसुं रे लौ।
पंच(चउ)महाव्रत धार कै, प्रभु छठ तप करै रे लौ॥ ६

मनःपर्यव ज ज्ञान कै, उपन्यो तेहवै रे लौ।
महोच्छव करी सहु देव कै, नंदीश्वर आवीया रे लौ।
अट्ठाई महोत्सव व्यांह कै, करी दिल भावीया रे लौ।
निज २ ठामे देव कै, पोहता ते जइ रे लौ॥ ७

सहस मुनीश्वर संग कै, प्रभु वन संचरै रे लौ।
करता उग्र विहार कै, हलवै पाय धरै रे लौ।
जीवादिक नै कोय कै, दुख नहीं उपये रे लौ।
षट काया प्रतिपाल कै, दिन २ चितवै रे लौ॥

सुमित्र गृह प्रभु आय कै, खीर पारणुं करे रे लो।
प्रभु छद्मस्थ अवस्था कै, अट(वार)मास भोगवी रे लो।
विचरंता प्रभु आय कै, सहसाम्रन गजपुरे रे लो।
उपज्यो केवल नाण कै, सुर ओच्छव करे रे लो॥ ९

लोका लोक प्रकाश कै, भासक प्रभु थया रे लो।
जीवादिक ना मनोगत कै, भाव सहु पावीया रे लो।
सोवन पंकज प्रभुजी कै, चरण ने ठावता रे लो।
अष्ट प्रतिहारी देव कै, रहे प्रभु सेव में रे लो॥ १०

समवसरण त्रिगड़ा नी, रचना सुर करै रे लो।
जिहां प्रभु वेसी आय कै, वाणी उचरै रे लो।
एहवै चक्रायुध राज कै, वंदन आवता रे लो।
हरखे करी बहु साज कै, मनमें भावता रे लो॥ ११

वंदे प्रभुना पाय कै, अति बहु रागस्युं रे लो।
कहे मुखस्युं वली एम कै, दरसण पुण्यस्युं रे लो।
बैसी वेसण ठाम कै, वाणी ते सुणे रे लो।
च्यारु दिसा वली वदन कै, वाणी उचरै रे लो॥ १२

सुणी वाणी चक्रायुध कै, प्रति बोध पामीया रे लो।
वंदी प्रभुना पाय कै, घर भणी आवीया रे लो।
पुत्र ने थापी राज्य कै, आप संयम लही रे लो।
शांति प्रभु नो गणधर, मूल चक्रायुध सही रे लो॥ १३

हिवै श्री शांति जिणंद कै, अवस्था पूरीया रे लौ।
लेई चक्रायुध ने साथ कै, गणधर भावीया रे लौ।
अनुक्रमे करत विहार कै, ग्राम नगर पुरे रे लौ।
आवे अति मन हर्ष कै, **समेत गिरि** पर सिरै रे लौ॥ १४

चउदमी ढाले एह कै, संयम शांतिनु रे लौ।
वली केवल नो भाव कै, छे एह मां भलो रे लौ।
वली **चक्रायुध** संयम, गणधर पद वर्युं रे लौ।
प्रणमै प्रभुना पाप कै **दया रुचि** रंगसुं रे लौ॥ १५



ढाल १५ मी

(हिवैं श्रीपाल कुमार, विधि पूर्वक मंजन करैंजी ए देशी)

(१४) प्रभास गिरि टूंक :–

हिवे श्री **शांति जिणंद, समेत शिखर** गिरि पर चढ्याजी।
नवसौ मुनिवर संगे तप करी कर्मों निर्जयाजी।
कर्म करी चक चूर, प्रभु संगे शिव पद वर्या जी।
टूंक **प्रभासै** आय, शिव चढवा प्रभु जग धर्या यी॥ १

प्रभु जग गुरु जिनराज, जग लोचन त्रिज गना धणी जी।
जग दीपक जगनाथ, सेव करे सुर इम तणी जी।
जग तारण जग प्रति पाल, कर्म अरि दल इम हणी जी।
जग जीवन जग दयाल, सांचो प्रभु तुं बहु गुणी जी॥ २

गिरि प्रभासे आय, पद्मासन प्रभु धारीयो।
ध्यान समाधि लगाय, निर्वाण टूंके विचारियो जी।
मोक्ष तप प्रभु धार, तीस दिवस तप सारीयो जी।
आय नमे सुर पाय,, भाव अधिक सुर सारीयो जी॥ ३

जेष्ठ विदी शुभ पक्ष, निर्वाण तेरस दिन कियो जी।
शांति जिणंद दयाल, अबाधा रहित शिण थियो जी।
नवसो मुनि पण संग, ते सहूने शिव पद दीयो जी।
उत्तम पायो ठाम, जिहां प्रभु जुगा जुग चिर जीवो जी॥ ४

लाख वर्ष प्रभु आप, कंचन काया प्रभु तणी जी।
चार सौ धनुष प्रमाण, काया प्रभुनी शुभ बणी जी।
चक्रवर्ती प्रभु शांति, त्रिहुं जगनायक ते धणी जी।
लायक नायक देव, मृग लंछन प्रभु पद भणी जी॥ ५

शांति प्रभु सुविलास, गिरि प्रभास तीरथ कियो जी।
ए समेत शिखर गिरिसार, ते तीरथ चित भावीयो जी।
जिहां प्रभु लही निर्वाण, सुरपति सहु मिल सेवीयो जी।
फिर भवि जन उपगार, भव उद्धरया गिरि कियो जी॥ ६

एह पंदरमी ढाल, शांति प्रभु गुण वर्णव्या जी।
कल्याणक पंच जाण, शांति प्रभुना ते स्तव्या जी।
सुगन भविक सुख थाय, ए रास भलो रचीयामणो जी।
गायो दया रुचि नेह, आगे उदार बलो भवी सुणो जी॥ ७

*

ढाल १६ मी

(कराहा चाल उतावलै, पगडै आई गण गोर जी
मेडतिया भमर जो ए करहलो–ए देशी)

चौदमो उद्धार :–

हिवैं श्री शांति जिणंदनो, प्रथम ज एह उद्धार जी
समकितीया भविक ! गिरि सेवीये-निरमल चित्तकर प्यार जी।
एही ज भरत में सोहतो, देश विरंच उदार जी॥ १

मित्र पुर नामा नयर नौ, सुदर्शन राय सुखकार जी।
जिन धर्मी दृढ़ जीवड़ो, दानी गुण है अपार जी॥ २

जिन पूजा नित प्रति करे, द्रव्य भाव दोय भेद जी।
पर्व तिथै पोसह करे, न धरे अंग उन्माद जी॥ ३

साधु भक्ति वहु करे, जिनधर्मी सु नेह जी।
जिन शासन उन्नति करे, धर्म ध्यान में देह जी॥ ४

मित्रपुर नगर ने परिसरे, मनोहर वन वृक्ष भार जी।
जतु(उप)वन जिन चैत्य एक छै, सुमति नाथ जिन सार जी॥ ५

राय पिता ए करावियो, उंचो जिम आसमान जी।
वावन देहरै सोहतो, जेसौ देव विमान जी॥ ६

प्रभुनो पर्चो नगर में, तुंवरु जक्ष प्रत्यक्ष जी।
देवी महाकाली यक्षिणी, अद्भुत रूपे प्रत्यक्ष जी॥ ७

राय सुदर्शन एहवै, पूजे सुमति जिणंद जी।
नित्य प्रतै सेवा करै, दिन २ प्रति आणंद जी॥ ८

सुमतिनाथ जिन सेवतो, ध्यातो जिन गुण माल जी।
सुमति पूज्या सुमति मिले, उपजे बुद्धि विशाल जी॥ ९

एक दिवस मनोहर वने, आव्या मुनि परिवार जी।
चक्रायुध गणधर सिरै, काउसग्ग तिण वन धार जी॥ १०

मित्रपुर नगर नो राजीयो, राजा सुदर्शन जेह जी।
जाण्युं मुनिवर आवीया, भक्ति करै वली तेह जी॥ ११

पाट संथारा मोकलै, साधु वैयावच सारे जी।
हिवै वंदन मुनिवर भणी, आवे राय असवारे जी॥ १२

वन आवी मुनि वांदिया, वेसे वेसण ठाम जी।
मुनि चक्रायुध तिण समै, देवे देशना ताम जी॥ १३

श्रीजिन वाणी प्राणीया, धारो चित मझार जी।
तीरथ भक्ति अमोल छे, करी लहे शिव सुख सार जी॥ १४

तीरथ समेत शिखर गिरि, जिहां जिनना निर्वाण जी।
मुक्ति लही जिण तीरथै, साधु संख्यात प्रमाण जी॥ १५

सो तीरथनी भक्तिये, लहस्ये अर्हभव सार जी।
ए देशना मुनिवर भणी, श्री जिन वाणी आधार जी॥ १६

सुणी राजा मन हरखियो, धन्य मुनि अवतार जी।
आप तरे पर तारवै, ए मुनि नो आचार जी॥ १७

मुनि नमी राय घर आवीयो, मुनि पिण करे य विहार जी।
राजा समेत गिरि वर भणी, करवा जात्र विचार जी॥ १८

संघ चतुर्विध मिलीयो, करवा जात्र उदार जी।
राजा समेत गिरि वर भणी, करे प्रयाण विचार जी॥ १९

अनुक्रमे समेत शिखर जई, वांद्या जिन निर्वाण जी।
जय २ तीरथ नी करी, डोली (!) मुख एह वाणी जी॥ २०

राय सुदर्शन जी हिवे, चउद गिरि ना उद्धार जी।
मन शुद्धे मोटे मने, खर्चे द्रव्य अपार जी॥ २१

ए उद्धार भयो चउदमो, राय सुदर्शन हाथे जी।
करी उद्धार जिण यश लह्यो, लेवा शिव पद साथ जी॥ २२

जात्रा करी घर पहोचीया, वहोली करे संघ भक्ति जी।
दस वैयावच्च राजी सुं, करी लही जस जुक्त जी॥ २३

प्रथम उद्धार गिरि प्रभासनो, राय सुदर्शने सार्यो जी।
ए अधिकार शिखर महातममें, कह्युं गणधरनुं विचार्युं जी॥ २४

प्रभास गिरि महिमा :—

हिवें टूंक प्रभास के उपरे, केता मुनि संख्या कीद्ध जी।
सो हिवें भवी सहू सांभलो, जिहां मुनि सिव लद्ध जी॥ २५

नव कोड़ा कोडी नव लख, नव सहस नव शत जाण जी।
वली निन्नाणवें अधिक सुं, मुक्ति वरी शुभ ठाण जी॥ २६

टूंक प्रभासे ते भेटता, फल केता है वखाण जी।
कोडी पौषध तव जे करै, भेटचा फल निर्वाण जी॥ २७

समेत शिखर गिरि भेटता, फल अनंता अनंत जी।
तिण कारण भवी भेटिये, पामे मुक्ति महंत जी॥ २८

ए प्रभु शांति जिणंदनो, कह्यो चउदमो उद्धार।
श्री गुरु रूप प्रभाव सुं, गावे दया रुचि सार जी॥ २९

ढाल १७मी

(वंश थकी ते उतरी रे, तेडी एकांते तात घन नर व्हाला-ए देशी)

(१५) ज्ञानधर टूंक :-

कुंथु जिनेसर साहिबा रे, आव्या है समेत गिरिंद।
गिरि गुणवंता
चालो २ हो भविक गिरि एही, समेत शिखर गिरि राज।
समेत शिखर गिरि सेहरोजी लही निर्वाण जिणंद॥ १

सूर राजा हुलामणो रे, ए गिरिनो ए स्वाम।
समेत शिखर पर सोहीयो रे, मोह्यो गिरि टूंक विसराम॥ २

ज्ञानधर गिरि ऊपरे, पद्मासन प्रभु लीध।
तीस पोषध करी ए गिरि रे, जिहां प्रभु मोक्ष तप कीद्ध॥ ३

दूजो चक्री ए जिणवरू रे, जिण लही जिहां सिव थान।
वैसाख कृष्ण पक्ष ए गिरि रे, प्रभु एकम लह्यो थान॥ ४

मुक्ति पंथ जिण आदर्यो, ए गिरि उत्तम किद्ध।
वली मुनि श्री जिन संग रे, थया सहस एक सिद्ध॥ ५

ज्ञानधर गिरि तीरथ कीयो रे, श्री कुंथु जिन भाण।
आयु श्री जिन भोगवी रे, सहस पंचाणु वर्ष जाण॥ ६

पैंतीस धनुष नी देहडी रे, काया कंचन वान।
नगर हस्थिणा पुर नो धणी रे, कुंथुनाथ भगवान्॥ ७

छाग लंछन चरणें भलं रे, प्रभु लही एहीज चिन्ह ।
पंचमज्ञान प्रभुजी लही रे, भासक लोकालोक मन्न ॥ ८

श्री जिन कुंथुनाथनुं रे, निर्वाण ज्ञानधर टूंक ।
जिहां प्रभुजी मुक्ति वरी रे, चार कषाय ने मूक ॥ ९

ंदरमो उद्धार :—

हिवे कुंथु जिन टूंकनो रे, कर्यो केणे उद्धार ।
वच्छ देश मांही भलं रे, पुर शालिभद्र आधार ॥ १०

श्री देवधर जिहां राजवी रे, रूप कला गुण सार ।
जेहनी मति जिन धर्मसुं रे, पाले शुद्ध आचार ॥ ११

राय सुण्यो शास्त्रे भलो रे, तीरथ उद्धार अनूप ।
मन चिंते अतिरागसुं रे, जे उद्धार ने भूप ॥ १२

जिहां जिन मुक्ति भूमिका रे, जिहां जइ करीय उद्धार ।
चार प्रकारे ते करी रे, संघ वहोत विस्तार ॥ १३

अनुक्रमे समेत शिखर लह्युं रे, चढया शिखर गिरि सार ।
निर्वाण पनर प्रभुना भला रे, वंदे भूप करी प्यार ॥ १४

पनर टूंक ना जिणे कर्या रे, उज्ज्वल पनरे उद्धार ।
राख्यो जिण जगमां भलूं रे, ओपम कीरत सार ॥ १५

जात्रा करी घर संचरे रे, सुख से आवे धाम ।
संघ जिमावी यश लह्यं रे, सकल कर्युं धर्म काम ॥ १६

ज्ञानधर गिरि महिमा :-

हिवें ज्ञानधर ट्रूके भला रे केता मुनि गया मुक्त।
छिण्णु कोड़ी कोड़ी मुनि रे, वली छिण्णु क्रोड़नी मुक्त ॥ १७
लाख बतीस सहस छिन्नवेंरे, सात सौ छ्यालिस जाण।
एता मुनि मुगते गया रे, तेहज ट्रूक वखाण ॥ १८
ज्ञानधर गिरि भेटता रे, फल केतों होवे जेह।
एक कोड़ी उपवासनूं रे, ते तो लहे फल तेह ॥ १९
टूंक सहुने भेटता रे, फल लहे अधिक अपार।
भवि भेटो ए गिरि भणी रे, लहो सुख अविचल सार ॥ २०

(१६) नाटिक गिरि :-

हिवें सोलमा उद्धारनुं रे, कहस्युं शुद्ध संबंध।
शास्त्रे आख्युं ते सहू रे, छे सहू यामे सम्बंध ॥ २१
एह समेत शिखर गिरे रे, आया श्री अर जिन राज।
निरखी टूंक नाटिक गिरि रे, चढे शिखर गिरि पाज ॥ २२
सहस एक मुनि साथ में रे, लेवा शिवपुर वार।
प्रभु पद्मासन तिहां कर्यु रे, जोड़वा अनुभव सार ॥ २३
करी मोक्ष तप एक मासनुं रे, दृढ़ मन धरीय आनंद।
सहस चौरासी वर्षनुं रे, आयु स्थिति है जिणंद ॥ २४
मगसर सुदी दशमी दिने रे, नाटक गिरि निर्वाण।
सुरपति मिल सहू हर्षसुं रे, कर्यो ओछव निर्वाण ॥ २५

एक सहस मुनि अणसणी रे, जिन संगे शिव लिद्ध ।
नाटिक गिरि तीरथ कर्यु रे, स्थानिक भयो ते सिद्ध ॥ २६

सोलमो उद्धार :—

हिंवे तेह टूंक उद्धारने रे, कुण नरपतिय कराय ।
भद्रपुर नामा नयर नो रे, आनंद सेन नर राय ॥ २७
समकित तत्व विचारनो रे, जाण भलो सिद्धांत ।
जिन भक्ति हृदय वसे रे, सदा जिन पूजन खांत ॥ २८
भद्रपुर ने वाहिरे रे, एक पर्वत आयाम ।
जस पर सोहे देहरो रे, बावन चैत्यनुं धाम ॥ २९
मूरति शांति जिणंद नी रे, मूल गंभारे देव ।
और बावन जिन चहुं दिसे रे, सेवे सुर वहु सेव ॥ ३०
पूजे शांति जिणंदने रे, आणंद सेन ते राय ।
एक दिवस प्रभु पूजतां रे, सुणी मंदिर आवाज ॥ ३१
कहे गरुड यक्ष राय ने रे, सुण राजन ! एक वात ।
समेत शिखर गिरि भेटिये रे, ते तीरथ विख्यात ॥ ३२
जिहां निर्वाण छे जिन तणा रे, तिहां जई करो उद्धार ।
श्री अरनाथनी टूंकनो रे, तेहनो प्रथम उद्धार ॥ ३३
सुणी राजा हरख्यो घणो रे, जिहां करवी गिरि जात ।
संघ करी गिरि(ए) सामटो रे, ध्वज पताक कहराय ॥ ३४
अनुक्रमे समेत शिखर गिरे रे, चढीया जे गिरि पाज ।
वंद्या गिरि भावे करी रे, सफल थयो दिन आज ॥ ३५

[अनंत] अर प्रभु जिन ट्रूंकनू रे, प्रथम करी उद्धार ।
वली प्रभु पनरह ट्रूंकनो रे, सफल थयो दिन आज ॥ ३६

तीरथ भक्ति करी भली रे, वोलता मुख जय वाच ।
स्व नगरी राय आवीया रे, भयो अधिक उल्लास ॥ ३७

स्व नगरी गिरि वांदीयो रे, पूज्या शांति जिणंद ।
अधिष्ठायक जिहां पूजीया रे, वहु मन में आणंद ॥ ३८

वली करे भक्ति संघनी रे, हरख्या सहु नर नार ।
धन २ राजन! ताहरो रे, सफल भलो अवतार ॥ ३९

नाटिका गिरि महिमा :-

हिवे नाटिक गिरिये भला रे, केता मुनि अरु सिद्ध ।
कोड निन्याणु लाख निन्नाणवे रे, सहिस निनांणु लिद्ध ॥ ४०

नव सौ निनाणु उपरे रे, एता मुनि संघ कीध ।
ट्रूंक भेटयानुं फल केतलूं रे, कोड छिन्नवे पोषध लीध ॥ ४१

एहज सोलमा उद्धारनी रे, ढाल सतरमी एह ।
दया रुचि मन रंग सुं रे, गावे समेत गिरि नेह ॥ ४२

(ढाल १८ मी)

(मुनिवर आर्य सुहस्ती रे. किण हिक अवसरे ॥ ए देशी)

(१७) सबल गिरि ट्रूंक :-

मल्ली जिणेश्वर स्वाम रे, एक दिन गिरि वाट रे ।
विचरता प्रभु आवीयाए, चढिया शिखर गिरि वाट रे ।

ऊंची भूमिका, ते प्रभु ठाम सुहावीया ए।
देखी पर्वत ट्रूंक रे, निरखी एक गिरी।
निरखी अधिक मन भावीया ए, पांच सौ मुनि प्रभु संग रे।
संयम पालता, मुनिवर गुण में मोहीया ए॥
निरखी सबल गिरि तेह रे, ध्याना वसि रे।
प्रभु जिहां पद्मासन ठायो ए, वली तप करे जिहां मोक्ष रे।
तीस उपवास नो, शुभ परिणामे तप कियो ए।
सहस पंचावन तेह रे, वर्ष वखाणिया।
आयु संख्या ए थयो ए, करी पूरण स्थिति आय रे।
अबाधारहित सही, पद अनुभव प्रभुजी लीयो ए॥
पांच सौ मुनि संयुक्त रे, प्रभुजी सम भया।
ज्योते ज्योत समावीयाए, सुख अनंतानंत रे।
अजर अखय पदे, सिद्धे सिद्धे जमावीयाए।
जिहां कोई सुं न जवाय रे, किस विध जे लहै।
जो लहे तप जिण धारियाए, एहवो अनुभव जेह रे।
तेह ज नर लहे, संयम तप लेई पावीयाए॥
ए थयो प्रभु निर्वाण रे, हिवै उद्धार नु।
कुण राजाए? करावीयोए? कुण पुर? कुण राजेसरे?।
कुण देशे भया?, ते कहेवा मन आवीया ए?।
देस कुलिंग मझार रे, नगर श्रीपुर भलो।
जिहां अमर देवराजीयो ए, अमर सेना घर नार रे।
रूपे रंभा सी, शील गुण अंगे छाईयोए॥

अमरदेव राजेश रे, दृढ जिन धर्म में।
कदा न चित्त विचले नहीं ए, धर्म ध्यान में जेह रे।
दिन ते निगमे, पोसह सामायक लै सहीए।
देव गुरु ने धर्म रै, तीन ए तत्व नै।
नित संभारै तै कहीए, दोषी दुशमन कोय रे।
नहिं को सिर परैं, वखत वली राजा सहीए॥ ५

एक दिवस राजानेरे, रय वाड़ी सही।
उपवन रमवा संचर्यो ए, साथे वहु परिवार रे।
हय गय रथ भला, सुभट सामेलै परिवर्यो ए।
निरखी तजे वन मांहि रे, मुनि एक पेखियो।
उपसम विवेक संवर भर्योए, मुनि नमवाने काज रे।
राजा तेहवै, अश्वारूढ से उतर्यो ए॥ ६

नमी मुनि नरपति तेह रे, वैसे आगली।
मुनि थे देशना धर्मनी ए, अष्ट कर्मनी जेह रे।
प्रकृति जे कही, एक सौ अठावन कर्मनी ए।
ते संसारी जीव रे, तेहने रहे घेरी।
प्रकृति तेहिज कर्मनी ए, वली जे प्रकृति एह रे।
किम दूरे होवे, जो करे भक्ति तीर्थनी ए॥ ७

जिन निर्वाण विशेष रे, जिहाँ २ जे होवे।
तिहाँ २ जइ जात्रा करे ए, वली करे तीर्थ उद्धार रे।
भावे सुधर्म ने, तेहने कर्म तै स्युं करे ए?।

अमर देव राजानेरे, कहे वली गुरु भणी।
कहो मुझ तीरथ सहु सिरे ए, समेत शिखर गिरि ए करे।
सहु तीरथ सिरै, सतर प्रभु वली ते सिरे ए॥ ८

अमर देव सुणी एह रै, वाणी गुरु मुखे।
धन्य मुनि मारिंग भला ए, वांदी गुरुना पाय रे।
राजा हर्ष सूं, घरे आवी संपद मिलाए।
देश नगर पुर गाम रे, आपणा जे हुंता।
त्यां २ कंकोतरीसुं चल्यो ए, ठाम २ नो संघ रे।
मिल २ थोक सुं, सहु आवी संघे मिलीए॥ ९

अमरदेव राजानेरे, वहु नर वर लेई।
आवी शिखर गिरि उच्छवे ए, तिहां सहु थाक उतार रे।
फिर शिखरे चढ्या, सतर ट्रंक चित्त चिंतवै ए।
सत्तर प्रभु निर्वाण रे, पूजन मन कर्यु।
अष्ट प्रकारी पूजवै ए, फिर सतर करे उद्धार रे।
जूजूआ ट्रंक ना, विधिसुं ते सहू साचवैए॥ १०

समेत शिखर गिरि पूज रे, घर भणी चालीया।
सबल सजाई आवताए, श्रीपुर नगर पहुंच रे।
जय २ विस्तर्या, मन ना मनोरथ भावताए।
प्रथम पूजी जिन राज रे, संघ भक्ति करे।
साहामी सहु मिल हरखताए, देवे दान अपार रे।
जाचक ने वहु, जाचिक वहु गुण गावतारे॥ ११

गृह आवी राजानेरे, जग में यश लियो।
मनना मनोरथ सहु फल्या ए, सबल गिरि परताप रे।

सबल गिरि महिमा :—

केता मुनिवरु, केता मुनि मुगते मिला ए।
मुनि मिलि छिन्नु कोडि रे, शिव पद जिण वरी।
सिद्ध में सिद्ध जइ मिल्या ए, सबल गिरि नी जात्र रे।
करता फल कैतो, कोडी उपवासनुं फल मिल्या ए॥ १२

(१८) निर्जर गिरि टूंक :—

भविजन भेटो ते हरे, समेत शिखर गिरि।
फल अनन्तो पामीये ए, हिवै ते निर्जर टूंक रे।
मुनि सुव्रत वली, सहस एक मुनि संग लींये ए।
मुनि सुव्रत जिन राज रे, निर्जर गिरि परे।
पद्मासन प्रभु धारीयो ए, तीस करी उपवास रे।
जेष्ट विदि नवमी, मुक्ति भली प्रभुजी लीये ए॥ १३

अढारमो उद्धार :—

निर्जर टूंक उद्धार रे, कर्यो किण नरपति।
सो कहस्युं ते सहु सुणो ए, कोशल देश मझार रे।
रत्न पुरी नगरी, सोमदेव राय तेह भणो ए।
तेण कर्यो उद्धार रे, टूंक अढार नो।
नाम भलं छे तेह तणुं ए, निर्जर टूंके जेह रे।
मुनिवर केतला, ते कहुं सो भवि सुणो ए॥ १४

निर्जर गिरि महिमा :–

निन्याणवे कोड़ा कोड रे, कोड सत्याणवे।
ऊपर नव लख बोलीया ए, नव सौ निन्याणु फेर रे।
ए साथे वली, मुक्ति सहु मुनि मिल लीया ए।
कोड उपवास फल जेह रे, निर्जर टूंक भेटचा।
अनंत फल सब टूंक गया ए, तेणे शिखर गिरि जेह रे।
तीरथ भूमिका, भेटवा सहु ना मन थया ए॥ १५

(१९) मित्रधर टूंक :–

मित्र धर टूंक विख्यात रे, जिहां नमि जिन राया।
आया गिरि उगणीसमे ए, चढी तीरथ मन रंग रे।
सिरे शिखर गिरि, सहस मुनिवर संगमें ए।
पद्मासन निरधार रे, आसन प्रभु ठयो।
लेवा अनुभव उजमे ए, मोक्ष तप करी भावे रे।
तीस उपवास नूं, तप करे प्रभुजी उमंग में ए॥ १६
विदि वैशाखे मास रे, दसमी जिन भलो।
करी निर्वाण शिव पद वरीए, हिवे होस्ये उद्धार रे।

ओगणीशमो उद्धार :–

मित्रधर गिरि परे, करस्यै राज ते फिरिये।
जोध देशमें जेह, श्रीपुर है भलुं।
राजा जिहां मेघदत्त वरीए, रीध तणो विस्तार रे।
केतो आखवुं ?, भावुं तिम जै सुर पुरीए॥ १७

मेघ दत्त राजिंदरे, बहु जिन धर्म में।
तीरथ जेहने दिल वस्यो ए, समेत शिखर गिरि तेह रे।
जात्रा मन थयो, संघ करी मन उल्लस्योए।
आव्यो शिखर गिरिंद रे, भेटी टूंको नें।
टूंक ओगणीस नें उद्धारवा ए, अति धरी मन उछाह रे।
भेटी रंग शुं, मनह मनोरथ सहु सर्या रे॥ १८
करी शिखर उद्धार रे, नाम जिणे कर्युं।
करी उन्नति निर्वाणनी ए, घर आव्या मन भाय रे।
संघ जीमाविया, यश जग मांहे बहु वर्नीए।

मित्रधर गिरि महिमा :–

हिवे मित्रधर टूंक रे, मुनि मुगते गया।
ते बहु सुणजो सहु मुनी ए, जिहां मुनि कोड़ा कोड रे।
लक्ष पैंतालीस, सात सहस वली ते मुनि ए॥ १९
नव सौ फिर मुनि सहस रे, बैंयालीस वली।
एता मुनि मुक्ति लही ए, एहज मित्रधर टूंक रे।
भेट्या फल केतो, कोड़ पौषध नो फल सही ए।
उगणीस टूंके उद्धार रे, ते वर्णव कर्या।
ढाल अढारमी मां कहीए, रुप रुचि गुरु राय रे।
तेहोना सीस नें, भाये समेत सिखर सही ए॥ २०

*

ढाल १९मी

(रामचंद्र के वाण चांपो मो लह्योरी—एहनी चालमें)

मनोहर पूर्व खंड, तेहमें देश भलोरी।
गंगा जहां जहां देख, तहां २ तीर्थ मिलारी।
गंगा तट एक देश, काशी य देश भलोरी।
जिहां एक नगर विशाल, वाणारस ही मिलोरी॥ १

राजा अश्व सेनह राय, राणी वामा भली री।
जाके रिद्ध भंडार, पूरा तेह भर्योरी।
हिवे प्राणत दशमें देवलोक, तिहांथी देव चवी री।
चैत विदि की चौथ, उपज्या तेह भवीरी॥ २

नवभव व्यतीत करेय, उपज्या ते अवतारी।
दशमे भव जिनराय, देवी वामा कूंख धारी।
वामादे स्वप्न लहंत, चउदह ते सुख कारी।
स्वप्न देखी तेह, चिंतवे ते इम नारी॥ ३

हरखित बहु हिय मांही, अश्व सेन पास जइरी।
कर संपुट करेय, चरणे स्वामी नमेरी।
अश्वसेन देइ सन्मान, बूझे तेह वकीरी।
स्यो कारण तुम भाव, वहो इम होय तीकीरी॥ ४

कहे राणी कर जोड़, स्वामी सुझ वचनारी।
स्वप्न चउद जे लहंत, फल केसो ते सुनारी।
कहे अश्वसेनह राय, सुन हो देवानुप्रियरी।
ए स्वप्न चउदह जेह, तेहना भाव सुनियरी॥ ५

उत्तम प्राणी होय, सुर वहु मान्य जिसोरी।
वहु नरपति तो इंद, सहु में पूज्य तिसोरी।
होस्ये पुत्र रत्न, तन सुकमाल तिसीरी।
ऐसा फल ते होय, वकता हीय वसीरी॥ ६
हिवें निज स्थान राणी आय, जिनगुण चित्त वसीरी।
राग रंग कर तेह, रजनी तेह गमीरी।
अनुक्रमे वधतो गर्भ, पूरा दिवस थयारी।
करी नव मास परिपूर्ण, दिवस सप्त भयारी॥ ७
विदि दशमी पोष मास, प्रसव्यो पुत्र भलोरी।
प्रभु जन्म कल्याणक दीह, सहुने हर्ष मिलोरी।
नील वर्ण तन खास, मणिमय पुत्र भयोरी।
अड दिग्कुमरी आय, सूतग दूर कीयोरी॥ ८
सुरपति सहु मिल आय, उच्छव जन्म तणोरी।
करी सहु भावे भक्ति, जय २ शब्द भणोरी।
जिन जननी नमी पाय, सुर सहु एक मनारी।
निज २ थानिक आप, वधे हिय हर्षत नारी॥ ९
हिवे अश्वसेन के पास, दासी दौड गइ री।
देवे वधाइ ताम, इम घर पुत्र भयोरी।
राय अश्वसेन हिय हर्ष, दासी पद दूर कियोरी।
दियो वहु धन माल, दासी हर्ष थइ री॥ १०
मात पिता ठवे नाम, सहु मिल एक मनारी।
पार्श्व कुमर सहु हेत, दियो प्रभु नाम तिनारी।

हिवे दिन प्रति वधत है बाल, सुख से काल गमेरी।
हसावे रमावे बाल, जननी तेह समेरी॥ ११
पास कुमर हिवे तेह, जोवन समय भयारी।
परणावे वहु भांत, राय कुमरी तसु नारी।
रूपे रंभ समान, नाम प्रभावती प्यारी।
बहोतर कला निधान, शुभ गुणसे बहुधारी॥ १२
एक दिन पास कुमार, गजवर स्कंध चढ़ीरी।
गंगा कांठे आय, कौतुक निरख रहीरी।
कमठ तापस है एक, पारस दृष्टी थयोरी।
पंचाग्नि तप ताप, बैठो ध्यान भयोरी॥ १३
निरखी पास कुमार, अज्ञान सुं ताप तपेरी।
जीव नी नहीं तुझ सार, केम ते धर्म थयेरी।
कहे जोगी किहाँ जीव, नयणे नांही मिलेरी।
अन्यथा केम कहाय, झूठ में कोन मिलेरी॥ १४
तब प्रभु पास कुमार, दिखावे तेहने बलीरी।
काष्ठे ज्वलत जुगल (सही) नाग, दिखावे पार्श्व भलीरी।
मंत्र दियो नवकार, धरणपति तेह थयोरी।
पद्मावती जस नार, सुर धरणिंद्र भयोरी॥ १५
कमठ विलख्यो लोक, तिहां थी कमठ चवीरी।
भयो मेघमाली देव, तेहज तिहां ही भवीरी।
पास प्रभु तेवार, अपने स्थान वसेरी।
सुखे ते पाले जुवराज, रंगे आप रसेरी॥ १६

मात पिता भए मोक्ष, महेंद्र देव भइरी।
चौथो तेह देव लोक, सुर सुख तेह लहीरी।
हिवे प्रभु **पास कुमार,** वर्ष पचीस भयारी।
राज्य भोगवी सुख लीध, सुख संसार कियारी॥ १७
हिवे **लोकांतिक** देव, आये ताम मिलीरी।
चिंतवे पास कुमार, लेवुं चारित्र भलीरी।
दे प्रभु वरसी दान, सुरपति आय मिलीरी।
श्री प्रभु **पास कुमार,** रस सहु त्यागे वली॥ १८
पोस वदि ज सार, **एकादशी** दिन चढतेरी।
लेवे **संयम** सार, मन पर्यव तेह हुवेरी।
त्रिणसो राजा संग, प्रभु संग व्रत लियोरी।
प्रथम छठ तप लेय, भूमिय विहार कियोरी॥ १९
धन नामा घर तेह, पारणुं तिहां ही करेरी।
खीर खांड घृत तांडुल, तेहीज आहार करेरी।
हिवे चैत्र विदि दिन चौथ, केवल लहीय भलोरी।
थया भासित लोका लोक, ज्ञान भइं ते निलीरे॥ २०
केवल वाणारसी पाय, गणधर दिग्(१०)ही भयारी।
मूल(शुभ) जे गणधर नाम, दिनकर प्रथम थयारी।
कमठ उपसर्ग सही तेह, तीरथ थाये सहीरी।
कलि कुंड कुकडे सर तेह, तीरथ जेह ठवीरी॥ २१
एकसो एकावन नाम, प्रभु निज नाम कह्यारी।
ठाम ठाम वली गाम २, नाम प्रसिद्ध थयारी।

हिवे प्रभु पास जिणंद, आयु स्थिति पूर्ण वलीरी ।
आव्या समेत गिरिंद, संगे तेत्रीस केवलीरी ॥ २२

(२०) सुवर्ण भद्र टूंक

चढिया शिखर गिरि पाज, मन शुद्ध सिद्ध सन्मुरी ।
आये सुवर्ण भद्र ट्रंक, जिहां तन ममता तज्युरी ।
तिहां काउसग्ग लही तेह, एक मास तप सज्युरी ।
मनस्युं धरत ते ध्यान, सिद्ध हुं पुर भज्युरी ॥ २३

माह श्रावण सुदी तेह, अष्टमी दिवस मर्युरी ।
जद तीन भुवनके मांही, तेम प्रकाश कह्युरी ।
हिवे देव सहु मिली तेव, आवे समेत गिरेरी ।
ओच्छव करे निर्वाण, तेहवे ताम सिरेरी ॥ २४

हिवें चार निकायना देव, प्रभु तन खीर पखाली ।
केशर चंदने पूजे, चढ़ावे पुष्पनी माली ।
देव दूष्य वस्त्र पहेराय, धूप दशांग करीरी ।
प्रभु तन शिबिका मांहि, धारी तेह खरीरी ॥ २५

उपाडे शिबिका तेह, इंद्रे सहय मिलीरी ।
नैरत कूंणे आय, चंदन चिता रचैरी ।
और मुनिजन के काज, पासे तेह चलीरी ।
चिता चंदन काष्ठ, तेहनी तिहां खंचैरी ॥ २६

ऐसे सुर मन हेत, प्रीत से तेह करेरी ।
करे अग्नि अग्निकुमार, वायुदेव वायु करेरी ।

ढाल २० मी
(आछे लालजी -ऐ देशी)

वीशमो उद्धार :-

हिवे श्री समेत गिरिंद, जिहां प्रभु वीस जिणंद ।
मनमोहनलाल, उद्धार कहूं गिरी वीशनो ॥ १
कुण नगर कुण देश, कुण राजा है विशेष ।
मन० नाम सुणो हिवें नेहनो ॥ २
देश आणंद मझार, नगर छे तेहमें हजार ।
मन० गंधपुर नगर छे सोहनो ॥ ३
जिहां राजा प्रभ सेन, जिण घर धर्म छे जैन ।
मन० सहु नरपती मां मोहनो ॥ ४
नित प्रति प्रभु गुण गाय, जिन पूजा चित्त लाय ।
मन० प्रभु पूजे मन थिर करी ॥ ५
जिण कर्यों थानिक वीस, तप करे ते निश दिस ।
मन० एक एक थानिक फल करी ॥ ६
मन में वहु वैराग, सीले जस सौभाग ।
मन० राजा मन दया चित धरी ॥ ७
राजा मन नहीं रोष, कूडो न धै कोइने रोष ।
मन० सत्य वचन दिल आदरी ॥ ८
एक दिवस तप किद्ध, मुनि पद ते चित दीध ।
मन० मुनि थानिक पद साचव्यो ॥ ९

तिण अवसर ते वार, गंधपुर नगरने वहार।
मन० मुनिवर संवर धारव्यो ॥ १०
ते गणधर दिनकर सूर, तेहने संग मुनि पूर।
मन० वनमां तिण काउसग ठव्यो ॥ ११
वन पालिक तव दौड़, देवे वधाई कर जोड़।
मन० आवी तुरत राय ने स्तव्यो ॥ १२
राजा देवे दान, वन पालक नें मान।
मन० रत्न जडित धे मुद्रामणी ॥ १३
हिवें मुनि वंदन काज, करी राजा शुभ साज।
मन० चाल्यो राजा वन भणी ॥ १४
जइ वांधा गुरु पाय, वांदी बैठो राय।
मन० हिवें देशना सुणं गुरु तणी ॥ १५
गुरु धे देशना सार, जीव दया आधार।
मन० धर्म तणी वाणी सुणी ॥ १६
कहे राजा सुणो स्वाम, वीस थानिक तप काम।
मन० स्यो फल ते गुरु मुझ कहो ॥ १७
तव गुरु कहे सुणो भव्य, वीस थानिक नुं स्तव्य।
मन० ते सुणी सहू भावे वहो ॥ १८
जे करे थानिक वीस, वली पूजे जिन वीस।
मन० जे फल ते शिव सुख लहो ॥ १९
जो चाहो पूरण इम-लाभ, वीस थानिक तु आभ।
मन० विंशति गिरी पूजाय हो ॥ २०

तिण अवसर ते वार, गंधपुर नगरने वहार।
मन० मुनिवर संवर धारव्यो ॥ १०
ते गणधर दिनकर सूर, तेहने संग मुनि पूर।
मन० वनमां निण काउसग्ग ठव्यो ॥ ११
वन पालिक तव दौड़, देवे वधाई कर जोड़।
मन० आवी तुरत राय ने स्तव्यो ॥ १२
राजा देवे दान, वन पालक ने मान।
मन० रत्न जडित दे मुद्रामणी ॥ १३
हिवें मुनि वंदन काज, करी राजा शुभ साज।
मन० चाल्यो राजा वन भणी ॥ १४
जइ वांधा गुरु पाय, वांदी बैठो राय।
मन० हिवें देशना सुणे गुरु तणी ॥ १५
गुरु धे देशना सार, जीव दया आधार।
मन० धर्म तणी वाणी सुणी ॥ १६
कहे राजा सुणो स्वाम, वीस थानिक तप काम।
मन० स्यो फल ते गुरु मुझ कहो ॥ १७
तव गुरु कहे सुणो भव्य, वीस थानिक नुं स्तव्य।
मन० ते सुणी सहू भावे वहो ॥ १८
जे करे थानिक वीस, वली पूजे जिन वीस।
मन० जे फल ते शिव सुख लहो ॥ १९
जो चाहो पूरण इम - लाभ, वीस थानिक तु आभ।
मन० विंशति गिरी पूजाय हो ॥ २०

राय सुणी उपदेश, गुरुवाणी सुविशेष ।
मन० गुरु वांदी राय घर आवीयो ॥ २१

हिवे करी संघ तयार, जात्रा समेत गिरि धार ।
मन० तुरत समेत गिरि वांदियो ॥ २२

सोवर्णभद्र गिरि आय, पारस पूजी सुख पाय ।
मन० विंशति गिरि ने पूजीया ॥ २३

वली विंशति गिरि नो उद्धार, भक्ति तीर्थ करी सार ।
मन० रूपे अनुभव फल वावीयो ॥ २४

चिंतवी मन में राय, विंशति जिन इहां आय ।
मन० ए तीरथ सहु तीरथ सिरे ॥ २५

धन एह गिरि धन धन्य, पूज्या होवे बहु मान्य ।
मन० तेहने सुर सान्निध्य करे ॥ २६

अपुत्रिया पुत्र पाय, निर्धनीया धन थाय ।
मन० जो पूजा गिरिनी करे ॥ २७

इच्छत वांछित थाय, आपद दूर पूलाय ।
मन० गिरि भक्ति भव जल तरे ॥ २८

करी स्तवना गिरि राय, विंशति उद्धार कराय ।
मन० घर भगी हिवे पगलां धरे ॥ २९

आवी घर जब राय, संघनी भक्ति कराय ।
मन० जग यश वासज विस्तरे ॥ ३०

हिवे पुत्रने देइ राज, लेवे संजम साज ।
मम० प्रभसेन मुनि पंथ ज वरे ॥ ३१

संजम धरतो संत, पालतो मुनिवर पंथ ।
मन० उपशम विवेक संवर परे ॥ ३२

करी तप उग्र मुनीश, आव्या शिखर गिरीश ।
मन० वह मुनि संग गिरि पर वरे ॥ ३३

प्रभसेन मुनिवर राय, सौवर्णभद्रगिरि पाय ।
मन० स्थिति पूर्ण करी शिव वरे ॥ ३४

सौवर्णभद्र गिरीश, मुनि केता सिद्धीस ।
मन० चौवीस लक्ष मुनि सिधवर ॥ ३५

सौवर्णभद्र गिरि भेट, फल केतो लहे नेट ।
मन० क्रोड उपवास फल ते वरे ॥ ३६

पंचम आरा मांहि, समेत शिखर गिरि त्यांहि ।
मन० उद्धार इकवीसमो किण कर्यो ॥ ३७

संवत अढारे पचवीस, माघ शुक्ल सुजगीश ।
मन० ए संवत्सर ते भेटियो ॥ ३८

तप गच्छपति य दिणंद, श्री विजय धर्म सुरिंद ।
मन० श्रावक शुभ कुल दीपतो ॥ ३९

जेसलमेरी श्राध, मूलचंद पुत्र सहसु बाध ।
मन० शाह सुगालचंद दीपतो ॥ ४०

तिणे इकवीसमो एह, कर्यो उद्धार ससनेह ।
मन० समेत शिखर इकवीसमो ॥ ४१

चैत्य कराव्या दोय, मधुवन शिखर पर जोय ।
मन० जिहां ठव्या पास त्रेवीसमा ॥ ४२

छेहलो ए उद्धार, एह शिखर गिरि सार ।
मन० नाम राख्यो ते जुगो जुगे ॥ ४३

जेहनो कुल वंश धन्य, मात पिता जसु धन्य।
मन० तेहने पुण्यवंत सुत मिल्यो ॥ ४४
देव विजय कही गाथ, शाह खुशालचंद्र साथ।
मन० जात्र करी तिण शिखरनी ॥ ४५
तिण मुख सुणी एह वाच, सहु जाणी में सांच।
मन० तस वचने में ए भणी ॥ ४६
तेह सुजाण में एह, ते सघळे ससनेह।
मन० छेहलो उद्धार मुझ ए मिल्यो ॥ ४७
उद्धार इकवीस एह, भाख्या सहु में तेह।
मन० हरखी हीय मांहे भलो ॥ ४८
एहज वीसमी ढाल, थइ ते एही रसाल।
मन० एह उद्धार मांहे भणी ॥ ४९
रास भलो श्रीकार, समेत शिखर अधिकार।
मन० सिद्धांत युक्ति थी ए वणी ॥ ५०
भणि सुणतां सुख थाय, मन वांछित फल पाय।
मन० रास भलो ए रलीयामणो ॥ ५१
रूप रुचि गुरु राय, श्री गुरु चरण सु पसाय।
मन० दया रुचि रंगे भणो ॥ ५२

ढाल २१ मी

(ढंढण रिषीजीने वंदणा हमारी – कहो अणगार रो)

समेत शिखर गिरि वंदिये रे लाल, जिहां जिन वीश निर्वाण रे।
समेत शिखर गिरि वीस, वीसोंही तीरथ जाण रे ॥ १

वीश निर्वाण गिरि तेह छे रे लाल, भला ए वीसोंही नाम रे ।
वीसोंही राय उद्धारियो रे लाल, भला ए वीसुंही धाम रे ॥ २
वीसोंही गिरि मां जुजुआरे लाल, जिनसंगे जेह मुनीश रे ।
और मुनि पण गिरे गिरे रे लाल, कह्या जिहां जेता मुनीस रे ॥ ३
उद्धार इकवीसमो भलो रे लाल, पूर्यो शुगालचंद्र साह रे ।
तेणे इकवीस नामे करी रे लाल, ए गिरि पूजो उछांह रे ॥ ४
प्रथम समेत गिरि नाम छ रे लाल, तसुपर शिखर वीश रे ।
तिण सुं इकवीस नाम एना रे लाल, मूल तो तीर्थ है वीस रे ॥ ५
ए गिरि पूजो भावसुं रे लाल, टालो अशुभ गति दोय रे ।
शुभ गति जे ते दोय लहे रे लाल, ए भेटया गिरिराज रे ॥ ६
एह समेत गिरि जात्रनो रे लाल, जो अभिलाषी होय रे ।
निर्लोभी समकित धरे रे लाल, पाले छ छेहरी जो परे ॥ ७
ए तीरथ एह काल में रे लाल, संकट चूरण आधार रे ।
दिनकर सम तीरथ सिरे रे लाल, सिव अधिकारी सार रे ॥ ८
इंद चंद दिणंद सेवता रे लाल, वली सेवे सुर कुमरी विशेष रे ।
सुर नर मुनिवर संघ जी रे लाल, सुख उपजावे अशेष रे ॥ ९
रवि सहु ग्रह गण मां वडो रे लाल, तारा गण चंद रे ।
मंत्र मांहे नवपद वडो रे लाल, मूल नवकार आणंद रे ॥ १०
गिरि सहु में मेरु वडो रे लाल, सहु नरपति मां राम रे ।
चउगतिमां सिद्धि गति वडी रे लाल, सिरे सहु हंस पंखी माहि रे ॥ ११
तिम सहु तीरथ मां सिरे रे लाल, तीरथ समेत गिरिंद रे ।
भेटो ए तीरथ भाव सुं रे लाल, जिम पामो भवि सुखकंद रे ॥ १२

शरँ वँहि गंज शशी (१८३५) संवच्छेर रे लाल,
माघ शुक्ल पक्ष दीह रे ।
थुणियो उद्धार रास भलो रे लाल, समेत शिखर नो एह रे ॥ १३
दियो आदेश तपगछ पति रे लाल, चौमासो शिवपुरी किद्ध रे ।
संघ आग्रहे एमैं कह्यो रे लाल, गुण समेत गिरि सिद्ध रे ॥ १४
तपगच्छ नायक गुण नीलो रे लाल, सहु गच्छपतिमां मोड रे ।
श्री विजय धर्म सूरि राज्य में रे लाल,
ए समेत शिखर गुण जोड़ रे ॥ १५
ते शुभ गच्छे सोभता रे लाल, गीतार्थ रूपरुचि राय रे ।
श्री गुरु वचन प्रभाव सुं रे लाल, ज्ञान भलो जस पाय रे ॥ १६
गुरु चरणांबुज सेवतां रे लाल, दयारुचि गुण गाय रे ।
भणे गुणे सुणे उद्धार ने रे लाल, तस घर नव निधि थाय रे ॥ १७

कलश

सुख सयल कारक दुरगति वारक, समेत शिखर गिरि मंडणो ।
उद्धार ए में सुपरे गायो, सुगति सुख होवे सौ गुणो ॥
जेह भवी सुणस्ये भणस्ये गुणस्ये, जस गृह लच्छी पूरणो ।
इम कहे कवीयण सुणो भवीयण, नित्त २ जस लहो सौ गुणो ॥१॥

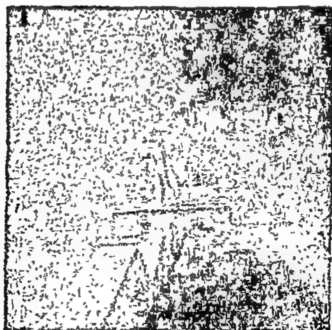
इति समेत गिरि उद्धार रास। समेत शिखर माहात्म्य अनुसार समाप्त ॥ (ग्रंथाग्र ८०० लगभग)

॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥

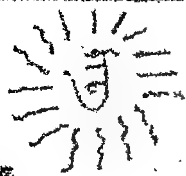


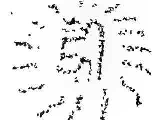
श्रीसमेतशिखर महातीर्थनुं प्राचीन जलमंदिर



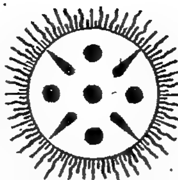


श्रीसमेतशिखर महातीर्थ—





॥ श्री सम्मेदशिखर महातीर्थ ॥


॥ वंदे वीरं श्रीचारित्रं ॥

卐 **श्री समेतशिखरजी तीर्थना रासनो संक्षिप्त सार अने ऐतिहासिक माहिती** 卐

ले.

पू. मुनि श्रीदर्शनविजयजी म. त्रिपुटी

शिखरजी तीर्थनी महत्ता

वर्तमान अवसर्पिणी कालमां चोवीस तीर्थंकरो थया छे, तेमांथी **भ. ऋषभदेवजी** दशहजार मुनिवरो साथे ६ दिवसनुं अनशन करी, पर्यंकासने **अष्टापद पर्वत** उपर पोष (माह) वद १३ ने दिवसे पूर्वाण्ह कालमां मोक्षे गया. भ. **वासुपूज्य स्वामी** ६०० मुनिवरो साथे १ महिनानुं अनशन करी, काउस्सगमां अषाड शु. १४ ना दिवसे बपोर पछी चम्पापुरी(मंदारहिल)मां मोक्षे गया.

भ. नेमिनाथजी ५३६ मुनिवरो साथे १ महिनानुं अनशन करी, पर्यंकासने बेसी, **गिरनार** पर्वत उपर अषाड शु. ८ नी रातना पूर्व भागमां मोक्षे गया. **भ. महावीरस्वामी** एकला बे उपवास (छठ्ठ)

करी, समोसरणमां पर्यंकासने (कार्तिक) आसो वद ०))नी राते छेल्ले पहोरे सर्वार्थ सिद्ध मुहूर्तमां पावापुरीमां मोक्षे गया. आ सिवायना २० तीर्थंकरो सम्मेतशिखर पहाड़ उपर मोक्षे गया छे, तेमनी साथे अने तेमना पछी बीजा हजारो मुनिवरो सम्मेतशिखर पहाड़ उपर मोक्षे गया छे.

आथी स्पष्ट थाय छे के भारतमां सम्मेतशिखर गिरि मोटुं सिद्धक्षेत्र तीर्थ छे. तेनुं प्रसिद्ध नाम सम्मेतशिखर छे; पण २१ ट्रंकोना हिसावे जुदां जुदां २१ पण नाम छे. तेनुं अर्वाचीन नाम पारसनाथ (हिल) पहाड़ छे. जैनागमो, पंचांगी, वसुदेव हींडी, चउवण्ण–महापुरिस–चरियम्, त्रिषष्टि–शलाका–पुरुषचरित्र, तीर्थकल्प तथा बीजा चरित्र ग्रंथोमां तथा तीर्थमालाओमां सम्मेतशिखर तीर्थनां उल्लेखो अने वर्णनो मले छे. जैन मुनिवरोए तेना आधारे सम्मेत-शिखरना स्वतंत्र वर्णनना ग्रंथो पण बनाव्या छे.

शिखरजी तीर्थनी महिमाना ग्रंथो

१. सम्मेतशिखर माहात्म्य—महावादी आ. श्रीदेवसूरि तथा तेमनी शिष्य परंपरानो इतिहास "जैन परंपरानो इतिहास" (प्र. ४१, पृ. ५६० थी ५०९)मां विस्तारथी आप्यो छे, तेमांनी "नागोरी तपागच्छनी शाखा"मां ४८ मा पट्टधर आ. रत्नशेखरसूरि थया हता. तेमनो सं. १३७२ मां जन्म, सं. १३८५मां दीक्षा, सं. १४००मां विलाड़ामां आचार्यपद अने सं. १४२८ पछी स्वर्गवास पाम्या हता. तेमणे खरतरगच्छना आ. जिनप्रभसूरि पासे अभ्यास

कर्यो हतो. तेमने "मिथ्यांधकार नभोमणि"नुं विरुद मळ्युं हतुं. तेमणे सं. १४४७ मां गुणस्थानक्रमारोह स्वोपज्ञवृत्ति, "वीरंजय०" क्षेत्रसमास स्वोपज्ञवृत्ति, गुरुगुण–षट्‌त्रिंशत्–षट् त्रिंशिकावृत्ति, संबोध सत्तरी वृत्ति, सं. १४१८ मां सिरि सिरिवाल कहा, सिद्धचक्र लेखनविधि, दिनशुद्धि* दीपिका–गाथा १४४, छंदो रत्नावली अने षट् दर्शन समुच्चय वगेरे ग्रंथोनी रचना करी हती. आचार्यश्रीए सं. १४०७ मां फिरोजशाह तघलखने उपदेश आप्यो अने बादशाहे तेमने सं. १४१४ मां विविध फरमानो आप्यां हतां. आचार्यश्रीए १००० घरोना माणसोने नवा जैन बनाव्या. आ. रत्नशेखरसूरिए आ सिवाय कोइ ग्रंथ बनाव्यानो उल्लेख मळतो नथी; पण खुशीनी वात छे के पं. रुपरुचिगणीना शिष्य पं. कवि दयारुचि गणीजी "समेतशिखर रास" (ढाल ५ गा. ४१) मां लखे छे के आ. रत्नशेखरसूरिए सं. १४०० पछी संस्कृतमां "समेतशिखर माहात्म्य ग्रं. १६०००" बनाव्युं हतुं, आजे आ माहात्म्य उपलब्ध नथी, साहित्य प्रेमीए विशेष सावचेत रही आ ग्रंथ शोधी काढवो जोइए.

२. समेतशिखर रास–तपागच्छना गीतार्थ पं. रुपरुचिगणीना शिष्य कवि पं. दयारुचिगणीए सं. १८३५ महा सु. ५ दिने शिवपुरीमां श्रीपूज्यविजयधर्मसूरिना राज्यमां संवेगी पं. देवविजयगणिनी दोरवणी मुजब सम्मेतशिखर उद्धार रास (ढाल २१ ग्रं. ८५०)

* आ इतिहासना लेखके सं. १९८३ कार्तिक शुदि ५ना रोज मुंबईमां दिन शुद्धि दीपिकानी गुजराती "विश्वप्रभा" नामे टीका रची छे.

नी रचना करी हती. आ सर्व मुनिवरोनो विस्तृत परिचय २१ मा उद्धारना वर्णन प्रसंगे आवशे.

रासनो संक्षिप्त सार

पहेलो उद्धार–बीजा तीर्थंकर श्री अजितनाथजी समेतशिखर पहाडनी **सिद्धवर** टूंक उपर एकहजार मुनिवरो साथे पधारी, एक महिनाना उपवास करी, काउसग्ग मुद्रामां अनशन करी, चै. सु. ५ दिने दिवसना पूर्व भागमां मोक्षे गया. त्यारबाद अयोध्या नगरीना चक्रवर्ती सगरना पौत्र राजा भगीरथे आ. सगरसूरिना उपदेशथी आ टूंक उपर मोटो जिन प्रासाद तथा २० जिनालयो बनावी, तेमां **श्री अजितनाथजी** वगेरे २० तीर्थंकरोनी चौमुख प्रतिमाओनी प्रतिष्ठा करावी हती. आ रीते आ पहेलो उद्धार थयो. आ टूंक उपर कुल १अबज, ८० क्रोड, ८४ लाख मुनिवरो मोक्षे गया हता. आ टूंकनी यात्रा करवाथी ३२ क्रोड पौषधोपवासनुं फळ मळे छे. (जूओ ढाल १–४)

बीजो उद्धार–त्रीजा तीर्थंकर **श्री संभवनाथप्रभु दत्तधवल** टूंक उपर एक हजार मुनिवरो साथे एक मासनुं अनशन करी, काउसग्ग मुद्रामां चैत्र शु. ५ दिने दिवसे बपोर पछी मोक्षे गया. त्यारबाद हेमनगरना राजा हेमदत्ते गणधर श्री चारूकना उपदेशथी आ तीर्थना समस्त जिनमंदिरोनो बीजो उद्धार कराव्यो अने दत्तधवल टूंक उपर भ. श्रीसंभवनाथजीनो नवो चौमुख जिन प्रासाद बनाव्यो. आ टूंक उपर कुल ९ कोडाकोडी, ७२ लाख, ४२ हजार

अने ५०० मुनिवरो मोक्षे गया. आ ट्रूंकनी यात्रा करवाथी बेंतालीश लाख पौषधोपवासनुं फळ मळे छे. (जुओ ढाल ५मी)

त्रीजो उद्धार–चोथा तीर्थंकर श्री अभिनन्दनस्वामी आनंद ट्रूंक उपर एक हजार मुनिवरो साथे एक महिनाना उपवास करी, काउसग्ग मुद्रामां वै. शु. ८ने दिवसना पूर्व भागमां मोक्षे गया. धातकीखंडना पुरणपुरना रत्नशेखर राजाए आ तीर्थना समस्त जिन मंदिरोनो त्रीजो उद्धार कराव्यो, अने आनंद ट्रूंक उपर श्री अभिनन्दन स्वामीनो नवो चौमुख जिन प्रासाद बनाव्यो. आ ट्रूंक उपर कुल ७३ कोडाकोडी, ७० क्रोड, १७ लाख, ४२ हजार अने ७०० मुनिवरो मोक्षे गया छे. आ ट्रूंकनी यात्रा करवाथी एक लाख पौषधोपवासनुं फळ मळे छे. (जुओ ढाल ६ कडी १ थी ९)

चोथो उद्धार–पांचमा तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ अचलगिरि ट्रूंक उपर १००० मुनिवरो साथे एक महिनाना उपवास करी काउसग्गमां रही, चै. सु. ९ ना दिवसना पूर्व भागमां मोक्षे गया. त्यारबाद पद्मनगर आनंदसेन राजाए आ तीर्थना समस्त जिनमंदिरोनो चोथो उद्धार कराव्यो, अने अचल ट्रूंक उपर श्री सुमतिनाथजीनो नवो चौमुख जिन प्रासाद बनाव्यो. आ ट्रूंक उपर कुल १ कोडाकोडी, ८४ क्रोड, ७२ लाख, ८१ हजार अने ७०० मुनिवरो मोक्षे गया. आ ट्रूंकनी यात्रा करवाथी एक क्रोड पौषधोपवासनुं फळ मळे छे. (जुओ ढाल ६ गा. १० थी २०)

पांचमो उद्धार–छट्ठा तीर्थंकर श्री पद्मप्रभुजी मोहनगिरि ट्रूंक उपर ३०८ मुनिवरो साथे एक महिनाना उपवास करी, काउ-

स्सग्ग मुद्रामां का. व. ११ ना दिवसे वपोर पछी मोक्षे गया तथा वंगालना प्रभाकर नगरना सुप्रभ राजाए आ तीर्थना समस्त जिन मंदिरोनो पांचमो उद्धार कराव्यो अने मोहनगिरि ट्रंक उपर श्री पद्मप्रभुजीनो चौमुख जिन प्रासाद वनाव्यो. आ ट्रंक उपर कुल ९९ क्रोड, ८७ लाख, ४३ हजार अने ७२७ मुनिवरो मोक्षे गया हता. आ ट्रंकनी यात्रा करवाथी १ क्रोड पौषधोपवासनुं फळ मळे छे. (जुओ ढा० ६ गा. २१ थी ३३)

छट्ठो उद्धार–सातमा तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथजी प्रभास ट्रंक उपर ५०० मुनिवरो साथे एक महिनानु उपवास करी, काउस्सग्ग मुद्रामां महा व. ७ ना दिवसे वपोर पहेलां मोक्षे गया तथा उद्योतक राजाए आ तीर्थना समस्त जिन मंदिरोनो छट्ठो उद्धार कराव्यो अने प्रभास ट्रंक उपर श्री सुपार्श्वनाथजीनो नवो चौमुख जिन प्रासाद कराव्यो. आ ट्रंक उपर कुल ४९ कोडाकोडी, ८४ क्रोड, ७२ लाख, ७०० मुनिवरो मोक्षे गया हता. आ ट्रंकनी यात्रा करवाथी ३२ क्रोड पौषधोपवासनुं फळ मळे छे. (जुओ ढाल ७ गा. १ थी २४)

सातमो उद्धार–आठमा तीर्थंकर श्री चंद्रप्रभुजी ललितघट ट्रंक उपर एक हजार मुनिवरो साथे अेक महिनाना उपवास करी, काउस्सग्ग मुद्रामां श्रा. व. ७ दिवसे वपोर पहेलां मोक्षे गया तथा पुंडरीक नगरना राजा ललितदत्ते आ तीर्थना समस्त जिनमंदिरोनो सातमो उद्धार कराव्यो अने ललितघट ट्रंक उपर श्री चंद्रप्रभुजीनो नवो चौमुख जिन प्रासाद वनाव्यो. आ ट्रंक उपर ८४ अवज, ७२ क्रोड, ८० लाख, ४ हजार अने ५५५ मुनिवरो मोक्षे गया. आ

टूंकनी यात्रा करवाथी १६ लाख पौषधोपवासनुं फळ मळे छे. (जुओ ढाळ ७मी गा. २५ थी ३४)

आठमो उद्धार—नवमा तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ सुप्रभगिरि टूंक उपर एक हजार मुनिवरो साथे एक महिनाना उपवास करी, पद्मासने काउसग्ग मुद्रामां भा. शु. ९ ना दिवसे बपोर पछी मोक्षे गया, तथा श्रीपुर नगरना हेमप्रभ राजाए आ तीर्थना समस्त जिन-मंदिरोनो आठमो उद्धार कराव्यो अने सुप्रभगिरि उपर श्री सुविधि-नाथनो नवो चौमुख जिन प्रासाद बनाव्यो. आ टूंक उपर कुल ९९ क्रोड, ९ लाख, ७ हजार अने ७८० मुनिवरो मोक्षे गया. आ टूंकनी यात्रा करवाथी १ क्रोड पौषधोपवासनुं फळ मळे छे. (जुओ ढाळ ८ गा. १ थी १४)

नवमो उद्धार—दशमा तीर्थंकर श्री शीतलनाथजी विद्युत्गिरि टूंक उपर एक हजार मुनिवरो साथे एक महिनाना उपवास करी, काउस्सग्ग मुद्रामां चैत्र व. २ ना दिवसे बपोर पहेलां मोक्षे गया. त्यारबाद मालवाना भद्दिलपुर नगरना राजा मेघरथे आ तीर्थना समस्त जिन मंदिरोनो उद्धार कराव्यो अने विद्युत्गिरि टूंक उपर श्री शीतलनाथजीनो नवो चौमुख जिन प्रासाद बनाव्यो. आ टूंक उपर कुल १८ क्रोडाक्रोडी, ४ क्रोड, ३२ लाख, ४२ हजार अने ९०५ मुनिवरो मोक्षे गया. आ टूंकनी यात्रा करवाथी १ क्रोड पौषधोपवासनुं फळ मळे छे। (जुओ ढाळ ८ गा० १४ थी २५)

दशमो उद्धार—अग्यारमा तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथजी संकुल-गिरि टूंक उपर १००० मुनिवरो साथे एक महिनाना उपवास करी,

काउस्सग्ग मुद्रामां आषाढ क्रु. ३ ने दिवसे बपोर पहेलां मोक्षे गया. त्यारबाद मालवाना बालनगरना राजा आनंदसेने आ तीर्थना समस्त जिनमंदिरोनो दशमो उद्धार कराव्यो अने संकुलगिरि टूंक उपर श्री श्रेयांसनाथजीनो नवो चौमुख जिनप्रासाद बनाव्यो. आ टूंक उपर कुल ९६ कोडाकोडी, ९६ क्रोड, ९२ लाख, ८९॥ हजार अने ५४२ मुनिवरो मोक्षे गया. आ टूंकनी यात्रा करवाथी १ क्रोड पौषधोपवासनुं फळ मले छे. [जुओ ढाळ ८ गा. २६ थी ३७]

अग्यारमो उद्धार—तेरमा तीर्थंकर श्री विमलनाथजी विमलगिरि टूंक उपर छ हजार मुनिवरो साथे एक महिनाना उपवास करी, काउसग्ग मुद्रामां जेठ व. ७ नी मध्यरात पहेलां मोक्षे गया. तथा पूर्वमहाविदेहना कनकावती नगरीना राजा चंद्रशेखरे आ तीर्थना समस्त जिनमंदिरोनो अग्यारमो उद्धार कराव्यो अने विमलगिरि टूंक उपर श्रीविमलनाथजीनो नवो चौमुख जिनप्रासाद बनाव्यो. आ टूंक उपर कुल १ क्रोड, ७६ लाख, ६ हजार अने ७४२ मुनिवरो मोक्षे गया. आ टूंकनी यात्रा करवाथी १ क्रोड पौषधोपवासनुं फळ मले छे. [जुओ ढाल ९ गा. १ थी १५]

बारमो उद्धार—चौदमा तीर्थंकर श्री अनंतनाथजी स्वयंभू टूंक उपर सात हजार मुनिवरो साथे एक महिनाना उपवास करी, काउस्सग्ग मुद्रामां चै. सु. ५ नी राते मध्यरात पहेलां मोक्षे गया. तथा कौशाम्बी नगरीना राजा बालसेने विद्याचारण मुनिना उपदेशथी आ तीर्थना समस्त जिनमंदिरोनो बारमो उद्धार कराव्यो, अने स्वयंभू टूंक उपर श्री अनंतनाथजीनो नवो चौमुख जिनप्रासाद बनाव्यो.

आ ट्रूंक उपर कुल ९६ कोडाकोडी, ७० क्रोड, ७० लाख, ७० हजार अने ७०० मुनिवरो मोक्षे गया. आ ट्रूंकनी यात्रा करवाथी १ क्रोड पौषधोपवासनुं फळ मळे छे. [जुओ ढाल ९ गा. १६ थी ५१]

तेरमो उद्धार—पंदरमा तीर्थंकर श्री धर्मनाथजी दत्तवर ट्रूंक उपर १०८ मुनिवरो साथे एक महिनाना उपवास करी, काउस्सग्ग मुद्रामां जेठ सु. ५ नी मध्यरात पहेलां मोक्षे गया तथा पंजावना श्रीपुर नगरना राजा भवदत्ते मासोपवासी आ. धर्मघोषसूरिना उपदेशथी आ तीर्थना समस्त जिनमंदिरोनो तेरमो उद्धार कराव्यो. अने २० जिनालयमां २० प्रतिमा बेसाडी तथा दत्तवर ट्रूंक उपर श्री धर्मनाथजीनो नवो चौमुख जिन प्रासाद बनाव्यो. आ ट्रूंक उपर कुल १९ कोडाकोडी, १९ क्रोड, ९ लाख, ९ हजार अने ७०० मुनिवरो मोक्षे गया. आ ट्रूंकनी यात्रा करवाथी १ क्रोड पौषधोपवासनुं फळ मळे छे। [जुओ ढाल १०. गा. १ थी ५०]

चौदमो उद्धार—सोळमा तीर्थंकर श्री शान्तिनाथजी प्रभास ट्रूंक उपर ९०० मुनिवरो साथे एक महिनानुं अनशन करी, पद्मासने बेसी काउस्सग्ग मुद्रामां वै. वद १३नी पहेली राते मोक्षे गया तथा मित्रपुर नगरना राजा सुदर्शने श्री चक्रायुध गणधरना उपदेशथी आ तीर्थना समस्त जिनमन्दिरोनो चौदमो उद्धार कराव्यो अने प्रभास ट्रूंक उपर श्री शान्तिनाथजीनो नवो चौमुख जिन प्रासाद बनाव्यो. आ ट्रूंक उपर कुल ९ कोडाकोडी, ९ लाख, ९ हजार अने ९९९

श्री नमिनाथजीनो नवो चौमुख जिन प्रासाद बनाव्यो. आ टूंक उपर कुल १ कोडाकोडी ४५ लाख ४९ हजार अने ९०० मुनिवरो मोक्षे गया. आ टूंकनी यात्रा करवाथी १ क्रोड पौषधनुं फळ मळे छे. [जुओ ढाल १८ गा. १६ थी २०]

वीशमो उद्धार—त्रेवीसमा तीर्थंकर श्री **पार्श्वनाथजी सुवर्णभद्र** टुंक उपर ३३ मुनिवरो साथे एक महिनाना उपवास करी, खड्गासने काउस्सग्ग मुद्रामां श्रा. सु. ८ नी राते पूर्व भागमां मोक्षे गया. त्यारबाद आनंद देशना गंधपुर नगरना राजा प्रभसेने वीश स्थानक तप करी आ. दिनकरसूरिना उपदेशथी आ तीर्थनां समस्त जिनमंदिरोनो उद्धार कराव्यो अने सुवर्णभद्र टूंक उपर श्री पार्श्वनाथप्रभुनो नवो चौमुख जिन प्रासाद बनाव्यो. आ टूंक उपर कुल २४ लाख मुनिवरो मोक्षे गया. आ टूंकनी यात्रा करवाथी १ क्रोड पौषधोपवासनुं फळ मळे छे. [जुओ ढा. १९ गा. २२ थी २४ अने ढा. २० गा. १ थी ३६]

सुवर्णभद्रगिरि महिमा—आ टूंक उंची टेकरी उपर छे, उपर मंदिरमां जवा माटे ८० पगथीआ चडवा पडे छे, आ टूंकनुं बीजुं नाम मेघाडंबर टूंक पण मळे छे. अहीं तेवीसमा तीर्थंकर **भ. पार्श्वनाथ** सौथी छेल्ला मोक्षे गया छे तेथी आ तीर्थनुं प्रचलित नाम पारसनाथ पहाड़ पण मळे छे. अहीं पोष्ट ओफिसनुं नाम **पारसनाथ** छे अने रेल्वे स्टेशन पण **पारसनाथ** हील छे.

शिखरजी तीर्थे प्रभु महावीरनी पधरामणी—चौवीशमा तीर्थंकर **श्री महावीरस्वामीजी पावापुरीमां** मोक्षे गया छे, पण तेओ छद्मस्थावस्थामां शिखरजी तीर्थे पधार्या होय एम लागे छे.

केमके भ. महावीरस्वामीने केवलज्ञान सम्मेतशिखर पहाडनी पासे ऋजुवालुका नदीना कांठे जमगाम पासे थयुं हतुं. आ नदी सम्मेत-शिखर पहाडनी पासे छे, नदीने किनारे शाल नामना मोटा मोटा वृक्षो छे. नदीने बन्ने किनारे एकदम एकान्त अने शांत वातावरण छे. आ नदीनुं असली नाम ऋजुवालुका हतुं पण सरकारे रेल्वे लाइन काढी त्यारे आ नदीना किनारे बाकर गाम पासे आ नदीनी उपर रेल्वे पुल बांध्यो हतो अने नदीनुं बीजुं नाम पण बाकर नदी राख्युं हतुं एटले ऋजुवालुका नदीनुं बीजुं नाम बाकर नदी पड्युं छे.

भ. महावीर स्वामीए आ नदीना कांठे केवलज्ञान प्राप्त कर्युं. अहींथी पावापुरी १२ योजन थाय छे, आथी संभवित छे के भ. महावीरस्वामी पण सम्मेतशिखर पहाडना प्रदेशमां पधार्या हता.

आथी ज बावीसमा उद्धार समये सम्मेतशिखर उपर भ. महावीर स्वामीनी देरी बनी छे, ते उक्त हिसाबे उचित पण छे.

तीर्थने नुकशान–हीजरत

इतिहास कहे छे के जैनधर्म विक्रमनी ८ मी शताब्दीना अंत सुधी पूर्वभारतमां सर्व रीते फाल्यो फूल्यो हतो, ९ मी शताब्दीना प्रारंभमां तेमां एकाएक गड़बड थई।

ते आ प्रमाणे:—

श्री शंकराचार्य वि. सं. ७८८ थी ८२० मां थया छे, तेमणे अद्वैत सिद्धान्त स्थापी, बौद्ध अने जैनधर्म उपर आक्रमण कर्युं, तेमना दिग्विजय ग्रंथमां स्पष्ट लख्युं छे के शंकराचार्यजीना अनुयायीओए बीजा धर्मवालाओ उपर अत्याचार गुजार्यो, घणा श्रमणोने कापी

नाख्या, श्रमणोना मंदिरोनो नाश कर्यो अने अनेक रीते नुकशान पहोंचाडयुं ।

बौद्धो नवमी शताब्दीमां भारत छोडी पोताना तीर्थो प्रतिमाओ एमज छोडी चाल्या गया, आ संघर्षकालमां त्यांना जैनोने पण घणुं वेठवुं पडयुं छे, त्यांना जैनोए पूर्वभारतनो त्याग कर्यो, पोतानी वहाली, मगधभूमिनो त्याग कर्यो, कलिंगदेशनो त्याग कर्यो, तीर्थो छोडयां, अने त्यांना गृहस्थोए जैन धर्म छोडयो.

पुष्यमित्र राजा पछी आ बीजी धर्मक्रान्ति थई छे, आ समये शंकराचार्यना अनुयायीओए बद्री पार्श्वनाथ, जगन्नाथपुरी, कुमार-गिरि तथा भुवनेश्वर वगेरे जैन तीर्थोने अने बौद्ध गया वगेरे बौद्ध तीर्थोने पोताना काबूमां लीधां हतां. जे आज सुधी तेओना हाथमां छे; आ विकट परिस्थितिमां सुधारो थतां ज श्वेताम्बर जैनाचार्योए फरी भारतमां विचरी, कुनेहथी घणा जैन तीर्थोने पुनः हस्तगत करी लीधां छे, जे आजे पण श्वेतांबर संघने आधीन छे ।

आ समये बंगालना असली जैनोने जाहेर रीते जैन धर्म छोड़वो पडयो छे, जे जाति आजे शराक तरीके प्रख्यात छे, नागजातिना जैनो के जे भगवान पार्श्वनाथना उपासक हता, तेओ पण आजे बीजा धर्ममां भळी गया छे, बंगाल अने उत्तरभारतना घणा जैनो हीजरत करी मेवाड तथा रजपूतानामां आवी गया.

ते समयना जैनाचार्योए जैनोनी तत्कालीन विषम परिस्थितिने पहोंची वलवा माटे खूब जहेमत उठावी छे, आ. प्रद्युम्नसूरि ते माटे

घणीवार त्यां पधार्या, मगधदेशमां पण विचर्या छे तेमणे सात वार सम्मेतशिखरनी यात्रा करी छे, तेमना उपदेशथी पूर्वदेशमां १७ नवां जिनालयो बन्यां हतां, घणा जीर्णोद्धार थया हता, अने ११ शास्त्र-भण्डारो स्थपाया हता.

(जैनपरंपरानो इतिहास भाग १ प्रक० ३२ पृ. ५०२ थी ५०४)

स्थापना तीर्थ

पूर्व भारतना जैनो हीजरत करी मध्य भारत तथा पश्चिम भारतमां एटले के मेवाड, राजपूताना, लाट अने सौराष्ट्रमां आव्या. तेओ पूर्व भारतना तीर्थोनी जिन प्रतिमाओने पोतानी साथे लई आव्या, अने तेओए जे जे तीर्थोनी जिन प्रतिमा हती ते ते नाम साथे सुमेल खाय तेवां शहेरो अने तीर्थो स्थापी, ते ते प्रतिमाओने त्यां त्यां स्थापित करी हती. आ रीते मध्य भारतमां तथा पश्चिम भारतमां ते ते नामनां "स्थापना तीर्थो" बन्या छे, ते आ प्रमाणे—

नंदिवर्धन राजाए क्षत्रियकुंड जन्मभूमिमां स्थापेल भ. महावीर-स्वामीनी प्रतिमा नांदियामां, ब्राह्मणकुंडनी जिन प्रतिमा ब्राह्मण-वाडामां, भ. महावीरस्वामी दीक्षाना स्थाने बे वर्ष पछी फरी पधार्या हता, राजा पूर्णपाले दीक्षाना ६ वर्ष बाद त्यां भगवाननी प्रतिमा बेसाडी हती, ते दीक्षाभूमिनी वीरप्रतिमा मुंडस्थलमां ऋजुवालुका ज्ञान भूमिनी प्रतिमा नाणामां, पावापुरीनी दीवालीना निर्वाणस्थाननी वीर प्रतिमा दियाणामां सुपुमीणी गाम वहार खीलाना उपसर्गवाली भूमिनी वीर प्रतिमा संडेरकमां, चमरोत्पातनी भूमिनी वीरनी प्रतिमा मां अस्थिनगर-वर्धमानपुरनी शूलपाणी

यक्षाधिष्ठित वीर चरणपादुका वढवाण शहेरमां, अने कोटि वर्ष नगरना कोटिकगच्छ (उदयगिरि) नी जिन प्रतिमा कोट्याकमां–खडायता बीजापुरमां स्थापित करवामां आवी हती, आथी स्पष्ट छे के **नांदिया, नाणा, दियाणा** ए सौ स्थापना तीर्थो छे, आथी ज लोक प्रवाद छे के—

"नाणा-दियाणा-ने नांदिया, महावीर स्वामी वांदीया."

(जुओ भाग २ प्रक० ३७ पृ. ३०२ प्रक० ४२, पृ. ७४४ जुओ भाग २ प्रक० ४५)

आ इतिहास कहे छे के आ समये मध्य भारतमां तथा पश्चिम भारतमां शत्रुंजय, गिरनार, सांची के सांचोर भरूच अने मुहरी वगेरे जैन तीर्थो विद्यमान तथा सुरक्षित हता.

आ प्रमाणे जैनो हिजरत करी तीर्थभूमि छोडी राजपूतानामां लाटमां सौराष्ट्रमां आव्या, अने तेओए प्राचीन तीर्थोने अहीं फरी वसाव्यां, बनवा जोग जे के दिगम्बर आचार्योए पण पूर्व भारत छोडी, दक्षिणमां जई त्यां पोताना तीर्थो पुनः स्थाप्यां हशे.

शिखरजी महातीर्थनो २१ मो उद्धार

आ प्रमाणे इतिहासना अवलोकनथी जाणवा मले छे के— वनवासीगच्छना पू. आ० श्री यशोदेवसूरिना पट्टध पू. आ० प्रद्युम्न-नवमी सदीना मध्यभागे सूरिजीए वारंवार मगधदेशमां विहार कर्यो छे, सात वार सम्मेतशिखर तीर्थनी यात्रा करी छे, तेमणे उपदेश आपी पूर्वदेशमां १७ तीर्थस्थानोमां नूतन जिनालयो कराव्यां छे, घणां तीर्थोना जीर्णोद्धार कराव्या छे, ११ जैन ग्रंथ भण्डारो स्थपाव्या छे.

आश्चर्यनी वात छे के विक्रमनी नवमी शताब्दीना प्रारंभमां सम्मेतशिखर महातीर्थ वगेरेमां जिन प्रसादो धर्मांधतानो भोग बन्या अने एज शताब्दीना मध्यमां सम्मेतशिखर महातीर्थना शिखरो उपर तथा बीजी १७ तीर्थ भूमिओमां निर्वाण स्तूपो जिनालयो बन्यां, अने बीजां तीर्थो व्यवस्थित बन्यां एटले सम्मेतशिखरनो इतिहास विक्रमनी नवमी सदी पछी क्रमबद्ध ऐतिहासिक रूप ले छे, एम कहीए तो खोटुं नथी.

पू. आ० प्रद्युम्नसूरिए सम्मेतशिखर महातीर्थ उपर जुदा जुदा २० स्थाने निर्वाण स्तूपो स्थपाव्या हता, पण अमुक तीर्थंकरनो अमुक टेकरी उपर अमुक स्थाने निर्वाणसूचक स्तूप छे. एवो स्पष्ट रीते निर्णय साधनोना अभावे करी शक्या न हता तथा नवमी शताब्दीना अंते तेज वनवासीगच्छना छेल्ला उग्र विहारी आ० विमलचंद्रसूरि पूर्व देशना मथुरा तीर्थ अने सम्मेतशिखर महातीर्थनी स्पर्शना करवा घणी वार पधार्या हता.

(आ संबंधी वधु हकीकत जैनपरंपरा इतिहास भा २ प्रक. १४ पृ. ५४६ मां छे.)

त्यारपछी वडगच्छ, वादिदेवसूरिगच्छ, तपगच्छ, रुद्रपल्ली-गच्छ, खरतरगच्छ, अंचलगच्छ, विजयगच्छ, वगेरे विविधगच्छना आचार्यो मुनिवरो श्रावक श्राविकाओए पूर्वदेशनां तीर्थोनी यात्राओ करी हती. अने सायेना कवि मुनिवरोए सम्मेतशिखर तीर्थमाला, पूर्वदेश तीर्थमाला, जैन तीर्थमालाओ वगेरे साहित्य सर्ज्युं छे.

आजे मुनिश्री सौभाग्यविजयजी म. (सं १७४७ मां

१७६३) पं० जयविजयगणी पं. हंससोमगणी, मुनिविजयसागर वगेरेनी बनावेली तीर्थमालाओ मले छे, जेमां टूंकां अने सुंदर वर्णन छे.

कोई कोई विद्वान सम्मेतशिखरजी महातीर्थने शत्रुंजय महातीर्थनी साथे पण सरखावे छे. ते आ प्रमाणे—

समेताचल शत्रुंजय तोलई,
सीमंधर जिणवर इम बोलई,
एह वयण कवि डोलई ॥४९॥
सीधा साधु अनंता कोडी,
अष्ट कर्म घन सांकल तोडी,
वंदुं बे कर जोडी,
सिद्धक्षेत्र जिणवर ए कहइ,
पूजी प्रणमी चारइ रहइ,
मुगति तणा सुख लहइ ॥ ५० ॥

(पं. श्री जयविजयगणीनी सम्मेतशिखर तीर्थमालामांथी—
प्राचीन तीर्थमाला पृ. २८)

आ पछीनो इतिहास एम कहे छे के सम्राट् अकबरे जुलसी सन ३७ ना पहिला रबिउल हीजरी महिनानी ७ तारीखे (इ. स. १५९२, वि. सं. १६४९ मां) जगद्गुरु आ० विजयहीरसूरिजीने सम्मेतशिखरजीनो पहाड भेट आप्यो हतो, तेनुं फरमान आ रीते मले छे।

"श्वेताम्बर आचार्य हीरविजयसूरिजी तथा तेमना शिष्यो जे पवित्र मनवाला साधु पुरुषो छे, तेओना दर्शनथी मने घणो आनंद

थयो छे. तेओनी मागणी छे के अमारां तीर्थ सिद्धाचलजी, गिरनारजी, तारंगाजी, केशरियानाथजी, आबुजी, राजगृहीना पांच पहाडो, सम्मेतशिखरजी वगेरे श्वेताम्बर तीर्थस्थानो छे. तेमां तथा तेनी आसपासनी भूमिमां कोइ जातनी हिंसा थाय नहीं, एवो हुक्म करवो जोईए. अमने आ मागणी व्याजबी लागे छे. तपास करतां नक्की थयुं छे के आ स्थानो श्वेताम्बर जैनोनां छे. हुं आ सौ स्थानो श्वेताम्बर आचार्य हीरविजयसूरिने अर्पण करुं छुं. के तेओ ए पवित्र स्थलोमां शान्तिथी उपासना करे. आ स्थानो श्वेताम्बर समाजनां छे. तेओनी मालिकीवालां छे. ज्यां सुधी सूर्य चंद्र तपे, त्यां सुधी आ फरमान जैन श्वेताम्बर माटे अमर रहे. आ फरमानना अमलमां कोईए दखल करवी नहीं."

(जैनपरंपरानो इतिहास भाग २ जो प्रक० ४० पृ० ४८७)

आ फरमाननी मूल नकल अमदावादमां समस्त श्वेताम्बर जैन संघनी प्रतिनिधि संस्था "शेठ आणंदजी कल्याणजी"नी पेढी पासे छे. (प्रक० ४० पृ० ४८७)

अहीं खास ध्यानमां राखवा लायक वात ए छे के "सम्मेत शिखर तीर्थ श्रीशंकराचार्यजीना धर्मशासनकालमां जैनो पासेथी झुंटवी लेवाय छे, नष्टभ्रष्ट थाय छे. ज्यारे इस्लामना धर्मशासनकालमां जैनोने पाछुं अपाय छे, सुरक्षित बने छे."

बादशाह अहमदशाहे (ई. स. १७४८ थी १७६४) पण मुर्शिदाबादना शेठ महताबरायने ई. स. १७४८ (वि.सं.१८०५) मां जगत्‌शेठनुं पद आप्युं हतुं. अने ई. स. १७५२ (वि. सं.

६६ विजयधर्मसूरि

मेवाडना रूपनगरमां शा० प्रेमचंद ओसवालनी पत्नी पाटम-देवीनी कुक्षिए जन्म, १८०३ मा. सु. ५ उदयपुरमां आचार्य पद, सं १८०९ मां कछोलीमां भट्टारक पद, अने सं. १८४१ मां मारवाडना वल्हंद गाममां स्वर्गवास थयो हतो। तेओ सात बिरुद ना धारक हता.

विजय देवसूरि गच्छना भ० श्री विजय धर्मसूरि तथा विजयानंदसूरि गच्छना भ० श्री विजयलक्ष्मीसूरि ए बन्ने आचार्यो नवा नगरमां मल्या हता. अने साथे रह्या हता. तथा जैन शासननी घणी प्रभावना थइ हती, तेमणे सं. १८२२ जे. सु ११ बुधवारे तारंगा तीर्थमां कोटि शिलानी देरीमां भ० आदिनाथनी चरण पादुकानी प्रतिष्ठा करी हती। तेमणे सं.१८२५मां महा शु. ५ ने रोज "श्री सम्मेतशिखरमहातीर्थ"मां जगतशेठ महेताबचंदे तथाशेठ खुशा-लचंदे जीर्णोद्धार कोरल जिनालयोमां २० तीर्थंकरोनी निर्वाण भूमिना चोकस स्थानो नक्की करावी, ते ते स्थाने २० तीर्थंकरोनी २० पादु-काओनी प्रतिष्ठा करी। जल मन्दिरमां जिन प्रतिमाओ पधरावी तथा मधुवनमां नवा जिन प्रसादोमां शामलिया पार्श्वनाथजी वगेरे जिन प्रतिमाओनी अंजनशलाका तथा प्रतिष्ठा करी हती.

(समेतशिखर रास)

तेमना उपदेशथी कच्छना वागड प्रांतमां कुमतिनो कदाग्रह शम्यो, अने सं. १८२७मां कच्छ नरेशे मांस मदिरानो त्याग कर्यो.

मेडताना भंडारी भगवानदासे तेमनो निर्वाण महोत्सव कर्यो, अने वलुंद शहेरमां तेमनी चरण पादुकानी प्रतिष्ठा करावी हती.

पू. देवविजयगणी म० नी गुरु परंपरा

तपागच्छनी श्रमण परंपरामां अनुक्रमे ५८ जगद्गुरु पू. आ. श्री विजयहीरसूरि ५९ महो० कल्याण विजयजी गणिवर ६० महो० लाभविजयजी गणी ६१ पं. जितविजयजी गणी ६२ पं. नयविजयजी गणी ६३ श्रुत केवली मूर्ति महो० यशोविजय गणिवर ६४ पंडित गुणविजयजी गणि ६५ पं. केशरविजयजी गणी ६६ पं. विनीत विजय गणी ६७ पं. देवविजयजी गणि अने ६८ पं. खुशालविजय गणी थया हता।

पू. देवविजय गणी परिचय—विद्वान हता, अमोघ उपदेश शक्तिवाळा हता। तेमणे सं. १७९७मां आ० व० अमासने रोज महोपाध्यायजीनी "योग दृष्टिनी सज्झाय" लखी हती, सं. १८२१मां "अष्ट प्रकारी पूजा" बनावी हती। ते सम्मेत शिखरजीनो उद्धार थाय, तेवी इच्छा धरावता हता। तेमना उपदेशथी जगत शेठ खुशालचंद शेठ सुगालचंद वगेरे मधुवनमां घणा महिना रही सम्मेत शिखर उपर उद्धार कराव्यो, नवी देरीओ बनावी जे जे स्तूप हता तेनां मूळ स्थानो नक्की करी, २० तीर्थंकरोनी चरण पादुकाओ पधरावी हती। तथा मधुवनमां १२, १३ जिनालयो बनाव्यां, अने भ० विजयदेवसूरि पासे सं. १८२५ महा सुद ५ प्रतिष्ठा करावी हती.

६८ पं. खुशाल विजयजी गणि—ते परम संवेगी हता, इतिहास प्रेमी हता। विजयानंदसूरि गच्छना एक विद्वान मुनिवर सं. १८०६मां सुरतमां भट्ट. विजय ऋद्धि सूरि स्वर्गे गया त्यां सुधीनी गुजराती भाषामां गद्य "वीर वंशावली" बनावी हती.

त्यारबाद कवि बहादुर दीप विजयजीए सं. १८७७मां भट्ट० विजय जिनेन्द्र सूरि अने भ० विजय समुद्र सूरिनी पाट सुधीनो सूर-तमां "सोहम कुल पट्टावली रास (पद्य)" बनाव्यो, तेमणे तेमां (१) विजयदेवसूरि गच्छ तथा (२) विजयानंदसूरि गच्छ ए बन्ने शाखाओनी पट्टावली आपी हती। आथी तेमणे बन्ने गच्छो, सागर गच्छ, विजयराजसूरि गच्छ (तपारत्न शाखा) तपागच्छनी लघु पोसाल अने वडी पोसालना गीतार्थोने आ रास वंचावी आ रासमां ते सौनां मत्तां लीधां हतां।

पं. देव विजयजी गणिवरना शिष्य पं. खुशालविजयजी गणिनुं पण तेमां मतुं छे.

पछी तो पं. खुशालविजय गणिए पण गुजराती भाषामां आ० विजय देवसूरि संघनी गद्य पट्टावलीओ बनावी हती,

तेमणे (१) स. १८७९ आ०व. १३ ना रोज जाटवाडामां भ० विजय जिनेन्द्रसूरि सुधीनी अने पं. श्री सवाइसागरजीने भणवा माटे (२) सं. १८८९ जेठ वद १३ शुक्रवारे सिरोही नगरमां भ० विजय देवेन्द्रसूरि सुधीनी एम बे पट्टावलिओ बनावी हती. तेमणे

आ बीजी पट्टावलीमां घणो जरूरी इतिहास आप्यो छे,

कविवर पं. दयारुचि गणिवर

इतिहासकार मुनिश्री प्रतिष्ठासोम गणिजी सं. १५२४ना सोम-सौभाग्य महा काव्यमां सर्ग १० मां लखे छे, के आ० श्री सोमसुंदरसूरि नी आज्ञामां तपागच्छनी सुंदर, कीर्ति, राज, शेखर, नंदि, सागर, देव; मंडन, रत्न, विजय, जय, समय, हंस, वर्धन, कीर्ति, मूर्त्ति, भूषण, धीर, भद्र, धर्म, चंद्र, सिंह, सेन, सोम, वगेरे लगभग ५० थी वधु शाखाओना १८०० श्रमणो हता,

शाखाओ विक्रमनी १९मी सदि चालु रही हती,

तपागच्छना नायको, गीतार्थोनी सम्मतिथी तथा शासन देवना संकेतथी नायक पदने योग्य जे मुनि होय तेने मनोनीत करी पोतानी पाटे नवा गच्छ नायक बनाववा हता।

पं रूपरुचि गणी अने पं. दया रुचि गणी तपगच्छनी रुचि शाखाना गीतार्थ मुनिवरो हता। पं. दया रुचि गणीए गच्छ नायक भ० विजयधर्म सूरिनी आज्ञा थवाथी पं. देव विजय गणीए आपेल वर्णनना आधारे, सं. १८२५मां महा सुद ५ दिने शिवपुरीमां "सम्मेत शिखर रास, ढाल २१ ग्रं० ८०१ बनाव्यो हतो।

उद्धारक कोण ?

कवि पं. दयारुचि गणी सम्मेत शिखर रासमां लखे छे के जेसलमेरना शेठ मूलचंदना पुत्र शेठ सुगालचंदे सं. १८२५ना महा सुद ५ दिने २१मो उद्धार कराव्यो अने भ० श्री विजयधर्मसूरिना हाथे प्रतिष्ठा करावी हती." (जुओ ढाल २० गा. १०)

परंतु सम्मेतशिखर उपर भगवान अजितनाथनी चरण पादुका उपर लखेल छे के सं. १८२५मां महा सु. २ गुरुवारे शा. खुशालचंदे अजितनाथनी चरण पादुका करावी.

आ उपरथी स्पष्ट जणाय छे के शिखरजीनो जीर्णोद्धार पण शेठ खुशालचंदे कराव्यो होय। पण रासना उल्लेख प्रमाणे शेठ सुगालचंदे शिखरजीना जीर्णोद्धार करावनार छे आ गुंचनो उकेल करवा माटे जगत्शेठनी वंशावली टुंकमां जाणवी जरूरनी छे, ते आ प्रमाणे

(१) शा. हीराचंद–तेणे नागोरथी पटणा जइ, त्यां पेढी खोली। तेने ७ पुत्रो हता, अने १ धनाबाई पुत्री हती। शेठ ७ पुत्रो माटे सात व्यापारी पेढीओ खोली हती।

(२) शेठ माणेकचंद–ते शा. हीराचंदनो सौथी नानो पुत्र हतो। पिताए तेने ढाकानी पेढी आपी हती, ते अने नवाब मुर्शिदखां बन्ने मित्रो बन्या, शेठे मुर्शिदाबादमां निवास कर्यो, अने नवाब मुर्शिदखांनी सम्मतिथी महिमापुरमां टंकशाल बनावी। दिल्हीना बादशाह फरूखशेयरे (ई. स. १७१३ थी १७१९) ई. स. १७१५ (वि. सं. १७७१) मां शेठ माणेकचंदने नवाबना आग्रहथी नगरशेठनी पदवी आपी, तेनुं फरमान लखी आप्युं। जगत्शेठना वंशनो आ आदिपुरुष छे. ते ई. स. १७२२ (वि. सं. १७७८)मां महिमापुरमां मरण पाम्यो. तेनो स्मृतिस्तंभ गया बागमां बन्यो हतो, तेने कंई संतान न हतुं।

(३) जगत्शेठ फतेहचंद ते धनाबाईनो पुत्र हतो दिल्हीनी

जगतशेठनी पेढीनो मुनिम हतो, ते मामाने खोळे आव्यो। बादशाह महम्मदे (ई. स. १७१९ थी १७४८) तेने जुलसी सन् ४ इ. स. १७२२ के १७२४ मां (वि. सं. १७८०) मां जगत्शेठनी पद्वी आपी, शिरपाव आप्यो, महोर आपी, अने फरमान लखी आप्युं। आ समये जगत्शेठ हींदमां धनकुबेर कहेवातो हतो। ते इ. सं. १७४४ (वि. सं. १८००) मां मरण पाम्यो। तेने त्रण पुत्रो हता, ते सौ ई. स. १७४४ (वि. सं. १८००) पहेलां मरण पाम्या हता।

तेने महेतावचंद मयाचंद अने स्वरुपचंद एम ३ पौत्रो हता।

जगत्शेठ महेतावचंद

जगतशेठ फतेहचंदनी गादीए बेठो ते बहु बुद्धिशाली हतो, राजतंत्रनो जाणकार हतो।

आ समये दिल्हीना बादशाह अहमदशाह (ई. स. १७४८थी १७५४) (वि. सं. १८०५ वै. सु ४थी सं. १८११ जे. शु. १२) हतो, तेणे जुलसी सन् १, जिल्काद महिनानी मीती २ने रोज एटले ई. स. १७४८मां वि. सं १८०५ना वेशाख महिनामां शेठ महेतावचंदने शेठनी पद्वी आपी, तथा जुलसी सन् १ जिलहज्ज महिनानी मीती २७ने रोज एटले ई. स. १७४८मां वि. सं. १८०५ना जेठ महिनामां शेठ महेतावचंदने जगतशेठनी पदवी अने शेठ स्वरुपचंदने महाराजानी पद्वी आपी, तेनुं फरमान लखी आप्युं। तथा सिराज उद्दौल्लाने आज दिवसे बंगालनो नवाब बनाव्यो।

बादशाह अहमदे जुलसी सन् ५ ई. स. १७५२ (वि. सं. १८०९)मां जगत्शेठने मधुवन, कोठी, जयपार नालुं, प्राचीन नालुं,

टीजलहरी कुंड, पारसनाथ तलाटी वच्चे ३०१ वीघा पारसनाथ पहाड भेट आप्यो।

तथा बादशाह जहांगीरनो बीजा पुत्र बादशाह आलमगिर याने अबुअलीखाने (ई. स. १७५४थी १७५९) बहादुरे ई. स. १७५५मां (वि. सं. १८११ जे. सु. १२थी सं. १८१६ महा. सु. १०) मां पालगंज "पारसनाथ पहाड"ने करमुक्त जाहेर कर्यो, एटले वेठ, वेरो, लगान, जमान वगेरे माफ कर्या.

जगत्शेठनी भावना हती, के सम्मेत शिखर तीर्थनो मोटो उद्धार करवो।

एवामां तपगच्छना पं. देव विजयगणी सम्मेत शिखर तीर्थ पधार्या, तेमना उपदेशथी जगत्शेठनी भावना वधी, के सम्मेतशिखर तीर्थनो मोटो उद्धार करवो। आथी तेमणे पोताना ७ पुत्रो तथा तेना सकल परिवारने त्यां बोलाव्या। अने सौनी सम्मतिथी सम्मेतशिखरनो जीर्णोद्धार, मधुवनमां नवी कोठी, अने नवा जिनालयो बनाववानो निर्णय कर्यो। अने जेसलमेरनी पेढीना वफादार मुनिम मूलचंदजी, पोताना चोथा पुत्र सुगालचंदने आ उद्धारनुं काम सुप्रत कर्युं।

बादशाह आलम(बीजा)ए पण पारसनाथ पहाडने करमुक्त जाहेर कर्यो, एटले वेठ वेरो जकात मुंडका वेरो माफ कर्यो। शेठ सुगालचंद जेसलमेरनी गादीए हतो। शेठ मूलचंदजी सुगालचंद उपर पुत्र जेवुं वात्सल्य राखता हता, आथी सौ कोइ मानता के ते बन्ने पिता पुत्र हशे।

जगत्शेठ महेताबरायने १ खुशालचंद २ गुलाबचंद ३ समीरचंद अने ४ बुगालचंद (सुखलाल) तथा महाराजा स्वरूपचंदने १ उदयचंद २ अभयचंद अने ३ मिहीरचंद पुत्रो हता।

५. जगत्शेठ खुशालचंद-बालक

खुशालचंद अने उदयचंद हिम्मतवाला हता. तेमणे बादशाही त्रासमां घणीवार लुंटाइ जवाथी धन न होवा छतां कुटुंबरक्षानुं काम माथे उपाडयुं हतुं, अने साथोसाथ सम्मेतशिखरजीना जीर्णोद्धारनुं काम पण चालुं राख्युं हतुं.

सम्मेतशिखरजी महातीर्थनो मोटो उद्धार

शेठ खुशालचंदने तीव्र भावना हती के सम्मेतशिखरनी टेकरीओ उपर २० तीर्थंकरोनी निर्वाण भूमिनी स्पष्ट जाण मेळवी, त्यां त्यां २० देरीओ बनाववी। जगत्शेठ आ भावनाथी अवार नवार हाथी उपर बेसी सम्मेतशिखर आवता हता। अंते तेणे पं. देवविजयजीना कहेवा मुजब अट्ठम तप करी पद्मावतीनो जाप कर्यो, अने ते देवीए बतावेल संकेत मुजब केसरना साथियाना स्थाने निर्वाण भूमि, तथा आंकडाना संकेत मुजब ते ते तीर्थंकरोना निर्वाण स्थानो नक्की करी, त्यां चोतरो, स्तूप, चरण पादुकाओ अने तेनी उपर देरीओ बनावी। तथा उपर जलमंदिरमां घणी नवी जिन प्रतिमाओ बनावी पधरावी।

शेठ खुशालचंद अने तेना भाई शेठ सुगलचंदे वि. सं. १८२५ (ई. स. १७६८) महा सुद ५ दिने तपागच्छना भ० विजयधर्मसूरि पासे तेनी प्रतिष्ठा करावी हती। ते ते चरणपादुकाओ

तथा जिन प्रतिमाओ उपर आ त्रणेनां नाम खोदायां हतां । ते शेठना बंधुओए नीचे मधुवनमां एक मोटी कोठी, धर्मशाला बनावी, तेमां मोटा ७ जिनप्रासाद बनाव्या, तेनी चारे बाजु किल्लो बनाव्यो, अने ते जिनप्रासादोमां भगवान् शामलीया पार्श्वनाथजीनी जिन प्रतिमाओनी प्रतिष्ठा करावी । कोठीनी बहार सम्मेतशिखरजी पहाडना स्थापनावाळुं क्षेत्रपाल भोमियाजीनुं मंदिर बनाव्युं । यात्रिको ते भोमियाजीनी मदद मांगी, पहाड़ उपर यात्रा करवा जाय छे ।

ते शेठ बंधुओए मधुवनना जिनालयमां जगत्शेठ महेताबचंद अने महाराजा स्वरूपचंदनी भक्तमुद्रामां पाषणमूर्तिओ बनावी बेसाडी हती । आ बन्ने मूर्तिओ आजे मलती नथी । पण एक महाराजा स्वरूपचंदनी सं. १८७३ इ. स. १८१६नी मूर्ति दिगम्बरोना मंदिरमां विद्यमान छे । सम्भव छे के उक्त बन्ने मूर्तिओ न रहेवाथी पछीना कोई जगत्शेठ हरखचंदे आ मूर्ति बनावी होय ? ।

जगतशेठ सम्मेतशिखरजी तीर्थनो मोटो उद्धार करी तीर्थ तथा श्वेताम्बर कोठी श्वेताम्बर जैन संघने सोंप्या, त्यारथी तेनो वहीवट श्वेताम्बर जैनोना हाथमां छे ।

शेठे पहाडनी भेट मळेली जमीन पोताना कबजामां राखी हती, शेठ खुशालचंद अने शेठ सुखलाले निर्वाणभूमिना चोकस स्थान अंगेनी गुंच मटाडी, तेओनी ए जैन शासननी सदा अमर बनो रहे एवी भक्ति छे.

जगत्शेठ खुशालचंद वि. सं. १८४० ई. स. १७८४मां

मरण पाम्या. तेणे शेठ समीरचंदना बालक (पुत्र) हरखचंदने पोताने खोळे लीधो हतो ।

तेना मरण बाद मुर्शिदाबादनगर नवाबवंश, नाजिमवंश, जगत्-शेठवंश तथा गवर्नर जनरल लोर्ड वॉरन् हेस्टींगे, ए सौनु धीमे धीमे पतन थयुं हतुं ।

६ शेठ हरखचंद—आ शेठने गवर्नर जनरल वोरन् हेस्टींगे वि. सं. १७८४मां जगत्शेठनी पदवी आपी त्यार पछी लोर्ड कर्नवोलि (ई० १७८६थी १७९३)ना वखतमां जमीनदारोना हक नक्की करवानी व्यवस्थमां पारसनाथ पहाडनी जमीन पालगंजना राज्यमां दाखल थई गई, पण शेठ हरखचंदे ते तरफ खास ध्यान आप्युं नहीं ।

७ जगत्शेठ इन्द्रचन्द्र तेओने विष्णुचंद्र (कृष्णचन्द) एम बे भाई हता । ते बन्ने पोतानो भाग वहेंची जुदा पड्या । ब्रिटिश सरकारे शेठ इन्द्रचन्द्रने विवाहना अवसरे खेलत आपी अने पछी जगत्शेठनी पदवी आपी हती ।

ब्रिटिश सरकारे महाराजा स्वरुपचन्दना पुत्र शेठ उदारचन्द (उदारचंद) ने महाराजानी पदवी आपी । आ अवसरे एक अज्ञाधिपति मुसलमान समीरे जगत्शेठ पदवीनी मांगणी करी हती, पण गवर्नर जनरले परीक्षा करी हती तो शेठ हरखचंदनो जे गर्भ-श्रीमंताई, उदारता, अने दानवीरता हती, ते तो उक्त अज्ञाधिपतिमां जोवा न मळी । ब्रिटिश सरकारे त्यार बाद कोईने पण जगत्शेठ

पदवी न आपवी एवुं नक्की कर्युं। एटले शेठ इन्द्रचंद ते छेल्लो जगत्‌शेठ हतो।

(८) शेठ गोविंदचंद–ब्रिटिश सरकारे तेने ई० स० १८४२ थी १२०० रुपैयानो मासिक खर्च (पेन्शन) बांधी आप्यो हतो। ते ई० स० १८६२ वि० स० ९९१९मां मरण पाम्यो, आथी ब्रिटिश सरकारे तेनी पत्नी राणी प्राणकुमारीने २०० रुपियानो मासिक खर्च बांधी आप्यो हतो। ब्रिटिश सरकार तरफथी जगतशेठना वंशजोने आ छेल्लुं (पेन्सन) वर्षासन हतुं।

(९) शेठ गुलाबचंद–ब्रिटिश सरकारे राणी प्राणकुमारीना कहेवाथी शेठ गुलाबचंदने ५००० रुपिया आपी नवो बंगलो करावी आप्यो हतो।

(१०) शेठ फतेहचंद श्री निखिलराय B. L. तथा उपेन्द्रनाथ भट्टाचार्ये बंगाली संवत १३१९मां बंगाली भाषामां "जगत्‌शेठ" पुस्तक बनावी प्रकाशित कर्युं हतुं, ब्रिटिश सरकारे तेने जप्त कराव्युं हतुं। ते पुस्तक शेठ फतेहचंदनी पासेथी वांचवा मल्युं हतुं। अमे तेना आधारे प्रस्तुत जगत्‌शेठना वंशनो इतिहास लख्यो छे।

(११) शेठ सौभाग्यचंदजी जे आजे विद्यमान छे।

उद्धारक बन्धुओ।

आ प्रमाणे जगत्‌शेठना वंशना इतिहासथी स्पष्ट छे के जगत्‌शेठ खुशालचंद अने तेनो नानो भाई सुगनचंद बन्नेज सं० १८२५ महा सुद ५ ना समेतशिखर तीर्थनो मोटो उद्धार करनारा छे।

शेठ सुगनचंद्र जेसलमेरनो पेढीओ रहतो हतो, अने तेणे ज पोतानी देखरेखमां उद्धारनुं समस्त कार्य कोल छे.

आथी उद्धारक कोण ? अेनो निर्णय करवामां कोई जातनो विभ्रम रहेतो नथी।

ते माइओअेज मधुवनमां कोठी, जिनाळयो, किल्लो तथा, भोमियाजीनुं मंदिर वगेरे बनाव्यां हतां रासकार पं० दयारुचि गणी.

मधुवनने सम्मेतशिखर तीर्थनी अेक टूंक मानें छे, अने आ उद्धार ने २१ मो मोटो उद्धार बतावे छे। ए खास नोंधपात्र घटना छे, पण

चमत्कार—

सं० १८२५ मां सम्मेतशिखर महातीर्थमां चरण स्थानो नक्की थयां, मोटी प्रतिष्ठा थई, अने भोमियाजीनी स्थापना थई, पछी तो आ महातीर्थनुं महात्म्य खुबज वधवा लाग्युं हतुं

त्यार बाद अहीं विविध चमत्कारी घटनाओ बन्या करे छे, तेमांनी अेक बे घटना अहीं आपुं छुं.

पहेली घटना—सुरतना शेठ कचरा कीका पट्टणीअे परम अध्यात्मी श्री देवचंदजी महाराजना उपदेशथी सम्मेतशिखरजी महातीर्थनो यात्रा संघ काढ्यो, तेणे अमदावादना शामलानी पोळना शेठ लालचंदना २० वर्षना पुत्र अने पू. श्री देवचंदजी म० ना विद्यार्थी पूंजाशाहने पू. श्री देवचंदजी म०नी आज्ञाथी रस्तामां धर्म विधि करावया माटे साथे लीधो.

संघ सम्मेतशिखर आव्यो, पालगंजना राजाअे संघने सम्मेतशिखर उपर चडवानी मना करी त्यारे जगतशेठ खुशालचंद जे देव वनी तीर्थनी रखवाली करता हता, तेमणे पूंजाशाहने स्वप्नमां आवी;

तेना सुखेथी यात्राविषयनी वात जाणी पूंजाशाहने नंदीश्वर, सीमंधर स्वामी नुं समवसरण, वगेरेनी यात्राओ करावी. अने सम्मेतशिखरजीनी यात्रा खुल्ली मुकावी. अने संघने यात्रा करावी हती. पूंजाशाह त्यार बाद घणी यात्राओ करी, पाछा आवी, सुरत थई अमदावाद आव्या । तेणे पं. सत्यविजयगणीना शिष्य पं. जिनविजयजी ग. पासे सं. १७९६ ना वै. सु. ६ ने रोज दीक्षा लीधी । गुरुए तेनुं नाम मुनि उत्तमविजयजी राख्युं । जे पंन्यास बनी, सं. १८२७ महा०सु. ८ रोज अमदावादमां स्वर्गे गया हता. (जुओ–पं. पद्मविजयजी ए सं. १८२८ मां रचेल पं. उत्तमविजयगणि रास)

अध्यात्म ज्ञान प्रचारक मंडलनी जैन ऐतिहासिक रास माला भाग १ पृ० १५४ थी १७१)

बीजी घटना—अमारा उपदेशथी सं. १९८९ना वै०सु०११ ने रोज मेरठ जिलाका सरधना गाममां दशा अग्रवालना ३५ घरो श्वे. जैन बन्यां हता । आ सौमां मुख्य हता, शा, मुन्नालालजी सींघल तेणे दरेक घरोने समजाव्या. अने अमारी साथे जुदा जुदा गामोमां फरी पोतानी ज्ञातिना लगभग ३॥ हजार भाइ बहनोने श्वे. जैन बनाव्या हता । ते जैन धर्मना अत्यंतरागी हता, ते अकवार सरधाना ना दि०जैनोनी साथे " सम्मेतशिखरजी तीर्थ "नी यात्राअे गयो हतो.

तेने श्वे० यात्राविधिनु ज्ञान हतु नहीं, तेथी तेने साथीदारी करे ते मुजब ज करवानुं हतुं ।

ते सौ राते मधुवनमां दि० कोठीमां सुइ रह्या, सवारे वहेला उठी पहाड पर चडवा लाग्या ।

चडवाना रस्तामां ज कोई टटी गयो हशे, तेनां मुन्नालालनो पग लपस्यो, ते पडीगयो अने तेना शरीर तथा कपडां बगड्यां। साथ वालाओ तेने मुकी आगल चर्ची गया। शेठ मुन्नालालजीने विचार थयो के अशुचि शरीर अशुद्ध कपडे यात्रा कराय नहीं। तो क्यांक स्नान करी पवित्र थई उपर चडुं तो सारुं ! ते पाणी माटे पहाडनां पगदंडी रस्ते चालवा लाग्यो तेने रस्तामां ओक जटाधारी योगी मल्यो.

योगीओ कह्युं मुन्ना ! (बेटा !) आगल जइश मा ! रस्तामां वाघ बेठो छे, आ पासेना रस्ते जा। त्यां तने पाणी मलशे, स्नान करीने पछी उपर चडजे।

मुन्नालाले जोयुं, के सामे वाघ बेठो हतो. ते योगीना कहेवा मुजब पासेना रस्ते गयो. त्यां पाणीनो गायावुं झरो हतो, तेणे तेमां स्नान करी, कपडां धोई, शुद्ध थई, यात्राओ जवानो निर्णय कर्यो।

योगी बोल्यो, मुन्ना ! आगल चाल। हुं पाछल आवुं छुं। मुन्नालाल पगडंडीओ आगल चाल्यो, तो पहाडनी उपर जवानां सडके आवी उभो रह्यो। तेना साथीदारो नीचेथी तेज रस्ते आवी रह्या हता। मुन्नालाले पाछल जोयुं, तो योगी देखायो नहीं !

श्रीजीघटना—सम्मेत शिखरना पहाडमां वाघ, रीछ, चट्ट, शियाल, सांप वगेरे मोटी संख्यामां रहे छे। परंतु खुबनी वात छे, के ते कोईपण यात्रालुने नुकशान करता नथी !

सम्मेतशिखरजीनां आवी आवी घणी चमत्कारी घटनाओ बनती

हशे, यात्रिको पोत पोतानो अनुभव जाहेरमां मूकशे, तो ज सौने जाणवामां आवशे ।

टूंकमां आ महा तीर्थ जेम कल्याणक क्षेत्र छे, सिद्ध क्षेत्र छे, तेम चमत्कारी क्षेत्र पण छे ।

बावीशमो उद्धार

सम्मेतशिखरनो पहाड जैनोने फरिवार मल्यो, तेनो मोटो उद्धार पण थयो एटले त्यां घणा जैन संघो यात्राओ आवता हता,

पण आ टूंको उपर स्तूपोनी देरीओ खुल्ली जमीनमां होइ तेने सख्त ठंडी, असह्य गरमी, भयंकर वावाझोडुं अने धोधमार वरसादनी मोटी मुश्केली हती.

त्यां वांदराओनुं निरंकुश स्वतंत्र कपि राज्य छे । वांदराओ देरीओमां आवी, आराम करे। अने फुरसद मले के 'महेनत करो अने खाओ' ए न्याये चरण पादुकाओने उखेडी नाखवा महेनत करे, अने थोडा दिवसोमां तो चरण पादुकाने उखाडी दूर हटावी दे । आवा संयोगोमां घणी देरीओनी चरण पादुकाओ खसी गई हती, एटले हवे नवा जीर्णोद्धारनी घणी आवश्यकता हती ।

आथी मुर्शिदाबाद, कलकत्ता, अमदावाद तथा अजीमगंज विगेरेना श्वेताम्बर जैनो, तूटी गयेली देरीओनो जीर्णोद्धार करी, तेमां सं. १९२५थी सं. १९३१, सं. १९३३ सुधीमां विजय गच्छना भ० जिन शान्तीसागरसूरिजी, खरतर गच्छना भ० जिनहंस सूरिजी, तथा भ० जिनचंद्र सूरिजी वगेरेना हाथे चरण पादुका-

ओनी प्रतिष्ठा करावी हती । आ जीर्णोद्धारमां श्वे. जैन संघे सम्मेत-शिखर महातीर्थमां भ० ऋषभदेव, भ० वासुपूज्य स्वामी, भ० नेमिनाथजी तथा भ० महावीरस्वामीनां अने १ ऋषभ, २ चंद्रानन, ३ वारिषेण, तथा ४ वर्धमान ए ४ शाश्वता तीर्थंकरोनी नवी देरीओ बनावी । सं. १९४२ थी १९४९ सुधीमां तपगच्छ ना भट्टारक विजय राजसूरि खरतरगच्छ ना भट्टारक जिनहंस सूरि, भट्टारक जिनचंद्रसूरि तथा खरतरगच्छ ना मुनि श्री हित-वल्लभजीना हाथे ते देरीओ अने जिन चरणो वगेरेनी प्रतिष्ठा करावी हती।

तथा मधुवनमां पण त्रीजां नवां जिनालयो वधारी, तेमां पण जिन प्रतिमाओ, जिन चरणो वगेरेनी प्रतिष्ठा करावी हती। अेकंदर मधुवनमां श्वे० जैन कोठीना किल्लामां (१.२.३.) भगवान पार्श्व-नाथजी, (४) वीश तिर्थंकरोनां चरण पादुका, (५) शुभ गणधरनी प्रतिमा, (६) गोडी पार्श्वनाथ तथा संभवनाथ, (७) मुख्य मंदिरमां शामळीया पार्श्वनाथ, (८) पार्श्वनाथनो तथा चौमुख सुपार्श्वनाथनां, (९) चंद्रप्रभु अने (१०) सुपार्श्वनाथना जिन प्रासादो बन्या हता।

बहारना भागमां (११) गणधर श्री सुधर्मास्वामी अने (१२) भोमियाजीनुं मंदिर वगेरे वगेरे श्वे० जैन मंदिरो बन्यां हतां।

शिखरजीतीर्थना पहाडनुं वेचाण

लॉर्ड मिन्टो (ई. स. १९०५ थी १९१० सुधी) ना वस-यमां पालगंजना राजाने अविचारी स्वरदगा कारणे पगनी तंगी पडी। तेने विचार थयो के पारसनाथ पहाडने गिरवे, पट्टे के वेचाणथी आपी

दउं, तो मने धन मळे। आ पहाडने जैनो लेशे, अने मने पण इच्छा मुजब धन मळशे।

शेठ बद्रीदासजी मुकीम कलकत्ता वाळाए पालगंजना राजानी आ मनोभावना जाणी, अमदावादनी शेठ आणंदजी कल्याणजीनी पेढीने आ पहाड खरीदी लेवा लख्युं। साथोसाथ जणाव्युं, के तमो पहाडनी मांगणी करो, पछी आ माटे हुं सक्रिय प्रयत्न करीश।

त्यारे श्वेताम्बर जैन संघनी प्रतिनीधि संस्था "आणंदजी कल्याणजीनी पेढी" अमदावादमां हती। तेना प्रमुख शेठ कस्तूरभाई मणीभाई हता, तेमणे तुरतज पालगंज राजा पासे पहाड खरीदी लेवानी मांगणी मूकी।

आ मागणी थतां सरकारी तंत्रमां आ वेचाण अंगे सर्व बाबतनी तपास चालु थई। ते आ प्रमाणे (१) बादशाह अकबरे जुलसी सन् ३७ रविउल अव्वल, ता० ७मी ने रोज ई. स. १५९२ (वि. सं.-१६४९) मां श्वेताम्बर जैन आ० ज० गु० आ० विजयहीरसूरि ने आ पहाड भेट आप्यो हतो। (२) बादशाह अहमदे जुलसी सन् ५ ई. स. १७५२ (वि. सं. १८०९) श्वेताम्बर जैन जगत्शेठ महेताबचंद ने आ पहाड भेट आप्यो हतो।

(३) बादशाह आलम (त्रीजा) ना शासनमां जुलसी सन् १० हीजरी सन् ११८२ वि० सं० १८२५ ई. स. १७६८ मां अहीं जगत् शेठ-खुशालचंदे श्वे० जैनोनां धर्मस्थानो बनाव्यां हतां।

(४) सम्मेतशिखर तीर्थनो वहीवट आज सुधी श्वेताम्बर जैनोना

हाथमां छे।

राज्यना दफ्तरना आ ऐतिहासिक आधारो " श्वेताम्बर जैनो ज सम्मेतशिखर पहाड़ने खरीदवा हक्कदार छे ", अम पूरवार करता हता।

आथी सरकारी तंत्रमां नीचे प्रमाणे नीर्णयो थया।

(१) बोर्ड ऑफ रेवन्युना सेक्रटरी मी. अेच.क. ब्रीसको अे ता. १४-५-१९१७ ना रोज भलामण करी, के-" सम्मेतशिखर पहाड़ श्वे० जनी सिवाय बीजा कोईने आपी शकाय नहीं।

(२) बिहार ओरिसा गवर्नरना सेक्रेटरी मी० एस० उपलेडे I.C.S बॉर्ड ओफ रेवन्युने भलामण करी, के " ब्रीस्कोअे ता. १४-५-१९१७ने रोज जे भलामण करी छे, ते बराबर छे "

(३) बोर्ड ओफ रेवन्युअे ता. १६-३-१९१८ने रोज ठराव कर्यो के " पालगंजनो राजा सम्मेतशिखरनो पहाड श्वे. जैनोने वेंची शकशे "।

(४) पालगंजना राजाए ता. ९-३-१९१८ने रोज अहमदाबादनी " शेठ आणंदजी कल्याणजीनी पेढीना प्रमुख शेठ कस्तुरभाई मणीभाईने पारसनाथनो पहाड त्रणलाख (३०००००) रुपीयामां वेच्यो आ रीते शिखरजीनो पहाड जगतशेठने इनामी तरीके मलेलो छतां तेमना दुर्लक्ष्यथी पालगंजना कब्जामांथी पुनः श्वे. जैनसंघ हस्तक आव्यो.

सम्मेतशिखरमहातीर्थदर्शनः—

सम्मेतशिखरनो पहाड कुदरती शोभायमान छे नीचेथी उपर सुधी लीलो-छम प्रदेश छे, अहीं हरडे अने भीलामा ना मोटा २

झाडो छे, एक भागमां खास चाहना वगीचा पण छे, पहाड़मां दरेक ज्ञातना जंगली प्राणिओ साप विगेरे मोटी संख्यामां छे, परंतु ते जात्रालुओने नुकशान करता नथी। सरकार तरफथी अहीं शिकार करवानी सखत मनाई छे, अहीं दर पखवाडिए वरसाद वरसे छे, उपर जवाने नीचेथी उपर सुधी बांधेलो रस्तो छे., श्वेताम्बर कोठीथी ३ माइल जतां गंधर्वनालु आवे छे, त्यांनु पाणी पाचक छे, तेनी पासे श्वे० जैनोनी तलाटीनी धर्मशाला छे, त्यां जनोने खावा माटे भातु अपाय छे। तलाटीनी चारे बाजु पहाडो छे, तेथी आ स्थान रमणीय लागे छे, वाघ रात्रे आ नालामां पाणी पीवा आवे छे, त्यांथी अर्धो माइल जतां सीतानालु आवे छे, त्यांथी पहाड़नो चढाव शरु थाय छे, साडापांच माइल जतां गणधर श्री गौतम स्वामी नी देरी आवे छे तेनी पासे तीर्थनी पोलीस चोकी छे, गणधर श्री गौतम स्वामीनी देरी थी १–भ० चंद्रप्रभुनी टुंक, २–जल मंदिर, अने ३–भ० पार्श्वनाथ नी टूंक तरफ जवाना जुदा जुदा रस्ता बनेला छे।

आवी रीते सम्मेतशिखरनी यात्रामां छ माइलनो चड़ाव, छ माइलनी प्रदक्षिणा, अने छ माइलनो उतार एम एक दिवसमांज अढार माइल चालवानुं रहे छे।

जल मंदिर अने सीता नालामां पाणी मले छे, गंधर्वनालानी तलेटीमां धर्मशालामां पाणी तथा भातानी व्यवस्था राखवामां आवी छेः

आ यात्रामां अढार माइल चालवानुं होय छे, सौ कोई अढारनो आंकड़ो सांभळी, यात्राने अेकदम कठिन मानी ले छे। परन्तु

अनुभव कहे छे के—चडावनी सुलभता वनराजिनी रमणीयता, अने यात्रानी भावनानो मानसिक उत्साह, ते कठिनताने एकदम सरल रूपे परिणमावे छे ।

अमोए वि. सं. १९८६ चै०१३ ने दिवसे सम्मेतशिखरजी तीर्थनी पहेली यात्रा करी हती । त्यारे अमने यात्रामां जे समय लाग्यो, तेनी अमे नोंध लेवरावी हती, ते आ प्रमाणे छे, आ उपरथी यात्रिक तेनी सरलतानो ख्याल बांधी शकशे ।

अमे चै० सु० १२नी सांजे मधुवनथी नीकळी गंधर्व नाळानी धर्मशालाए जई रात रह्या । अने त्यांथी सवारे ५—३० वागे यात्रा माटे विहार् कर्यो ।

स्थान	दर्शन	समय
गंधर्व नाळुं	सवारे	५—३०
सीता नाळुं	,,	६—०
गणधर गौतमस्वामी	,,	(६—४० चै. १५ मिनीट
सुनिसुव्रत स्वामी	,,	७—५
अनंत नाथजी	,,	७—१२
चंद्र प्रभुजी	,,	७—३५ (चैत्य)
अभिनंदन स्वामी	,,	८—११
जल मंदिर	,,	८—३० (चै०४० मी०
धर्मनाथ स्वामी	,,	९—३२
महावीर स्वामी	,,	९—४० (चै० ५मि०)

पार्श्वनाथजी ,, १०–१५ (चैत्य०)
गंधर्वनालु ,, ११–३०

पछी मधुवनमां जइ ४ वागे महावीर जयन्ती उजवी हती। त्यारे त्यां पू. मु. म. मित्र विजयजी म० ठा. २ श्रावक श्राविकाओ हता।

आ यात्रामां अमे जोयुं के शुभ गणधरनी टूंक तूटी गई छे, सम्मेतशिखर उपरनी २१ देरिओ, जल मंदिर, गंधर्व नालानी धर्मशाला, अने मधुवननी श्वे० जैन कोठी, तथा त्यांना समस्त जिन प्रसादोनो वहीवट अजीमगंजना सेठ महाराजा बहादुरसिंह दुधेडिया श्वेताम्बर जैनना हाथमां छे। ते सिवाय नो पहाड़ नो वहीवट असदावादनी सेठ आणंदजी कल्याणजीनो पेढीना हाथमां छे।

तेवीसमो उद्धार

बांदराना वंशजोनी ज्ञाति एम मानती हशे के जैनो धनाढच छे ते धर्मस्थानोमां घणुं धन खर्चे छे, तो तेओनी पासे फरी फरी धन खरचाववुं जोइए अटले के बांदराओ अे फरीवार पहाड उपर तीर्थंकर भगवाननी चरण पादुकाओ हटावी दीधी, चोतरा अने देरीओ तोड़ी नाख्या। आथी जैनोने ते स्थानों सुधारवानी जरूर हती।

बीजी नोंधपात्र घटना ए छे के—श्वे० जैनोए मधुवननी कोठीना जिनालयो वाली टूंकमां सम्मेतशिखर तीर्थावतार नी रचना गोठवी हती।

शास्त्र विशारद जै० आ० श्री विजय धर्मसूरीना शिष्य शराक जातिना उद्धारक उ० मंगल वि० गणिना उपदेशथी कलकत्ताना

गुजराती संवे हिंदना जुदा जुदा स्थानोना श्वे. जैनोनी मददथी उपर बतावेल जीर्ण स्थानोने सुधराव्यां अने जिन चिरणोनी प्रतिष्ठा तेओश्री ना हाथे करावी हती।

चौवीशमो उद्धार

आगमोद्धारक पू. आचार्य देव श्री सागरानंदसूरिश्वरजी महाराजे पोताना परिवार साथे सं. १९८०–८१मां सम्मेतशिखर तीर्थनी यात्राए पधार्या हता।

तेमनी भावना हती के—

(१) सम्मेतशिखरजी महातीर्थनो मोटो जिर्णोद्धार करावदो।

(२) बनारस शहेरथी शिखरजी सुधीना विहार गामोमां स्थाने स्थाने मदद अपावी, जैनोने वसावबा के जेथी साधु साध्वीओने त्यांना विहारनी सरलता रहे।

खुशी थवानी वात छे के तेमना परिवारनो विदुषी बालब्रह्मचारिणी साध्वीजी श्री रंजनश्रीजीम०ना प्रयत्नथी तेमनी पहेली भावना सफल बनी छे, इच्छवा जोग छे के तेमना परिवारना मुनिवरोना प्रयत्नथी तेमनी बीजी भावना पण सफल बने।

तेमना परिवारना संघ मान्य बाल ब्रह्मचारी स्थविरा साध्वी श्री शिवश्रीजी म० ना विदुषी शिष्या सा० तिलकश्रीजी म० नी प्रशिष्या वर्धमान तपनी १०० आंबेलनी ओळीना आराधक तपस्वी साध्वी श्री तीर्थश्रीजीना (सांसारिक पुत्री) मुख्य शिष्या बाल ब्रह्म चारिणी विदुषी साध्वी श्री-रंजनश्रीजीए पोताना २४ ठाणा साथे चौवीसना नाम—१ रंजनश्रीजी म० २ रेवतीश्रीजी

३ सलयाश्रीजी, ४ राजेन्द्रश्रीजी, ५ सुमंगलाश्रीजी, ६ सुव्रताश्रीजी, ७ रोहिताश्रीजी, ८ प्रगुणाश्रीजी, ९ खीरभद्राश्रीजी, १० धर्मानन्द-श्रीजी, ११ मोक्षानंदश्रीजी १२ शुभोदयाश्रीजी, १३ सुलक्षणाश्रीजी, १४ नरेन्द्रश्रीजी, १५ अभ्युदयाश्रीजी, १६ रत्नप्रभाश्री, १७ सुप्री-माश्रीजी, १८ समदमाश्रीजी, १९ कैवल्यश्रीजी, २० करुणाश्रीजी, २१ भव्यानंदश्रीजी, २२ रीपुजिताश्रीजी, २३ जयंकराश्रीजी २४ अमृताश्रीजी (वि० सं० २०१७ का० सु० १५ गुरुवार साध्वी श्री रंजनश्रीजीए लखी मोकलेल पत्रना आधारे) वि. सं. २०१० मां मुबईना कुर्ला नगरथी विहार करी, सं. २०१० चै. सु. १०ना रोज मधुवन पहोंची, चै, १५ना रोज सम्मेतशिखरजी महातीर्थनी यात्रा करी। त्यांना चवुतरा, चरण पादुका, तथा देरीओनी तुटी फुटी अस्तव्यस्त हालत निहाली। ते संबंधी मधुवननी श्वेताम्बर जैन कोठीना स्था-निक मुनिम साथे वात चीत करी। संकल्प कर्यो के आ महातीर्थनो मोटो जीर्णोद्धार कराववो जोईए।

सं. २०१०ना कलकत्ताना चौमासामां पं. प्रभुदास बेचरदास नो सहकार मेळवी, महाराजा बहादुरसिंहजी दुधेडिया (शिखरजी तीर्थना वहीवटदार) साथे जिर्णोद्धार बाबत वार्तालाप करी, तेओनी संमतिथी कलकत्तामां स्थानिक जैनोनी "श्री सम्मेतशिखर तीर्थोद्धा-रक समिति" बनावी।

त्यारबाद सं० २०११मां सुरतना चोमासामां सुरत, कलकत्ता, मुंबई, अच्छारी, वाजीपुरा, मद्रास, अने अमदावादना धर्मप्रेमी जैनोने

एकठा करी, तेमांथी वार उत्साही जैनोनी सं० २०११ जे० व० ११ना रोजे सुरत मां " श्री सम्मेतशिखर जैन तीर्थजीर्णोद्धारक प्रचार समिति " बनावी हती। आ समितिए सं० २०११ आ. सु. १० थी सम्मेतशिखरजी महातीर्थना जीर्णोद्धार कार्यनो प्रारंभ कर्यो।

साध्वीरंजनश्रीजी तथा तेमना प्रीति पात्र गुरु बेन तीर्थप्रेमी सा० सुरप्रभाश्रीजी ए अथाग प्रयत्न करी आ काममां अपूर्व मदद आपी हती। परन्तु आवा अजोड साहसी साध्वी सुरप्रभाश्रीजीए सं० २०१२ वै० व ११ना दिवसे अमदावादमां स्वर्गवास कर्यो। अन्ते सम्मेतशिखर उपर ३१ देरीओ, अने मधुवनमां जिनालयो वगेरे नो जीर्णोद्धार पूरो थयो।

जल मंदिर वालु जिनालयनुं काम बाकी हतुं, अमदावादना उद्योगपति आगेवान शेठ कस्तुरभाइ लालभाईना बीजा पुत्र श्रेणिककुमार सं० २०१५ फा० सु० २ने बुधवारना ता. २१-३-१९५९ ना दिवसे जलमंदिर ना जिन प्रासादनुं शिलास्थापन कर्युं हतुं।

खुशी थवानी वात छे के—ते पण जीर्णोद्धार पूरो थयो। अने नवी जिन प्रतिमाओ पादुकाओ वगेरे पण तैयार थई गयां छे।

आथी सम्मेतशिखर जैन तीर्थ जीर्णोद्धारक प्रचारसमिति नी आग्रह भरी विनंतिथी पू० आ० आनन्दसागरसूरीश्वरजी ना पट्टधर पू० आ० श्री माणेकसागरसूरीश्वरजी म० आदि ठाणा.... नागपुरथी, अने साध्वी रंजनश्रीजी आदि ठाणा २४ अमदावादथी विहार करी, सम्मेतशिखरनी तलाटी मां मधुवनमां चोवीशमा उद्धारनो अंजनशलाका प्रतिष्ठा प्रसंगे पधार्यां छे।

श्री शिखरजी पहाड वेचाण अंगे कंइक

शिखरजीनो पहाड वेचाण लेवा अंगे श्री आगमोद्धारकनी श्रुत-उपासना पण वांचवा मारी सलामण छे. कारण केमके वस्तुतनी मुंबई वासीओ अने गुरुदेवश्रीनां मुखनी वात छे के श्री शिखरजीनो पहाड वेचाति लेवामां अथाग प्रयत्न आगमोद्धारकश्रीनो छे.

लि. उपसंपदा प्राप्त शिशु कंचनविजय.

तीर्थोद्धार

तीर्थ रज रंजीत थई रे,
भविक रंजन हेत ।
उद्यम, तो रंजन करे रे,
तीर्थ उद्धारण हेत ॥ १ ॥
रंजन[१] कलकत्ता करो रे,
समिति करो रंजीत ।
[२]आत्मा रंजन करे रे,
[३]रंजन आत्म काज ॥ २ ॥
[४]तीर्थनी रंजने भली रे,
थाये ते तीर्थ ताम ।
महोत्सवमां रंजीत थया रे,
[५]रंजन भव्य लोक ॥ ३ ॥
[६]आनंद माणे के करी रे,
तीर्थ प्रतिष्ठा एह ।
देवेन्द्र कैलासनो रे;
चिदानंद रंजन थाय ॥ ४ ॥

साध्वी श्री रंजनश्री । १ रागी, साध्वी रंजनश्री । २ भव्योना आत्मा । ३ साध्वीश्री रंजनश्री । पोताना आत्मा माटे । ४ साध्वीश्री तीर्थश्री शिष्या साध्वीश्री रंजनश्री । ५ साध्वीश्री रंजनश्री । ६ आ. श्री आनंद सागरसूरिश्वर पट्टधर आ. श्री माणेक्यसागरसूरीश्वरजीम.

